

आचार्य पं० शशि मोहन बहल

मांगलिक दोष

कारण और निवारण

(विवाह में विलम्ब, दाम्पत्य जीवन में विघटन, मंगल की दोषपूर्ण स्थितियां, मांगलिक दोष निवारण के अचूक उपाय के साथ सुख-समृद्धि प्रगति हेतु मंगल स्तोत्र, व्रत और कवच)



मांगलिक दोष
कारण और निवारण

(कैसे बनता है मांगलिक योग? क्यों होता है पति-पत्नी में अलगाव? क्या हैं मंगल की दोषपूर्ण स्थितियां? मांगलिक दोष निवारण के उपाय क्या हैं? मांगलिक योग पर आधारित एक सम्पूर्ण पुस्तक)

प्रस्तुति :

आचार्य पं० शशि मोहन बहल

मारुति प्रकाशन

अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ-250 002 (यू०पी०)



य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामचारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥

शास्त्र के नियमों को छोड़कर जो मनमाना आचरण करता है अर्थात् अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करता है वह न तो सफलता को प्राप्त करता है, ना सुख को और ना ही मोक्ष को प्राप्त करता है।

रक्ष-रक्ष जगन्मातर्देवि मंगल चंडिके।
हारिके विपदां राशे हर्ष मंगल कारिके॥
हर्ष मंगलदक्षे च हर्ष मंगल दायिके।
शुभ मंगलदक्षे च शुभ मंगल चंडिके॥
मंगले मंगला र्हे च सर्व मंगल मंगले।
सदा मंगलदे देवि सर्वषा मंगलालये॥

सौरमण्डल (Zodiac) के नौ ग्रहों में मंगल सर्वाधिक प्रभावी ग्रह है। मंगल ग्रह सेनापति है। इसका हिंसा, आतंक और युद्ध से विशेष सम्बंध है। वैदिक ज्योतिष में मंगल (Mars) को लाल रंग का गर्म ग्रह कहा गया है। यह पराक्रम, शौर्य, वीरता, साहस का प्रतीक है।

मंगल ग्रह को बाहरी सिर, नासिका के दोनों छिद्र, कपोल का प्रतीक माना गया है। मंगल ग्रह को शल्य चिकित्सा, संक्रामक रोग, रक्तदोष आदि के विषय में विवरण देने वाला बतलाया गया है। ज्योतिष के शास्त्रों ने मंगल और शनि को क्रूर ग्रह माना है।

मांगलिक दोष से मुक्ति के लिए व्रत, उपवास सबसे सशक्त माध्यम है। गोस्वामी तुलसीदास नें मानस में अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है–

"तपबल रचइ प्रपंचु बिधाता।
तपबल बिष्नु सकल जग त्राता॥
तपबल संभु करहिं संघारा।
तपबल सेषु धरइ महिभारा॥"

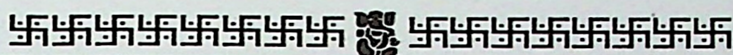
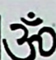
आचार्य पं० शशि मोहन बहल ने इस पुस्तक में मंगल के वैदिक स्वरूप का विस्तृत वर्णन किया है। इस पुस्तक में मंगल ग्रह की शांति के लिए अनेक अनुभूत उपाय प्रस्तुत किये हैं। ज्योतिष शास्त्र से अनभिज्ञ लोगों के लिए यह पुस्तक एक वरदान सिद्ध होगी।

आचार्य पं० शशि मोहन बहल की मंगल ग्रह पर आधारित एक ऐसी पुस्तक जो सब जैसी होकर भी सबसे अलग है।

- *पुस्तक :* मांगलिक दोष कारण और निवारण
- *प्रस्तुति :* आचार्य पं० शशि मोहन बहल
- *प्रकाशक :* मारुति प्रकाशन,
  अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
  दिल्ली रोड, मेरठ–2
  ✆ (0121) 2518025, 3255234
- *कम्प्यूटरीकृत पृष्ठ सज्जा :* मित्तल कम्प्यूटर्स, मेरठ।
- *मुद्रक :* संजय प्रिन्टर्स, दिल्ली।

- *मूल्य :* सत्तर रुपये मात्र (70.00)

विषय-सूची

मांगलिक दोष कारण और निवारण

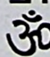
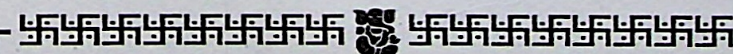


1

मंगलम् भगवान विष्णु

कन्याओं का विवाह प्रारम्भ से ही समस्यापूर्ण रहा है, परन्तु आज के समय में समाज में यह स्थिति और भी जटिल हो गयी है। अनेकानेक कन्याओं की वरमाला उनके हाथों में ही प्रतीक्षा करते-करते मुरझा जाती है अथवा उनका परिणय तब सम्पन्न होता है जब उनके जीवन में यौवन लगभग समाप्त हो जाता है। वैवाहिक विलम्ब के अनेक कारण हो सकते हैं। आर्थिक विषमता, शिक्षा की स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, रूप-रंग, पारिवारिक संस्कार, महत्वाकांक्षा, वैचारिक अन्तर्विरोध आदि अनेक कारण वैवाहिक विलम्ब के लिए उत्तरदायी होते हैं। कन्या के वयस्क होते ही उसके अभिभावक उसके विवाह का उपक्रम प्रारम्भ कर देते हैं। अगर उचित समय पर अनुकूल वर उपलब्ध नहीं होता तब माता-पिता जन्मपत्रिका लेकर ज्योतिर्विदों की शरण में जाते हैं।

वह विद्वान ज्योतिषी विवाह में विलम्ब का सारा दोष मंगल




ग्रह के सिर पर मढ़ देते हैं। क्या आप मंगल ग्रह के विषय में जानते हैं?

पृथ्वी से मंगल की दूरी 485,43,000 मील मानी गयी है। इसका भूमध्यीय व्यास 4,219 मील बतलाया गया है। यह ग्रह 687 दिनों में सूर्य की एक परिक्रमा करता है। हर पन्द्रहवें वर्ष यह पृथ्वी के निकट आता है। जब मंगल धरती के समीप होता है तो वह शुक्र की भांति दैदीप्यमान दृष्टिगोचर होता है।

मंगल के विषय में विज्ञान ने इतनी जानकारी एकत्र कर ली है कि उसके विवरण के लिए एक नहीं, अनेक पुस्तकें लिखने की आवश्यकता पड़ेगी।

मंगल ग्रह का प्रभाव अन्य ग्रहों से सर्वथा विपरीत है। यह बहुत बातों में हमारी पृथ्वी के समान है। इसी कारण इसको **मंगलो भूमिपुत्रश्च** भी कहा गया है। यह अपनी धुरी पर 24 घंटा, 37 मिनट और 22 सेकंड में एक चक्र घूमता है। सूर्य के चारों ओर 687 दिनों अथवा 2 वर्षों में एक परिक्रमा पूरी करता है। यह गहरे लाल रंग का ग्रह है। इसका व्यास लगभग 4,230 मील है। यह सूर्य से 14,15,50,000 मील की दूरी पर है। इसके दो उपग्रह हैं। पृथ्वी और मंगल की बहुत-सी बातों में साम्य है। मनुष्य ने अनेक ग्रंथों की रचना की है, जिनमें मंगलवासियों के धरती पर आगमन की अनेक घटनाएं हैं। क्या मंगल पर सचमुच जीवन है? आधुनिक वैज्ञानिक इसी बात की खोज कर रहे हैं।

आधुनिक विज्ञान के कारण आज सौरमण्डल के विषय में हमें सही जानकारी उपलब्ध है। मंगल के विषय में भी हमें प्रतिदिन नयी जानकारी प्राप्त हो रही है। मंगल पर दिखायी देने वाली घाटियों को पहले वहां की लहरों का जाल समझा जाता था। अब धीरे-धीरे उनका रहस्य भी खुल रहा है।

मंगल ग्रह के विशेष लक्षणों का स्मरण करने में पुराण बहुत सहायक है। मंगल शौर्य का प्रतिनिधि, युद्ध का देवता तथा देवताओं की सेना का सेनापति है। अतः मंगल गर्म स्वभाव का, धैर्यहीन, झगड़ालू और लड़ाका है, कृशकाय दृढ़ और लम्बा है। मेरा अनुभव है कि तुनकमिजाज लोग सम्भवतः ही कभी स्थूलकाय हों। मंगल

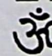



चुस्त है, जैसा कि एक सैनिक को होना चाहिए। वह मुंहफट है, उसमें सहनशीलता भी है। वह यातना सहता रहेगा, धैर्य और शांति से, बिना बाहरी प्रदर्शन किए, एक सैनिक की भांति, चाहे हृदय से वह क्रोध करता हो, किंतु एक बार उसका क्रोध जाग्रत हो गया तो वह पूर्ण प्रतिकार करेगा और अपने क्रोध के शिकार व्यक्ति की स्थिति अथवा उसके पद की तनिक भी चिंता किए बिना अपना सारा विष उगल देगा।

ज्योतिष शास्त्र में विश्वास रखने वाले उस समय चिंतित हो जाते हैं जब विद्वान ज्योतिषी उन्हें बतलाता है कि उनका पुत्र या पुत्री मांगलिक है। ठीक भी है मंगल उन भवनों में स्थित होकर अशुभ फल प्रदान करता है जिन भावों में बैठने से जन्मपत्रिका मांगलिक बन जाती है। यह भवन हैं—लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश। वैसे मंगल का जैसा नाम है वैसा मंगल मंगलकारी भी है, लेकिन विभिन्न परिस्थितियों में यही मंगलकारी मंगल जब अपना अशुभ फल प्रदान करता है तब जातक और उसके परिजन ही जानते हैं कि मंगल का दुष्प्रभाव कैसा होता है?

मंगल को ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का सेनापति माना गया है, मंगल को युद्ध का देवता भी कहा जाता है।

जब कभी मंगल उच्च या स्वगृही होकर केंद्र, त्रिकोण, लाभस्थान में शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होकर स्थित हो तो राहु की महादशा अपनी अंतर्दशा में बन्धुवर्ग का उत्थान तथा जातक को उनसे लाभ दिलवाती है। जातक उत्साही होकर शत्रु को नष्ट कर देता है—जैसे बाज कबूतरों के झुण्ड का। दोनों ग्रहों में एक शुभ और एक अशुभ हो तो अनेक प्रकार की आधि-व्याधि परेशान करती हैं, कार्य में असफलता तथा कभी-कभी स्मृति का नाश भी हो जाता है। दोनों ही अशुभ स्थिति में हों तो बन्धुवर्ग का नाश, पुत्र-सुख में कमी, चोरी, सर्प, अग्नि का भय, दुर्घटना से पीड़ा व समाज में तिरस्कार पाता है। जातक को उदरपूर्ति तक के लाले पड़ जाते हैं। जीवन भार लगने लगता है, कभी-कभी आत्मघात की इच्छा होती है। मंगल अष्टमेश से संबंधित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट अवश्य मिलता है।







ज्योतिष शास्त्र के नौ ग्रहों में से एक मंगल ग्रह भी है। यह जितना मंगलकारी है उतना ही क्रूर ग्रह भी है। आज मंगल ग्रह का आतंक सबसे अधिक है।

वर्तमान समय में ज्योतिष की सबसे अधिक लोकप्रियता है। ज्योतिष की आज जितनी मांग है उतनी सम्भवतः पहले कभी नहीं रही। आज के तनाव भरे जीवन में ज्योतिष एक शीतल फुहार-सा लोगों में आशा और जीने की इच्छा जगाता अनुभव हो रहा है। यह ज्योतिष है या केवल अंधविश्वास? यह आप जानें।

एक अनुमान के अनुसार लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व ज्योतिष विज्ञान का प्रारम्भ हुआ था। ज्योतिष के आविष्कार के विषय में एक पौराणिक कथा है—एक बार महर्षि भृगु भगवान विष्णु से मिलने गये। उस समय वह निद्रामग्न थे। अनेक बार पुकारने पर भी जब विष्णु नहीं जगे तो ऋषि ने क्रोधित होकर उनकी छाती पर लातों का प्रहार कर उन्हें जगाया। लातों का प्रहार खाकर भी विष्णु ने महर्षि भृगु से क्षमा मांग ली, लेकिन लक्ष्मी जी ने ऋषि के माध्यम से सभी ब्राह्मणों को अपनी कृपा से वंचित रहने का श्राप अनायास ही दे दिया। इस पर ऋषि ने एक विद्या का आविष्कार किया और उसका नाम रखा भृगुसंहिता। इस भृगुसंहिता के ज्ञाता ब्राह्मणों के पास लक्ष्मी जी स्वयं ही आने लगीं। इस भृगुसंहिता नाम के ज्योतिष ग्रंथ से फलित ज्योतिष संपूर्ण संसार में लोकप्रिय हो गया। आज भी इसके ज्ञाताओं पर लक्ष्मी जी की असीम कृपा बरस रही है।

[नोट—लेखक की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक भृगुसंहिता हमारे यहां से प्रकाशित अवश्य पढ़े।]

ज्योतिष के विषय में तैत्तिरीयोपनिषद में उल्लेख है, इसमें पांच प्रकार की महा संहिताओं का वर्णन है, जिनमें ज्योतिष का सर्वाधिक महत्व है।

ज्योतिष में संहिताएं इस प्रकार हैं—प्रकाश का आदिकारण अग्नि है, प्रकाश की चरम सीमा आदित्य है, अतः अग्नि पूर्वरूप है और आदित्य उत्तररूप, अग्नि और आदित्य जब तपते हैं तो इनके समन्वय से जल उत्पन्न होता है और तभी ग्रीष्म के पश्चात् वर्षा होती है, इसलिए जलसंधि है। जल की अभिव्यक्ति विद्युत से होती






है, अतः विद्युत संधान है। अधिज्योतिष में अक्षरों का मेल ज्योतिर्मय पिंडों की महासंहिता है। यह ज्योतिष पिंड मानो एक वर्ण है, जिस प्रकार भिन्न वर्णों की संधि से एक अभिन्न अक्षर उत्पन्न होता है ठीक उसी प्रकार अग्नि, सूर्य, जल, विद्युत—इन भिन्न-भिन्न पिंडों की संधि से ज्योतिष उत्पन्न होता है, तभी तो एक कुशल ज्योतिषाचार्य उस लिपि को पढ़ लेता है।

मनुष्य के जीवन में पृथ्वी, भवन उसके कर्म और भाग्य दोनों पर निर्भर अवश्य करते हैं। आइए, ज्योतिषीय दृष्टि से विचार करते हैं कि ग्रहों की स्थिति, ग्रहदशा किस प्रकार की होती है, कब जीवन में भूमि-क्रय के यांग बनते हैं और कब जीवन में भवन-निर्माण के योग बनते हैं।

तुला लग्न में शनि और केतु स्थित हों तथा मंगल उच्च का होकर चतुर्थ भाव में और गुरु बृहस्पति के साथ चन्द्रमा गजकेसरी योग बनाता हो तो शनि अथवा गुरु बृहस्पति और मंगल के संयोग के समय भूमि-क्रय संभव है।

द्वितीय भवन में मेष का सूर्य और सूर्य के बारहवें तथा दूसरे भाव में चन्द्रमा, राहु और केतु के अतिरिक्त कोई ग्रह हो तो भूमि क्रय संभव होता है।

यह भूमिपुत्र मंगल का ही प्रभाव है। यहां पाठकगण स्मरण रखें, ''सूर्य''—आत्मा और हृदय का, ''चंद्र''—आंखें, वक्ष एवं सौन्दर्य का, ''मंगल''—हिम्मत, पराक्रम एवं रक्त का, ''बुध''—फेफड़े, केश, विद्या एवं वाणी का, ''गुरु बृहस्पति''—लीवर, धन एवं पुत्र का, ''शुक्र''—काम, जननांग, पत्नी व वाहन का, ''शनि''—हड्डियों, आजीविका व मृत्यु का, ''राहु''—छाया एवं गृह का, ''केतु''—दादा एवं नाना का, क्रमशः प्रभाव परिवर्तनीय कारक होते हैं।

ब्रह्माण्ड में स्थित सभी जीव पंचतत्व से निर्मित हैं—और इनमें आवश्यक या अनावश्यक परिवर्तन उपर्युक्त वर्णित दशा के बदलाव पर ही निर्भर करता है। रवि, चंद्र, बुध, गुरु बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु ग्रह अपने भ्रमणकारी प्रकृति के कारण पृथ्वीवासियों के जीवन अपने-अपने गुणों से सम्बन्धित प्रभाव कम एवं अधिक निरन्तर प्रदान करते रहते हैं।



ज्योतिष एक विशाल विज्ञान है जिसमें भारत अग्रणी रहा है। इस शास्त्र की सहायता से जीवन के कई जटिल पहलुओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है जिनमें मुख्यतः निम्न हैं—आयु की स्थिति, रोग व उनके कारण, ग्रहों की स्थिति एवं उनका प्रभाव, भविष्य में होने वाली लाभ-हानि की रूपरेखा, आकस्मिक/संभावित दुर्घटनाएं, मृत्यु के कारण और दशा।

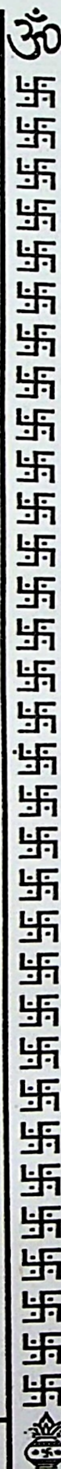
मनुष्य का भाग्य एक अनसुलझा रहस्य है। किसी को पता नहीं होता कि उसके भाग्य में कब क्या होना लिखा है? क्योंकि, भाग्य लिखने वाली शक्ति अबूझ संकेतों में लिखती है, प्रभु ने सबके ललाट पर उसका भाग्य लिख दिया है और जैसा लिखा गया है वैसा ही वह प्राप्त करेगा।

सहृदय पाठकों! काल पुरुष का पराक्रम मंगल ग्रह है। पृथ्वी के निकट सूर्य की परिक्रमा करने वाले इस ग्रह के अनेक नाम हैं। संस्कृत में यह अंगारक, कुज, भौम, कुमार और लोहितांग जैसे नामों से जाना जाता है। अंग्रेजी में इसे मार्स (MARS) कहते हैं। अरबी, फारसी और उर्दू में इसे मारीक, मिलरीख और बेहराम जैसे नाम दिए जाते हैं।

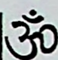
मंगल सौरमंडल का सेनापति है। यह युद्ध कराता है। मंगल-प्रधान जातकों को यह प्रायः सैनिक बनाता है। यह बहुत तेजस्वी और क्रूर ग्रह माना जाता है। प्राचीन ज्योतिष मान्यताओं के अनुसार मंगल पृथ्वी का ही एक भाग है। अंतरिक्ष में किसी भयंकर टकराहट के कारण यह धरती से दूर चला गया। इसीलिए इसे भूमिपुत्र नाम दिया गया।

अंतरिक्ष अनुसंधांन के क्रम में हमारे वैज्ञानिक मंगल पर वर्षों से खोज कर रहे हैं। बीसवीं सदी में वैज्ञानिक यह अनुमान लगाते थे कि मंगल पर सभ्यता का अस्तित्व है। इस ग्रह को पृथ्वी से देखने पर इसमें लाल, हरा रंग बदलता दिखलाई देता है। इससे वैज्ञानिक अनुमान लगाते थे कि इस ग्रह में अनेक नहरें हैं।

हमारी पृथ्वी से लगभग छः करोड़ पच्चीस लाख मील दूर मंगल अंतरिक्ष में सूर्य की परिक्रमा करता है। सूर्य का एक चक्कर लगाने में सतह के कुछ नीचे बर्फ की पर्तों का अभी हाल में पता लगाया







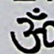
गया है। बर्फ की यह पर्त मंगल ग्रह में उत्तर से दक्षिण तक फैली है। जिस प्रकार हमारी पृथ्वी का एक उपग्रह चन्द्रमा है ठीक उसी प्रकार मंगल के दो उपग्रह हैं। इन्हें हैमास और फैबोस नाम दिया गया है। हमारे ज्योतिषियों ने धरती और उनके प्राणियों पर मंगल के प्रभाव को गहरायी से जानने-समझने का प्रयास किया।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार वैवाहिक जीवन में मंगल का विशेष महत्व होता है। इसके अशुभ प्रभाव से पति-पत्नी के मध्य तनाव और सम्बंध विच्छेद तक हो सकता है। मंगली दोष के कारण पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु भी हो सकती है।

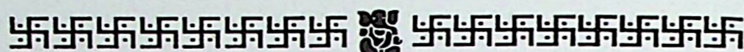
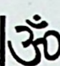
मंगलवार मंगल ग्रह का प्रतिनिधि दिन है। वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी के निकट सूर्य की परिक्रमा करने वाला मंगल ग्रह भूमिपुत्र अर्थात् पृथ्वी का ही एक अंश है। इसकी मिट्टी लाल होने से इसे अंगारक कहते हैं।

मंगल ग्रह के प्रतीक रूप उत्तर भारत में महाबली हनुमान जी को मंगल ग्रह का आराध्य देव माना गया है। मंगल ग्रह का दोष निवारण किसी भी मंगलवार से आरंभ किया जा सकता है। जनसाधारण की मान्यता के अनुसार मंगल व्रत के अधिष्ठाता श्री हनुमान जी ही हैं, जो बल, ज्ञान, ओज प्रदान करने तथा सभी रोगों और पीड़ा को हरने वाले हैं। वह अगर प्रसन्न हों, तो भगवान राम के दर्शन करा देते हैं। हनुमान जी की कृपा से सर्वसुख, राज्य-सम्मान तथा पुत्र की प्राप्ति भी सहज हो जाती है। शनि ग्रह की शांति के लिए तो यह दिन और इसका उपवास अति उत्तम है।

यह व्रत/उपवास प्रत्येक मंगलवार को करना चाहिए। कम-से-कम 31 सप्ताह तक इस व्रत का पालन करें। सूर्योदय से पूर्व ही उठकर स्नानादि कृत्यों से निवृत्त होकर हनुमान जी की प्रसन्नता के लिए या अपनी कामना-पूर्ति के लिए मंगलवार का उपवास/व्रत रखने का संकल्प लें। हनुमान जी से प्रार्थना करें कि वह इस कार्य में आपको बल प्रदान करें। संकल्पोपरांत वायुनंदन का षोडशोपचार पूजन करें। पूजा में विशेषकर लाल पुष्प, सिंदूर, चमेली का तेल, लाल वस्त्र व आटे का चूरमा बनाकर अर्पित करें। स्वयं भी लाल वस्त्र ही धारण करें। हनुमान जी के समक्ष बैठकर





दीप प्रज्जवलित कर हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, सुन्दर काण्ड या श्री रामचरितमानस का पाठ करें। जिस प्रकार हनुमान जी ने भगवान श्री राम के कार्यों को पूर्ण किया था, उसी प्रकार श्रद्धा भाव से व्रत का पालन करने वाले के कार्यों को भी वह सहज में पूर्ण कर देते हैं।

जो मनुष्य मंगलवार व्रत कथा को पढ़ता या सुनता है और नियम से व्रत/उपवास करता है हनुमान जी की कृपा से उसके सब कष्ट दूर हो जाते हैं और सभी सुखों की प्राप्ति होती है। मंगलवार के व्रत से मंगल ग्रह का अनिष्ट भी दूर होता है।

विवाह और दाम्पत्य सुख के सन्दर्भ में मंगल की भाव-विशेष में स्थिति अशुभ मानी गयी है। ये भाव हैं—प्रथम भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव एवं द्वादश भाव। इन भावों में मंगल की स्थिति जातक को मंगली बनाती है और उसका विवाह मंगली व्यक्ति से ही करना चाहिए, यह धारणा आज प्रबल हो चुकी है। इस धारणा का आधार प्राचीन आचार्यों के वे फलादेश हैं, जिनमें उन्होंने इन भावों में मंगल की स्थिति को जातक को मंगली बनाने वाला बतलाया है।

यह विश्वास प्रचलित है, मंगली जातक का या तो सम्बन्ध-विच्छेद होता है, या फिर जीवन-साथी का प्राणांत होता है—और नहीं तो वह रोगी तो अवश्य रहता है। इन्हीं सब बातों के कारण वैवाहिक सन्दर्भों में मंगल का आतंक है। जिन लड़कियों की जन्मपत्रिकाओं में मंगल उपरोक्त भावों में रहता है, उनके माता-पित उनके बचपन से ही उनके विवाह को लेकर परेशान रहते हैं।

अब यह सभी के लिए प्रसन्नता की बात है कि आज अनेक ज्योतिषी मंगल सम्बन्धी भ्रमों के निवारण में लगे हुए हैं। उनका दृष्टिकोण शास्त्र सम्मत और अव्यावसायिक है।

मंगल ग्रह के विषय में एक पौराणिक कथा है—पृथ्वी को दुःखी देखकर उसके पिता ब्रह्मा ने उसे मेंढक को पुत्र-रूप में दिया। पुत्र-रूप में मेंढक को देखकर पृथ्वी रूदन करने लगी। उसकी इस अवस्था से द्रवीभूत होकर ब्रह्मा ने मेंढक को मानवरूप में बदल दिया। पृथ्वी







के उस पुत्र का नाम ''भौमासुर'' हुआ। भौमासुर ने अपने अत्याचारों से पृथ्वी और आकाश को उत्पीड़ित कर डाला। तब पृथ्वी ने फिर पुकार की। इस बार उसके पिता ने भौम नामक एक दूसरा पुत्र पृथ्वी को दिया और कहा, ''पुत्री! यह भौम भौमासुर की भांति किसी को संतप्त नहीं करेगा। पृथ्वी पर सभी के दुःखों का मोचन करेगा। इसे पुरुष ही नहीं, स्त्री भी प्रेम करेगी। इसे अपने शीश पर बिठाएगी।''

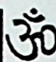
यही वह भौम है जो विश्व कल्याण के लिए, धर्म और सत्य के लिए, जगत में विहार करता है। जो धर्म का अपमान करता है, यह उसे दंड देता है। भयानक दंड देने के कारण ही मंगल को क्रूर और कठोर कहा जाता है। वास्तव में मंगल मंगलदायक है, कष्टदायक नहीं। मंगल बल और वीरता का देवता माना जाता है। त्याग का अवतार तथा रोग-पीड़ा का विनाशक मंगल ही है। विद्वान इसे शक्ति का ग्रह भी कहते हैं।

मंगल के प्रभाव वाले जातक पराक्रमी, साहसी, सहनशील, क्रोधी, आक्रामक और अपने विरोधियों से घृणा करने वाले होते हैं। वे घात-प्रतिघात, षड्यंत्र, दुर्घटना, विस्फोट और छल-कपट का सामना करते हैं। मंगल के अशुभ प्रभाव से जातक को फोड़ा-फंसी, रक्तपात, पित्त विकार, बुखार, चोट-चपेट जैसे रोग झेलने पड़ते हैं। जन्मपत्रिका में मंगल शुभ स्थान पर विराजमान हो, तो जातक को राजनीति, पुलिस, फौज, इंजीनियरी और नेतृत्व के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त होती है। मंगल के प्रभाव में जातक अनुशासनप्रिय कठोर और आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बनता है। मंगल की गिनती पाप ग्रहों में होती है। यह पूर्व में उगता है और पश्चिम में अस्त होता है। इसका सबसे अधिक प्रभाव जातक के जीवन में अट्ठाइस से बत्तीस वर्ष की आयु के मध्य होता है।

वर्तमान समय में एक बड़ी संख्या ऐसे लड़के-लड़कियों की है जिनकी शादी न हो पाने का कारण केवल उनका ''मंगली'' होना ही होता है। आयु है कि लगातार बढ़ती जा रही है, लेकिन शादी नहीं हो पा रही। हर बार बनते-बनते बात बिगड़ जाती है।

एक ओर जहां विवाह की शहनाई का मधुर गान जोड़ों के कानों

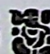




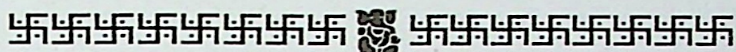
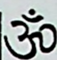
में रस घोल देता है, वहीं दूसरी ओर कुछ लड़के-लड़कियों का विवाह मंगली दोष के कारण चाहकर भी नहीं हो पाता। स्वयं को आधुनिक कहने वाली पीढ़ी भी ''मांगलिक दोष'' के इस फेर से स्वयं को अलग नहीं कर पा रही है।

यही मांगलिक दोष मेरी पुस्तक का विषय है। इस मांगलिक दोष से मुक्ति मेरी इस पुस्तक का उद्देश्य है। आप सभी मांगलिक दोष से मुक्त होकर सफल जीवन व्यतीत करें, यह मेरी कामना है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है। भविष्य के प्रति अनिश्चित मनुष्य अपनी योजनाओं का क्रियान्वयन करने में स्वयं को असमर्थ पाता है। एक तरह की असमंजसपूर्ण स्थिति में जीने को वह विवश हो जाता है। ज्योतिष मानव को ऐसी स्थिति से उबारने में सहयोग करता है। जिस प्रकार एक कुशल वैद्य नाड़ी देखने से शरीर के रोगों को जान लेता है ठीक उसी प्रकार विद्वान ज्योतिषी केवल ललाट, हाथ का आकार, हाथ की रेखाएं, जन्मपत्री, प्रश्नकुण्डली आदि से मनुष्य की मानसिक एवं अन्य प्रवृत्तियों का पता लगा लेते हैं। यह तर्कसम्मत एवं सर्वमान्य सिद्धांत है कि प्रत्येक कार्य के मूल में कारण अवश्य होता है, अगर मनुष्यों के चेहरे, हाथों के आकार और रेखाएं भिन्न-भिन्न हैं तो क्या कारण में भिन्नता नहीं होगी? यह भी सत्य है कि प्रारब्धानुसार कर्मफल तो भोगने ही पड़ते हैं, लेकिन ज्योतिष शास्त्र के द्वारा समय की सही गणना करके ऐसे कर्मों के प्रभाव को व्रत, उपवास अनुष्ठानों से कम किया जा सकता है। गीता के अनुसार कर्म ही भाग्य है और सुकर्म ही परमात्मा की आराधना का श्रेष्ठ उपाय है। इसलिए विद्वान ज्योतिषी मनुष्य को सत्कर्म में प्रवृत्त होते हुए क्रियाशील रहने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि व्यक्ति अपने भीतर सकारात्मक चेतना को जागृत कर स्वयं को सुखी और सौभाग्यशाली बनायें।

यहां आकर मेरे दो शब्द विराम लेते हैं। मैं हृदय से आभारी हूं उन जाने, अनजाने विद्वानों का जिनकी खोजों और विचारों ने मेरे पुस्तक के लेखन का मार्ग प्रशस्त किया। यह उन्हीं विद्वानों का आशीर्वाद है जो मांगलिक दोष पर आधारित यह पुस्तक सब जैसी होकर भी सबसे अलग है।





अपने सहृदय पाठकों का आभार व्यक्त ना करना मेरी धृष्ठता होगी। मेरे पाठक ही मेरा संबल हैं। वह स्वयं तो पुस्तक खरीदते ही हैं साथ ही अन्य लोगों को पुस्तक खरीदने के लिए प्रेरित भी करते हैं। आज मेरी पुस्तक सभा समारोह में भेंट करना परम्परा बन चुकी है। आभारी हूं आप सभी का।

श्री अरूण जैन स्वामी मारुति प्रकाशन का भी हृदय से आभारी हूं जो पूरी भव्यता और ईमानदारी के साथ मुझे पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रिय पाठकों! मेरा यह विश्वास है अगर आप मानसिक रूप से परेशान हैं, आर्थिक रूप से कष्ट में हैं, किसी शारीरिक रोग से परेशान हैं, बार-बार अपनी असफलताओं से दुःखी हैं, अथवा अन्य किसी भी प्रकार के कष्ट में हैं तो निश्चय ही आप मंगल ग्रह के अनिष्ट प्रभावों के शिकार हैं। इस पुस्तक को पढ़कर आप स्वयं अपने ऊपर पड़ने वाले ग्रहों के अनिष्ट प्रभावों का उपचार कर सकेंगे।

अंत में आपकी पुस्तक आपको ही प्रस्तुत है।

–आचार्य पं० शशि मोहन बहल

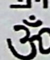
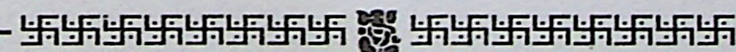
"तंत्र सबके लिए मिशन"

डी-4, राधापुरी, कृष्ण नगर

(जमुनापार), देहली-110051

www.tantrasabkeliyemission.webs.com

e-mail:- Tantrik_bahl@yahoo.co.in






नौ ग्रहों का वैज्ञानिक विवेचन

पृथ्वी की उत्पत्ति कब हुई? मनुष्य कब उत्पन्न हुआ? यह आज भी विज्ञान में विवाद का विषय है, पर एक बात विज्ञान स्पष्ट रूप से मानती है कि समूचा ब्रह्माण्ड कभी जलता पिंड था। इस पिंड से सूर्य की उत्पत्ति हुई और फिर वह सब कुछ बना, जिसे हम सौरमंडल कहते हैं। सूर्य सबका जनक है। हमारे पूर्वजों ने सूर्य को सर्वोपरि माना है और हर क्षेत्र में उसे प्रथम स्थान दिया है। सूर्य के उपरान्त कौन-सा ग्रह बना या नहीं बना, तमाम वर्तमान सौर जगत के ग्रह नक्षत्रों का क्या क्रम है, यह भी विवाद में है। पर यह बात तो निर्विवाद है कि सम्पूर्ण सौर जगत के ग्रह सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं और सूर्य स्थिर हैं। सभी ग्रह सूर्य से प्रभावित हैं। हमारी पृथ्वी विशाल अनन्त ब्रह्माण्ड का एक कण भी नहीं है। मात्र परमाणु या परम क्षुद्र कण मात्र है। यह क्षुद्र पृथ्वी सूर्य से प्रभावित है। प्रभाव के कारण दिन-रात, ऋतुएं तथा जीवन है। कल्पना कीजिए, अगर सूर्य न हो तो...?

पृथ्वी का अणु-अणु, चेतन और अचेतन, निर्जीव-सजीव सभी सूर्य से प्रभावित हैं। सूर्य का प्रभाव सबसे तेजस्वी है। तेजस्वी पिता की संतानें अन्य ग्रह हैं। क्या तेजस्वी पिता की इन संतानों में इतना भी प्रभाव न होगा कि वह इस क्षुद्र पृथ्वी पर अपना प्रभाव डाल सके? यह कैसे हो सकता है? परम तेजस्वी पिता सूर्य के समान नहीं, कुछ तो प्रभाव डाल ही रहे हैं। चर-अचर पर इसी प्रभाव की

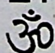



नाप जोड़ भारतीय ज्योतिष ने की है और उसका अत्यन्त वैज्ञानिक विश्लेषण किया है।

पृथ्वी को 360 रेखाओं में (रात-दिन मिलाकर एक वर्ष) विभाजित कर प्रत्येक 12 रेखा के समूह को एक नाम दिया है। प्रत्येक माह 12 समूह में 30 रेखायें ली हैं। इस प्रकार 12 राशियां, 12 माह, रात-दिन के अलग-अलग 12 घंटे बने और 30 रेखाओं का एक माह बना। सौर मण्डल निरन्तर चलायमान है। अतएव करोड़ों वर्ष बाद नाप-जोड़ में अन्तर आ जाता है। सूर्य की आकर्षण शक्ति में उत्पन्न भिन्नता के कारण ग्रह-गति अनियमित हो जाती है। पृथ्वी अपनी धुरी पर भ्रमण करती सूर्य की परिक्रमा कर रही है। अतएव 30 रेखाओं की दूरी पार करने में सेकंड के करोड़वें हिस्से का भी अन्तर आने पर 360 दिन का वर्ष नहीं स्थिर रह सकता, फलतः 365 कर दिया गया और रेखायें भी घट-बढ़ कर दी गईं। गणित की दृष्टि से यह अत्यन्त जटिल विषय है। हमारा तात्पर्य यही है कि 30 दिन का ही माह क्यों नहीं रहा आया? 27, 28, 29 और 31 दिन का ही माह क्यों कर दिया गया? इस शंका का समाधान कर दिया जाए।

जिस प्रकार पृथ्वी को 12 खण्डों में विभाजित कर दिया गया तो सौरमण्डल से उसका नाता समझने के लिए उसे भी "भचक्र" (जाडियाक) नामकरण कर दिया गया। यह भचक्र सूर्य के दोनों ओर 9 अंश तक फैला है। भचक्र अपनी धुरी पर हमारी पृथ्वी से पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता दिखलाई पड़ता है। पृथ्वी के 12 खण्डों को राशि का नाम दिया गया और भचक्र के उपर्युक्त 9 अंशों को ग्रह नाम दिया गया। फलतः भारतीय ज्योतिष (विज्ञान) शास्त्र में 12 राशियों और नवग्रहों ने जन्म लिया। वह निम्न प्रकार हैं—

क्र०सं०	ग्रह	अंक	क्र०सं०	राशियां
1.	सूर्य	1	1.	मेष
2.	कोमल चन्द्र	2	2.	वृषभ
3.	सेनापति मंगल	9	3.	मिथुन
4.	कुमार बुध	5	4.	कर्क
5.	गुरु बृहस्पति	3-7	5.	सिंह

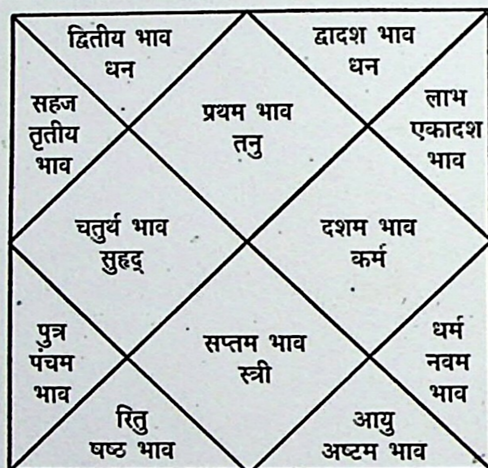




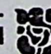



क्र०सं०	ग्रह	अंक	क्र०सं०	राशियां
6.	शुक्र	6	6.	कन्या
7.	शनि	4-8	7.	तुला
8.	राहु		8.	वृश्चिक
9.	केतु		9.	धनु
			10.	मकर
			11.	कुम्भ
			12.	मीन

जन्मपत्रिका में कौन-से भवन में क्या देखें?



सौरमण्डल का ज्ञान रखने वाला प्रत्येक पाठक जानता है कि ग्रह केवल 1 से 7 तक ठोस पिंड हैं तथा 8-9 क्रमशः राहु और केतु गैसीय पिंड मात्र हैं। सौरमण्डल में यह बड़ा उत्पात करते हैं। वास्तव में यह छायाग्रह कहलाते हैं सौरमण्डल में उन दो स्थानों पर जहां चन्द्र अपने भ्रमण सूर्य के पथ को काटता है, वहीं पर उत्तर वाला स्थान राहु और उसके ठीक सामने 180 अंश वाला स्थान केतु कहलाता है। यह दोनों सूर्य की परिक्रमा भी नहीं करते। यह सब ग्रह अपनी धुरी पर पूरब से पश्चिम की ओर घूमते हैं। यह दोनों भाई पश्चिम से पूर्व की ओर घूमते हैं। सूर्य चन्द्र आगे चलेंगे तो






यह दोनों सदा पीछे चलेंगे। इसी विशेष गुण के कारण राहु-केतु का शब्द हमारे जीवन में किसी पर चिपकाने का व्यंग्य चल गया है; अर्थात् वक्री हैं वह।

मुख्य ग्रह इस प्रकार 7 आए। फलतः रेखाओं या माह को 7 में विभाजित कर दिन का नामकरण कर दिया गया। मोटे तौर पर माह में 4 सप्ताह बन गए। गणित ठीक करने के लिए इनमें बराबर अन्तर पड़ता रहता है। आशय, यह 7 दिन का एक सप्ताह बना दिया गया। यह सब समय का माप करने के लिए किया गया है। इस प्रकार 7 ग्रह (मुख्य) के नामानुसार दिनों का नामकरण आया।

क्र०सं०	ग्रह	दिन या वार
1.	सूर्य (रवि)	रविवार
2.	चन्द्र (भौम)	सोमवार या भौमवार
3.	मंगल	मंगलवार
4.	बुध	बुधवार
5.	बृहस्पति (गुरु)	बृहस्पतिवार (गुरुवार)
6.	शुक्र	शुक्रवार
7.	शनि	शनिवार

समय का नाप-जोड़, घंटा, मिनट, सैंकिड—यह सुविधा के लिए किया जाता है। 12 घंटे का दिन, 12 घंटे की रात। 60 मिनट का घंटा, 60 सैकण्ड का मिनट। इसी प्रकार उपर्युक्त भचक्र का भी यह विभाजन सर्वथा वैज्ञानिक है। कोई पाठक बताए इसमें कहां अंधविश्वास, कपोल-कल्पना, ढकोसला है। यह तो शुद्ध वैज्ञानिक विधि है।

इस प्रकार जब पृथ्वी और भचक्र, सौरमण्डल का वर्गीकरण कर लिया गया तो पृथ्वी पर विद्यमान चराचर पर परस्पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी नाप-जोड़ शुरू हुई। यही प्रभाव और नाप-जोड़ ज्योतिष बन गई। भचक्र, सौरमण्डल का प्रभाव देखकर पृथ्वी के चराचर पर उसको पहचाना जाने लगा। आपको पता है कि कुछ ग्रहों का प्रकाश पृथ्वी तक आने में कितना समय लगाता है? इसका अलग-अलग विवरण विज्ञान में है। ग्रहों की चाल, स्थिति में परिवर्तन आज आया तो उसका प्रभाव (प्रकाश) पृथ्वी पर आते-जाते समय



लगता है, जब आएगा तो क्या प्रभाव होगा? इसका पूर्वानुमान तो लगाया ही जा सकता है। जिस प्रकार आकाशीय स्थिति से वेधशाला आने वाला मौसम बतलाती है, उसी प्रकार भचक्र, सौरमण्डल में ग्रह-स्थिति परिवर्तित होते ही उसके प्रभाव को पृथ्वी को आने से पूर्व जान सकता है। यह बताया जा सकता है कि चराचर पर क्या प्रभाव आ रहा है? इस प्रकार की पूर्व सूचना को उपर्युक्त गणित द्वारा जान लेना ही ज्योतिष विद्या है। ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुसार आगामी प्रभाव (जो भचक्र सौरमण्डल में बन चुका है) को बतला देना ''भविष्य-कथन'' (भविष्यवाणी) कहा गया है। अब इसमें कौन-सी अवैज्ञानिकता या उपहास की बात है, आने वाले प्रभाव की भाषा मूक होती है। उसके न समझ पाने के कारण अनाड़ी अपना मनमाना निष्कर्ष बतला देता है, तो इसमें बेचारी ''ज्योतिष विद्या'' का क्या दोष है? आप स्वयं सोचिए।

भविष्यकथन एक सर्वथा वैज्ञानिक प्रणाली है। कठिनाई यह है कि भचक्र पर गहन अध्ययन और भविष्यकथन के समय परिवर्तन का ठीक-ठीक ज्ञान न होने से भविष्यकथन असत्य हो जाता है। बड़ा गूढ़ विषय है।

समय क्या है?

आइंस्टाइन के शब्दों में, ''छलना, एक धोखा, मिथ्याडम्बर है।'' वायुयान से यात्रा करते समय, समय रेखा पर आते ही यात्रियों को अपनी घड़ी ठीक करनी पड़ती है।

क्यों?

अतीत क्या है? वर्तमान क्या है? भविष्य क्या है?

यह सब मायाजाल है। बरसों आपको कोठरी में रखा जाए तो क्या आप समय बता सकेंगे? तब समय एक कल्पना मात्र है। इसी कारण हमारे धर्मशास्त्रों में कहा गया है **कृष्ण** के शब्दों में—''मैं अनन्त हूं, अनादि हूं, समयहीन हूं।'' बार-बार जयघोष किया गया है—''एकोअहम् द्वितीयोनागीता'' केवल एक मैं हूं। दूसरा कोई नहीं।

''जगन्मिथ्या'' संसार झूठा है, मिथ्या है। मरीचिका क्या है? मृगतृष्णा क्या है? राम मृग का वध करने, पकड़ने दौड़े...सब आंखों का धोखा, मस्तिष्क की कल्पनायें, मनुष्य यह जानते हुए भी कि





मैं मरूंगा, मनुष्य जीता है, संघर्ष करता है, संचय करता है, हाय-हाय करता है, माया-मोह, ममता जानता है कि मिथ्या है...। कोई प्रियतमा, प्रियतम साथ देने वाला नहीं आया है अकेला। जाएगा अकेला। हाय-हाय कर कमाया गया धन यहीं रहता है। आया खाली हाथ, जाएगा खाली हाथ। यह कैसा मोह-जाल है। इसी मोह-जाल को गीता में भगवान श्री कृष्ण ने भंग किया और आइंस्टाइन ने विज्ञान में—टाइम थ्योरी—समय सिद्धांत—सापेक्षवाद उनका कथन है कि टाइम थ्योरी से हम अतीत में जा सकते हैं गति "प्रकाश" की चाहिए। जिस दिन वह गति (एक सैकण्ड में लगभग 1,86,283 मील) प्राप्त कर लेगा, उसी दिन अतीत में प्रवेश कर देख सकेगा। भविष्य जान सकेगा। विज्ञान स्वयं कहता है—जिस बालक की आयु पृथ्वी पर 25 वर्ष होगी, मंगल पर 18 वर्ष होगी, क्योंकि मंगल का दिन लगभग 24 घण्टे 37 मिनट 25 सैकण्ड का होता है। वह 687 दिनों में एक परिक्रमा करता है; अर्थात् एक वर्ष पूरा होता है। मंगल का वर्ष हमारी धरती के दो वर्ष से थोड़ा कम है। समय मिथ्या हो गया। इसी प्रकार पृथ्वी का किग्रा० वजन चन्द्रमा पर 6 किलोग्राम हो जायेगा। भार भी मिथ्या हो गया। इसीलिए वेदों में कहा गया—"जगन्मिथ्या" सब कुछ मिथ्या है—झूठा है।

इसी मायाजाल को साकार रूप देने के लिए विज्ञान ने समय को बांधा है। उसकी प्रणाली का अध्ययन करके प्रामाणिक सटीक भविष्य बतलाया जा सकता है। इस कारण राशिफल, वर्षफल, भविष्यकथन, रूढ़िवादिता, पंडितों का ढकोसला नहीं है, वरन् विज्ञान सम्मत सिद्धांत है।

इसी दृष्टिकोण से पूरी परख के साथ नौ ग्रहों का अंकन किया है, त्रुटियां स्वाभाविक हैं। फिर भी मेरा ध्यान नहीं गया होगा। अतएव विज्ञ पाठक मुझे ज्ञान दें तथा परखकर लिखें कि यह कहां तक सटीक है, जो दावा मैंने किया है।

भारतीय ज्योतिष का आधार यह है कि सूर्य सौरमण्डल के केन्द्र में है और पृथ्वी सहित अन्य ग्रह उसी की परिक्रमा करते हैं, उसी तरह जिस तरह परमाणु के केन्द्र के चारों ओर उसके कण





चक्कर काटते हैं। हमारा प्रिय ग्रह बुध जिसे चंद्रमा का पुत्र भी माना गया है और जिसके विषय में अनेक रोचक कथाएं हैं।

कुमार बुध—सूर्य से 35,392,000 मील दूरी पर है। उसका व्यास 3,058 मील है। यह सबसे छोटा ग्रह है। वह 88 दिनों और 23·1/2 घंटों में सूर्य की एक परिक्रमा पूर्ण करता है—और यही अवधि बुध के एक वर्ष की रचना करती है; अर्थात् बुध के वर्ष की अवधि 88 दिनों की है। यह नीलवर्णी प्रकाश वाला ग्रह है, जो सूर्य से कभी 30 डिग्री से अधिक दूर नहीं होता है। इसीलिए बुध सूर्य के साथ अथवा इससे एक राशि आगे या पीछे ही होता है।

बुध को देवताओं का दूत भी माना गया है। बुध को "चेतावनी सूचक ग्रह" भी कहा गया है।

भारतीय ज्योतिष में बुध का वर्ण दूर्वा की भांति हरा बतलाया गया है। वह वाणी का प्रतीक है। बुध हमारे भीतरी व्यक्तित्व का प्रतिनिधि है।

किसी जातक की वाणी तर्कशक्ति और ग्रहण क्षमता को प्रदर्शित करता है। बुध के नक्षत्र आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती हैं। राशियां हैं—मिथुन एवं कन्या।

सूर्य, शुक्र ग्रह मित्र। मंगल, गुरु, शनि सम। चंद्रमा शत्रु। उच्च राशि कन्या है और नीच राशि मीन है। मूल त्रिकोण है : कन्या दैत्य गुरु शुक्र : बुध के पश्चात् सूर्य के निकट ग्रह है शुक्र। शुक्र सूर्य से 66,134,000 मील दूरी पर स्थित है। उसका व्यास है—7,510 मील और वह 224 दिन 17 घंटों में सूर्य की एक परिक्रमा पूर्ण करता है। यही उसका वर्षमान है; अर्थात् शुक्र का वर्ष 225 दिनों का होता है। उसके दिन की अवधि 23 घंटे 5 मिनट है। शुक्र को "सांध्य तारा" भी कहा जाता है। शुक्र को "भोर का तारा" भी कहा जाता है।

भारतीय ज्योतिष में शुक्र ग्रह पत्नी, वाहन, आभूषण, अलंकार कामवासना व्यापार, समृद्धि, आनंद का प्रतीक माना गया है। शुक्र भौतिक सुख और सफलता प्रदर्शित करता है। शुक्र के नक्षत्र हैं—भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा। भाव हैं—द्वितीय एवं सप्तम।





राशिया हैं—वृष एवं तुला। बुध, शनि, राहु मित्र। गुरु बृहस्पति, मंगल, केतु सम। सूर्य, चंद्र शत्रु।

उच्च राशि मीन है और नीच राशि है—कन्या। मूल त्रिकोण है—तुला। शुक्र से आगे हमारी पृथ्वी है।

पृथ्वी सूर्य से 91,430,000 मील दूर स्थित है और उसका व्यास शुक्र से कुछ अधिक अर्थात् 7,926 मील दूर है। हमारा वर्ष 365·1/2 दिनों का है अर्थात् इस अवधि में पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।

कोमल चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा 29·1/2 दिनों में करता है। चंद्रमा धरती से 240,000 मील दूर है। चंद्रमा का प्रचलित नाम है—"मून"।

चंद्रमा को मन का प्रतीक माना गया है। उसका मनुष्य के बाल्यकाल पर अधिकार कहा गया है। भारतीय ज्योतिष में केवल चंद्रमा से माता का विचार किया जाता है।

चंद्रमा के नक्षत्र हैं : रोहिणी, हस्त, श्रवण। राशि है : कर्क। सूर्य, बुध—मित्र। मंगल, गुरु, शुक्र, शनि—सम। राहु—शत्रु। उच्च राशि वृष है और नीच राशि है वृश्चिक। मूल त्रिकोण है—वृषभ।

सेनापति मंगल—सूर्य से मंगल की दूरी 139,311,000 मील है। यह व्यास में पृथ्वी से काफी छोटा है अर्थात् उसका व्यास 4,363 मील है। मंगल का वर्षमान है 687 दिन। उसका दिनमान है 24 घंटे 37 मिनट। मंगल को युद्ध का देवता माना गया है। ज्योतिषी इसे भय उत्पन्न करने वाला ग्रह मानते हैं।

भारतीय ज्योतिष मंगल को साहस, पराक्रम एवं कालपुरुष के बल का प्रतीक मानते हैं। उनके अनुसार मंगल भू-संपत्ति, कृषि, धैर्य, रोग, छोटे भाई, पराक्रम, अग्नि, सेनापति तथा राजशत्रु का कारक ग्रह है। मंगल के नक्षत्र हैं—मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा। सूर्य, चंद्र, गुरु—मित्र। बुध, राहु, केतु—सम। शनि, शुक्र—शत्रु। मंगल की राशियां हैं—मेष, वृश्चिक। मंगल की उच्चराशि है मकर और नीच राशि है कर्क। मूल त्रिकोण है—मेष।

मंगल को अग्नितत्व, पित्त प्रवृत्ति, मज्जा का स्वामी और शुष्क ग्रह माना गया है।





गुरु बृहस्पति—गुरु हमारे सौरमण्डल का विशाल ग्रह है। यह सूर्य से 475,692,000 मील दूर है। उसका व्यास है 84,846 मील। वर्षमान है 4,333 दिन और दिनावधि है 9 घंटे 55 मिनट। शुक्र के पश्चात् गुरु बृहस्पति ही सर्वाधिक प्रकाशमान ग्रह है।

भारतीय ज्योतिष में गुरु बृहस्पति को विवेक, न्याय, ईमानदारी, आध्यात्मिकता, धार्मिक-प्रवृत्तियों, आशा, आकांक्षा, उदारता, दया, परोपकारिता और सामाजिकता का प्रतिनिधि माना गया है।

गुरु बृहस्पति को कालपुरुष की बुद्धि कहा गया है। वह देवताओं का गुरु है। गुरु के नक्षत्र हैं—पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद। राशियां हैं—धनु एवं मीन। सूर्य, चंद्र, मंगल—मित्र। राहु, शनि, केतु—सम। बुध, शुक्र—शत्रु। गुरु बृहस्पति कर्क में उच्च का और मकर में नीच का माना गया है। मूलत्रिकोण है—धनु। गुरु को आकाश तत्व और चर्बी, कफ, धातु की वृद्धि करने वाला माना गया है।

छायाग्रह राहु और केतु—ये अन्य ग्रहों की भांति ग्रह नहीं हैं। अधिकांश ज्योतिषियों ने इन्हें कोई महत्व नहीं दिया है। सूर्य की परिक्रमा करती पृथ्वी के मार्ग को, चंद्रमा जहां पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए काटता है, इसके उत्तरी बिंदु को राहु एवं दक्षिणी बिंदु को केतु कहा गया है। ज्योतिषी राहु को प्रभाव में शनिवत् मानते हैं, जबकि केतु को सौम्य माना गया है।

राहु को कृष्णवर्णी, पश्चिम एवं नैर्ऋत्य दिशा का स्वामी तथा शनि की भांति मोक्षकारक ग्रह माना गया है। इसे वायु, निद्रा, सुख, पितामह आदि का कारक कहा गया है।

केतु को भी कृष्णवर्णी कहा गया है। इसे चर्मरोग, निम्नजाति, क्षुधाजनित कष्ट, हाथ, पैर एवं मोक्ष कारक ग्रह के रूप में मान्यता दी गयी है।

शनि—आकाश में शनि सूर्य से अत्यधिक दूरी पर है। सूर्य से इसकी दूरी 806 मिलियन मील है। इसका व्यास लगभग 75,000 मील है। शनि ग्रह अपनी धुरी पर 10 घंटे 12 मिनट में एक चक्कर पूर्ण करता है। शनि के लगभग 17 चन्द्रमा या उपग्रह माने जाते हैं। सूर्य की एक परिक्रमा लगाने में 29·5 वर्ष लगते हैं। इसके





अनुसार शनि को एक राशि याने 30° पार करने में 2·1/2 वर्ष का समय लगता है। शनि ग्रह देखने पर नीली गेन्द की तरह दिखाई देता है।

शनि की मध्यम गति प्रतिदिन "20" है। शीघ्र गति 5-"27" है। शनि लगभग 180 दिन अतिचारी रहता है। शनि की पूर्ण दृष्टि अपने स्थान से 3, 7 व 10वें स्थान पर होती हैं। इसके मित्र ग्रह बुध, शुक्र व राहु हैं। सम ग्रह गुरु है। शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल हैं। सप्तम भाव में शनि बली होता है। इसके कारक भाव 6, 8, 10 व 12 हैं। शनि तुला में उच्च का एवं 20" पर परमोच्च होता है। मेष राशि में यह ग्रह नीच का एवं 20" पर परम नीच का होता है। इसकी स्वराशि मकर व कुंभ हैं एवं मूल त्रिकोण राशि कुंभ 20" से है। शनि 12वें घर में हर्षित होता है। शुभ राशियां 1, 4, 5, 8 हैं एवं कर्क व सिंह राशियां अस्त राशियां हैं। शनि की दशा में 19 वर्ष आबंटित हैं। इसका भाग्योदय वर्ष 36वां है। शनि पश्चिम दिशा का स्वामी है जोकि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव है। शनि एक नक्षत्र में 400 दिन रहता है। गोचर में शनि 4, 8, 12 में जन्मलग्न में निंद्य होता है। 1, 2, 5, 7, 9 स्थान में पूज्य होता है जबकि 3, 6, 10, 11 स्थान में शुभ फल देने वाला होता है। शनि को सूर्य का वेध नहीं होता।



शनि की वस्तुएं उड़द, तिल, कुलय, भैंसा, लोहा, काली गाय,





काले वस्त्र, इन्द्रनील व नीलम रत्न हैं। काले पुष्प, कस्तूरी व शमी वृक्ष हैं।

शनि के तीन नक्षत्र हैं–

1. **पुष्य**–कर्क राशि के 3"–28" से 16"-40" तक।

2. **अनुराधा**–वृश्चिक राशि के 3"–20" से 16"–40" तक।

3. **उत्तराभाद्रपद**–मीन राशि के 3"–20" से 16"–40" तक।

शनि ग्रह का वर्ण अत्यंज है। इसका देवता ब्रह्मा है। यह नपुसंक ग्रह है। इसका आकार दीर्घ है। स्वभाव अति तीक्ष्ण है। स्थान पर्वत व वन है। यह वृद्ध अवस्था का ग्रह है। रंग नीला है। अधोदृष्टि है। इसे पापी ग्रह की संज्ञा दी गई है अतः दुःखों का कारक है।

ग्रहों में इसे सेवक की उपाधि दी गई है। शनि सेवक व दरिद्रता का कारक है। वायु तत्व व तामस गुण का है। नाग धातु का एवं मलिन वस्त्र का स्वामी है। यह संध्याकाल में बली होता है। शरीर में स्नायु का स्वामी है। वात प्रकृति है। शिशिर ऋतु का स्वामी है।

शनि मित्र है, अगर हमारे कर्म-धर्म के अनुसार शुभ एवं सात्विक है। अन्यथा शनि दंडाधिकारी है।

मंगल राशि और उसका फल

जैसा कि हम अन्य ग्रहों के विषय में पाते हैं वैसे ही मंगल भी प्रत्येक राशि में अलग-अलग प्रभाव डालता है। यहां पर मैं मंगल ग्रह के सामान्य फल के अलावा राशिगत विशेष दशाफल का भी वर्णन कर रहा हूं।

सामान्य फल :

ताराग्रहाः स्वोच्चगृहादिसंस्था वक्रास्तमानानुगता यदि स्युः।
मिश्रं फलं ते निजपाककाले यच्छन्ति नूनं सुधिया विन्त्यिम्।।

अगर तारा (मंगलादि) ग्रह अपनी राशि या उच्च राशि में होकर वक्र अथवा अस्त हों तो वे अपनी दशा में मिश्रित फल देते हैं।

स्यात्पाके क्षितिनन्दनस्य च धनं शस्त्राच्च धात्रीपते-
भैषज्याच्च चतुष्पदादषि तथा नानाविधैरुद्यमैः।
पित्तासृंग्ज्वरपीडनं क्षितिपतेर्भीर्तिं च नीतिच्युतिं






मूर्च्छाद्यं च निजालये कलिरीति प्रोक्तं फलं सूरिभिः।।

उच्चादि भाव स्थित मंगल की दशा में शस्त्र से, राजा से, औषधि से तथा पशुओं से अनेक उद्योग द्वारा धन-लाभ होता है। नीचादि स्थित मंगल की दशा में पित्त, शोणित और ज्वर के विकार से पीड़ा, राजा से भय, अनीति की प्रवृत्ति, मूर्च्छा तथा परिवार में कलह होती है।

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके क्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम्।
अर्थोपलब्धिः खलु साहसेन रणान्गणे चारुयशो विशेषात्।।

अगर मंगल स्वमूल त्रिकोण (मेष राशि) में उपस्थित हो तो जातक पुत्र स्त्री से सुखी, साहस से धन-लाभ करने वाला, विजयी और सुयशी होता है।

मेष राशि का मंगल

मेषोपयातस्य च भूसुतस्य स्युः पाककाले किल मंगलानि।
स्यात्सन्ततिः साहसमग्निबाधा नानाविधारातिसमुद्भवः स्यात्।।

मेष राशिस्थ मंगल की दशा में परिवार में अनेक प्रकार के मंगल कार्य—संतान सुख, साहस की वृद्धि, अग्नि का भय और शत्रुओं की वृद्धि होती है।

वृष राशि में मंगल

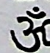
वृषस्थितस्यावनिनन्दनस्य पाकप्रवेशे पुरुषः सहर्षः।
अनल्पजल्पो गुरुदेवभक्तः परोपकारादरता समेतः।।

वृषभ राशिस्थ मंगल (भौम) की दशा में हर्ष, बहुत बोलना, गुरुजन और ब्राह्मण में भक्ति तथा परोपकार करने में रुचि होती है।

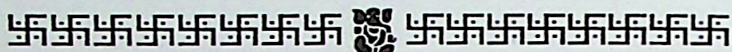
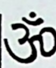
मिथुन राशि में मंगल

युग्मस्थितोर्वीतनयस्य पाके प्रवासशीलोऽनिलपित्तकोपः।
बहुव्ययः स्यात्स्वजनैर्विरोधी नरः कलाज्ञो नितरांविधिज्ञः।।

मिथुन राशिस्थ मंगल की दशा में विदेश यात्रा, वात-पित्त का प्रकोप, अधिक व्यय, स्वजन से विरोध, कलाओं का ज्ञान और व्यवहार में पटुता होती है।





कर्क राशि में मंगल

कर्कस्थभौमस्य भवेद्दशायामुद्यानवह्नि-प्रभवाथयुक्तः।
नरो हि दारासुतदूरवर्ती कलेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्तिः।।

कर्क स्थित मंगल की दशा में बगीचे एवं अग्नि संबंधी कार्य से धन लाभ, स्त्री-पुत्र से अलगांव, क्लेश और शरीर में निर्बलता होती है।

ध्यान रखें–

सन्त्यक्तनीचांशकुजस्य पाके ख्यातः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः।
चतुष्पदाद्यो बलवान्नकस्मात्प्रजायते गुह्यरुजाभिभूतः।।

अगर कर्क राशि में नीच का मंगल (28 अंश से आगे) हो तो जातक सभी गुणों से संपन्न, पशुओं से सुखी, विख्यात तथा बल से युक्त होता है, किन्तु अचानक किसी असाध्य रोग का भय वना रहता है।

सिंह राशि में मंगल

सिंहाश्रितक्ष्मातनयस्य पाके नूनं भवेन्नायकता बहूनाम्।
कान्तासुताद्यैश्च वियोगिता च बाधा तथा हेतिहुताशजाता।।

सिंह राशिस्थ मंगल की दशा में जातक को बहुत लोगों का स्वामित्व, स्त्री-पुत्रादि से वियोग, शस्त्र और अग्नि से भय होता है।

कन्या राशि में मंगल

कन्यानुयाताअवनिनन्दनस्य पाके सदाचारपरो नरः स्यात्।
यज्ञक्रियायामपि सादरश्च दारात्मजीर्वीधनधान्यसौख्यम्।।

कन्या स्थित मंगल की दशा में उत्तम आचरण, यज्ञ आदि कार्य में रुचि, स्त्री, पुत्र, भूमि और धन-लाभ होता है।

तुला राशि में मंगल

तुलागतेलासुतपाककाले स्याद् द्रव्यभर्यावियुतो हि मर्त्यः।
चतुष्पदा भाव कलिप्रसंगैर्हतोत्सवो वे विकलाङ्गयष्टिः।।

तुला राशि का मंगल की दशा में धन की हानि, स्त्री का वियोग, पशुओं की हानि, कलह से पीड़ित और अंग-सुख से हीन होता है।







वृश्चिक राशि का मंगल

पुमान्मवेद् वृश्चिकराशिगस्य भौमस्य पाके कृषिकर्मकर्ता।
स्वसंग्रहे जातमनः प्रवृत्तिर्द्वेषी बहूनामतिजल्पकश्च।।

वृश्चिक राशि में मंगल की दशा में खेती करने में उत्साह, धन संग्रह करने की इच्छा, द्वेष और व्यर्थ बोलने का अवसर प्राप्त होता है।

धनु राशि का मंगल

धनुर्द्धरस्थस्य धरासुतस्य पाकप्रवेशे द्विजदेवभक्तः।
नरो नरेन्द्राप्त मनोरथः स्यात्कलिप्रसंगोपहतोत्सवश्च।।

धनु राशि में मंगल की दशा में देव-ब्राह्मणों में भक्ति, राजा से लाभ किन्तु कलह से दुःख होता है।

मकर राशि का मंगल

वक्रस्य नक्रोपगतस्य पाके राज्योपलब्धिः स्वकुलानुमानात्।
युद्धे विवादे विजयो नितांतं सद्रत्नचामीकरवाजिसौख्यम्।।

मकर राशि का मंगल कुलानुसार राज्य या धन का लाभ, युद्ध एवं वाद-विवाद में विजय, सुवर्ण, रत्न और सवारियों से सुख होता है।

स्मरण रहे–

उच्चांशमुक्तस्य महीसुतस्य पाके प्रयत्नात् खलु कार्यसिद्धिः।
शस्त्राद्भवेच्छ्वापदतोऽपि भीतिः संतोषजल्पत्वमहाप्रयासाः।।

अगर मकर में मंगल 28 अंश से आगे बढ़ गया हो तो अधिक प्रयत्न करने पर ही कार्यों की सिद्धि होती है। शस्त्र और हिंसक जन्तुओं से सदैव भय रहता है। संतोष, विवाद एवं प्रयास करने का सुअवसर प्राप्त होता है।

कुंभ राशि में मंगल

आचारहीनश्च सुतादि चिन्ता बहुव्ययोद्वेगसमाकुलत्वम्।
कुम्भोपयातस्य च मंगलस्थ स्यात्पाककाले फलमेतदेव।।

कुंभ राशि में मंगल की दशा में अधिक व्यय, उद्वेग, आकुलता, आचार-विचार की हानि और संतानादि की चिंता होती है।






मीन राशि में मंगल

व्यसनतां खलतामदयालुतां विकलतां चलनं चं निजालयात्।
क्षितिसुतस्तिमिना सुसमंवितो विमतिनामतिनाशनमादिशेत्।।

मीन राशि के मंगल की दशा में जातक व्यसनी, दुष्ट हृदय, दयाहीन, बेचैन, विकल, अपने स्थान से दूर रहने वाला और निर्बुद्धि जनों के साथ से नष्ट बुद्धि वाला होता है।

वर्गोत्तमांशगत मंगल

संग्रामसम्प्राप्तजयाधिशाली बलान्वितोअत्यन्तगुणाभिरामः।
वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य पाके च नानाविधवस्तुलब्धिः।।

नवमांशगत मंगल की दशा में विजय और बल की प्राप्ति होती है। गुणों की वृद्धि एवं अनेक प्रकार के भौतिक पदार्थों का लाभ होता है।

नीचांशस्थ मंगल

नीचांशसंस्थस्य कुजस्य पाके वृथाटनत्वं मनसो विषादः।
फलोन्मुखं कार्यमतीव दूरे नीचत्वमुच्चैर्विगताधिकत्वम्।।

नीच नवांशस्थ मंगल की दशा में व्यर्थ भ्रमण, मानसिक चिंता, कार्यों में विफलता तथा नीच लोगों की संगति से मान-प्रतिष्ठा की हानि होती है।

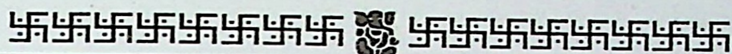
मूलत्रिकोणगत मंगल

मूलत्रिकोणोच्चगृहस्थितस्य कुजस्य कर्माधिगतस्य पाके।
राज्योपलब्धिर्विजयो रिपुभ्यः सद्वाहनालंकरणानि नूनम्।।

मूलत्रिकोण स्थित तथा दशम भावगत मंगल की दशा में राज्य का लाभ, शत्रुओं पर विजय और धन-भूषणादि पाने का अवसर प्राप्त होता है।

□□□






3

प्रारम्भ

ज्योतिष विज्ञान वह दर्पण है जो हमारे बाहरी स्वरूप का ही नहीं वरन् भीतरी त्रुटियों को बतलाने में भी सक्षम है।

ज्योतिष न केवल एक सटीक गणित है अपितु एक पवित्र विद्या भी है लेकिन यह भी सत्य है कि इस विद्या के अपयश के लिए वे व्यक्ति दोषी हैं जो इस विद्या को अपनाकर पांडित्य प्रदर्शित करते हैं। अपितु इस विद्या की आड़ में इसका दुरूपयोग करते हुए श्रद्धावान लोगों का लाभ उठाकर अपना स्थार्थ सिद्ध करते हैं। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। विद्वान ज्योतिषी मनुष्य के जीवन में घटने वाली समस्त स्थितियों, घटनाओं एवं संभावनाओं के रहस्यों व आयामों को ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से सफलतापूर्वक उद्घाटित कर सकते हैं। गति ही ब्राह्माण्ड का सबसे बड़ा सत्य है। गति व समय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ज्योतिष शास्त्र इसी का गणित है और गणना ही नहीं, उसका फलादेश भी करता है। इसीलिए इसे वेदों का नेत्र भी कहा गया है। जन्मपत्रिका जातक के जन्म के समय का वह चित्र है जो जातक का पूरा ब्यौरा देता है। आधुनिक समय में जन्मपत्रिका मिलान का चलन अपनी गति पकड़ता जा रहा है। यह एक शुभ लक्षण है।

जातक के शरीर में सभी नौ ग्रह अपने-अपने स्थान पर निवास करते हैं और रक्तप्रवाह के माध्यम से एक-दूसरे का प्रभाव ग्रहण करते हैं। इसलिए अगर हम अपने शरीर कौ स्वस्थ रखेंगे तो सभी







ग्रह शांत और सहयोगी होंगे—और जैसा कि सभी जानते हैं, स्वस्थ शरीर हमें अध्यात्म की ओर बढ़ने में सहयोग करता है।

आज तक जातक से सम्बन्धित जितनी बातें जानी अथवा प्रतिभासित हुई हैं, कि प्रत्येक वस्तु या घटना का नियामक समय है। जन्म के प्रारम्भिक क्षण से जन्मपत्र द्वारा सारे जीवन का फल, दशा प्रवेश के समय के विचार से दशा के सम्पूर्ण फल में तारतम्य, दिन प्रवेश के समय के काल-वर्गीकरण से पूरे दिन का विचार आदि किए जाने की हमारी भारतीय परम्परा किसी-न-किसी रूप में उपस्थित रही है। कार्य व उसका क्षणयोग—ये दो बातें ज्योतिष का आधार हैं। इसीलिए अरब देशों के विद्वानों द्वारा अपनायी गयी "ताजिक" पद्धति को भारतीयों ने खुले हृदय से अपनाया है। योग का साधारण अर्थ है जोड़, परन्तु जन्मपत्रिका विचार में योग का अर्थ है—ग्रहों की परस्पर शुभाशुभ स्थितियां। शुभ योगों से जन्मपत्रिका सबल हो जाती है और अशुभ योगों से निर्बल। ग्रहों की परस्पर शुभ स्थितियों से शुभ फलदायक योग बनते हैं, जिनको भिन्न-भिन्न नाम दिए गए हैं; जैसे रूचक योग और हंस योग, जिनके द्वारा जातक को सम्मान और समृद्धि प्राप्त होती है। अत्यन्त शुभ योगों को महाभाग्य योग जैसे नाम दिए गए हैं। अगर जन्मपत्रिका में अशुभ योग उपस्थित हों तो जातक के धन का नाश होता है। ज्योतिष के ग्रन्थों में हजारों योगों का वर्णन है। यहां कुछ शुभ और अशुभ योगों के सम्बन्ध में बतलाऊंगा!

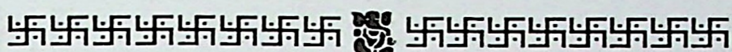
बैंकिंग सेवा योग

बैंक अधिकारी अथवा कर्मचारी बनने के प्रमुख योग निम्न प्रकार हैं—

- कुंडली का द्वितीय भाव धन भाव कहलाता है और दशम भाव आजीविका से संबंधित है। अतः द्वितीयेश बली होकर दशम भाव से संबंध करे तो जातक बैंकिंग क्षेत्र में नौकरी पाता है।
- धन प्रदायक गुरु बृहस्पति का दशम या लग्न से संबंध, बैंक सम्बंधी आजीविका देता है।
- शुक्र व शनि का परस्पर संबंध, कालपुरुष का धनेश व दशमेश होने से बैंक अधिकारी बनाता है।









- दशम भाव व दशमेश पर गुरु की दृष्टि अथवा बुध व गुरु का राशि परिवर्तन योग जातक को बैंक में आजीविका प्रदान करता है।

कब कार्यसिद्धि होगी?

जब यह बात ज्ञात करने की आवश्यकता हो कि अमुक कार्य होगा या नहीं, तो उस समय घड़ी देखकर लग्न निकाल लें। उसके पश्चात् उस दिन की प्रश्न कुण्डली बनाते हैं। इस प्रकार से पूछे जाने वाले प्रश्नों के विषय में उत्तर दे सकते हैं। प्रत्येक भाव के स्थिर कारक होते हैं, दूसरे प्रश्न समय जो राशि उस राशि के स्वामी को भी देखना चाहिए कि कहां बैठा है? किसके साथ संबंध हैं? किस ग्रह की दृष्टि रख रहा है, दृष्टि देने वाला ग्रह कैसा है,? उसका संबंध किसके साथ है? उपर्युक्त सभी बातों की परीक्षा करके प्रश्न का उत्तर देना चाहिए। निम्नलिखित योग होने से कार्य अवश्य सिद्ध होता है।

लग्नेश और कार्येश दोनों ही कार्य भाव में हों। लग्नेश और कार्येश में स्थान परिवर्तन हो। लग्नेश या कार्येश अपने उच्च स्थान अथवा मित्रराशि में हों तो कार्य सिद्ध होता है।

कार्यसिद्धि का समय

प्रश्न कुण्डली में जो ग्रह उस ग्रह के अनुसार सफलता का समय इस प्रकार है—

ग्रह	समय
सूर्य	6 माह
सौम्य चन्द्रमा	तत्काल
कुमार बुध	2 माह
शुक्र	15 दिन
सेनापति मंगल	1 दिन
गुरु बृहस्पति	1 माह
क्रूर शनि	1 वर्ष
छायाग्रह राहु एवं केतु	तत्काल 7 दिन







कार्यसिद्धि कितने माह, दिन या वर्ष में होगी, इसके लिए लग्न के उदित अंश को देखना भी आवश्यक है।

आइए अब कुछ और दैनिक जीवन में उपयोगी योगों पर भी दृष्टि डालें–

मिले-जुले रोगों को जानें!

सूर्य प्रकाश की खान है अतः इसका सम्बन्ध नेत्रों से है। जब सूर्य नीच का अथवा शत्रु के प्रभाव से आता है तो नेत्रों पर प्रभाव पड़ता है। अगर ऐसा सूर्य चतुर्थ भाव में आता है तो हृदय रोग को जन्म देता है, पंचम में सन्तान-पीड़ा और शूल रोग उत्पन्न करता है। जब सूर्य का सम्बन्ध मंगल, केतु, लग्न, पंचमेश एवं नवमेश के साथ होता है तो वह अग्निकाण्ड जैसी दुर्घटना कराता है। अगर सूर्य शनि के साथ सम्बंध बनाता है तो हड्डी व जोड़ों में दर्द होता है। कभी-कभी हड्डी टूटने की भी सम्भावना रहती है। केतु और सूर्य के प्रभाव से प्रायः हड्डी टूट जाती है और उसमें नकली हड्डी के जोड़ लगते हैं। सूर्य से गर्भपात भी होता है और मृत्यु भी होती है।

बांझ योग

कन्या के अन्य सभी दोष किसी-न-किसी रूप में किसी सीमा तक सहन हो सकते हैं, पर कन्या की सन्तान न हो इस बात को न तो स्वयं कन्या और न ही ससुराल वाले सहन कर सकते हैं। यूं तो सन्तान न होने के अनेक कारण हो सकते हैं, पर मुख्य कारण होता है, अगर सप्तम भाव में शनि, मंगल और राहु पड़े हों और उन पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो सन्तान नहीं होती।

व्यभिचारिणी योग

अगर चतुर्थ भाव या सातवें भाव में मंगल या राहु हो, लग्नाधियति नीचे ग्रहों के साथ हो तो कुलटा योग होता है। अगर सातवें भाव में मंगल हो और उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो भी कुलटा योग होता है। अगर मंगल और शुक्र की दृष्टि हो तो लड़की कामुक चित्र खिंचवाकर धन्धा करती है। अगर नीच के शुक्र







के साथ मंगल पड़ा हो और राहु भी इन ग्रहों पर किसी-न-किसी रूप में दृष्टि डाल रहा हो तो लड़की ब्ल्यू फिल्में बनाकर अपने शरीर का सौदा करती है। केवल शुक्र का सम्बन्ध सातवें भाव से हो तो लड़की शौकीनी में परपुरुष के पास जाती है। अगर सप्तम भाव और सप्तमेश, पंचम भाव और पंचमेश, द्वादश भाव और द्वादशेश का किसी-न-किसी रूप में सम्बन्ध हो तो स्त्री कामुकता के वशीभूत होकर परपुरुष से सम्बन्ध रखती है।

वीर्य में कीटाणु ना होना (NIL SPERM)

यह एक आम बात है। देखने पर तो व्यक्ति स्वस्थ सुन्दर नजर आता है, पर उसका वीर्य शुक्राणुरहित होता है। इसे हम निलशुक्राणु भी कहते हैं। जब शुक्र, सप्तम भाव, सप्तमेश और पंचमेश पर छठे घर के स्वामी का प्रभाव हो तो व्यक्ति सेक्सी तो हो सकता है, मगर उसमें शुक्रकीटों की कमी होती है अथवा वे निर्बल होते हैं।

रूचक योग

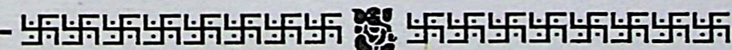
मंगल जन्मपत्रिका में बली होकर केन्द्र में मेष, वृश्चिक या मकर (1, 8 या 10वीं राशि) में हो तो रूचक योग होता है। इसमें जातक को सम्पत्ति, कीर्ति मिलती है। जातक साधना करते हुए सुख पाता है। जातक सुन्दर, सुशील व दीर्घायु होता है। रूचक का अर्थ होता है मनोनुकूल स्थिति।

मालव्य योग

शुक्र बलवान होकर वृषभ, तुला एवं मीन राशि स्थित केन्द्र (2, 7, 12 में) हो तो जातक मालव्य योग से युक्त होता है। ऐसा जातक तेजस्वी, कामी, ऐश्वर्यवान, सुंदर, पुत्रवान, धनवान, चतुर, दीर्घायु होता है। मालव्य का अर्थ है सौभाग्य।

प्रिय मित्रों! ग्रहों का कार्य जातक को अपनी स्थिति और उसके प्रारब्ध के अनुसार शुभ या अशुभ फल देना है। तनिक देखें—

अगर कुमार बुध की शक्ति पीछे हो तो जातक मधुर वाणी बोलेगा। यदि गुरु बृहस्पति की शक्ति पीछे हो तो ज्ञानवर्धक भाषा



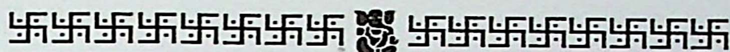




बोलेगा। अगर शुक्र ग्रह की शक्ति पीछे हो तो जातक रोमांटिक बातें करेगा। केतु ग्रह का स्थान हृदय से लेकर कंठ तक होता है। साथ ही केतु ग्रह का संबंध गुप्त वस्तुओं या किसी भी कार्य के रहस्यों से भी होता है।

यहां मैंने कुछ महत्वपूर्ण योग प्रस्तुत किए हैं। उपाय अथवा समाधान के पक्ष को मैंने जानबूझकर स्पर्श नहीं किया है, कारण; आप उपाय या समाधान तो चाहते हैं, लेकिन साथ ही अपने प्रश्नों के उत्तर विस्तार से भी चाहते हैं। इसके लिए यही उचित होगा कि आप ज्योतिष के विद्वान ज्योतिषियों से सम्पर्क करें। वह ना केवल आपको समाधान देंगे वरन् संतुष्ट भी करेंगे।

❑❑❑





मंगल लग्न फल

किसी जातक के जन्म के समय सौरमण्डल का जो भाग पूर्वी क्षितिज पर हो, वहां जो राशि उदय हो रही है, उसे ही लग्न की राशि कहते हैं। जन्मपत्रिका में यह प्रथम भाव होता है। गणना की दृष्टि से भचक्र के 360 अंशों को 30-30 अंशों के 12 भागों में विभक्त किया गया है। सुविधा की दृष्टि से 0 से 30 अंशों के मध्य स्थित तारों के समूह से जिस प्रकार की आकृति की परिकल्पना बनी है उसे उसी नाम से पहचान का नाम देकर सम्बोधित किया गया है। वास्तव में तो राशियां दूरी नापने का पैमाना हैं; जैसे 0 से 30 अंशों के मध्य स्थित तारों से मेष अर्थात् "मेढा" जैसी आकृति दिखाई देने से इस भाग को "मेष" राशि के नाम से कहा जाने लगा। जिसे ज्योतिष में क्रमशः अंक 1 से जाना जाता है। इसके पश्चात् 30 अंश से आगे 60 अंशों तक की दूरी को वृषभ नाम दिया गया। जिसे वृषभ राशि के नाम से जाना जाता है। अतः 30-30 अंशों में विभक्त 12 राशियों के नाम इस प्रकार हैं! इन 12 राशियों में 27 नक्षत्रों को विभाजित किया गया है। प्रत्येक राशि में 2·1/4—2·1/4 (सवा दो) नक्षत्रों को स्थान दिया गया है।

1. मेष, 2. वृषभ, 3. मिथुन, 4. कर्क, 5. सिंह, 6. कन्या, 7. तुला, 8. वृश्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11. कुम्भ, 12. मीन।

मेष राशि में अश्विनी, भरणी, कृत्तिका नक्षत्र का प्रथम पाद आता है। प्रत्येक राशि में भिन्न-भिन्न नक्षत्र होने से जातक के गुण, स्वभाव, आकृति, प्रवृत्ति, कार्य, व्यवसाय सभी भिन्न-भिन्न होते हैं।





ज्योतिष शास्त्र में मेष को प्रथम लग्न कहा गया है। कालपुरुष में मेष लग्न का स्थान सिर है। इस लग्न की आकृति ''मेढा'' जैसी है। इसलिए इस लग्न को मेष राशि के नाम से जाना जाता है। मेष राशि ''चर'' संज्ञक व रात्रिबली है व इसका स्वामी ग्रह ''मंगल'' है। यह अग्नि तत्व-प्रधान राशि होने से इस लग्न में जन्मा जातक तमोगुण-प्रधान होता है।

सामान्यतः मेष लग्न वाले ये जातक गुणवान, साहसी, मेधावी, परिश्रमी, स्पष्ट वक्ता तथा अपने ही पराक्रम से सफलता पाने वाले होते हैं।

ये जातक एकान्तप्रिय, पित्त-विकार से ग्रस्त व कभी-कभी दुःख-कलह, शास्त्राघात से हानि का योग पाने वाले होते हैं। चुनाव, वाद-विवाद-स्पर्धा, अनावश्यक लड़ाई-झगड़ा आदि में भाग लेने में अग्रणी होते हैं। जिसके कारण कभी-कभी इन्हें बेतरह हानि उठानी पड़ती है। ये जातक प्रायः सफल होते हैं। इन जातकों में कुछ भावुकता के लक्षण भी पाए जाते हैं। प्रायः धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य की ओर लालायित रहते हैं। ये लोग प्रायः भोग के उपासक होते हैं तथा ये सामाजिक बन्धनों को तोड़ने में भी कभी नहीं हिचकते। ये अपने कार्यक्षेत्र में किसी का हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते, इसी कारण से इनके विरोधियों की संख्या बहुत होती है। प्रायः क्रोधी स्वभाव के व भोजन में तेज मिर्च-मसाले व गरम पदार्थ पसन्द करने वाले, तेज चाल व जल्दबाज होते हैं। इन जातकों की पत्नी प्रायः धर्मपरायण, सुंदर, बहुसन्ततिवाली तथा कुछ गर्वित स्वभाववाली होती है। यह केवल लग्नगत सामान्य विशेषताएं हैं। इनके अतिरिक्त लग्न पर प्रभाव डालने वाले ग्रह तथा लग्नेश मंगल की राशि व भावगत स्थिति से अनेक प्रकार के फलों में शुभाशुभ परिवर्तन आते हैं। अतः फल प्रतिपादन में उन स्थितियों को भी दृष्टि में रखना आवश्यक है।

आइए अब इन पर क्रमवार विचार करते हैं!



मेष लग्न में मंगल

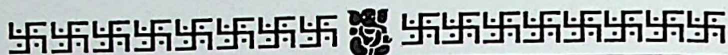
प्रथम भाव—शरीर स्थान में स्वयं की राशि पर बैठे हुए मंगल के प्रभाव से जातक का शरीर

स्वस्थ रहता है। उसमें आत्मबल अत्यधिक मात्रा में होता है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने से जातक प्रायः रोगों से ग्रस्त हो जाता है। मंगल की ऐसी स्थिति के कारण जातक माता के सुख, घर, भवन आदि के संबंध में परेशानियां उठाता है। जातक को व्यवसाय एवं पत्नी के पक्ष में भी परेशानियां उठानी पड़ती हैं। अष्टम आयु स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखने पर जातक लंबी आयु प्राप्त करता है तथा लाभ भी प्राप्त करता है।

द्वितीय भाव—धन एवं कुटुम्ब के भवन में मंगल अगर शुक्र की राशि पर स्थित हो तो उसके प्रभाव से जातक धन-संचय में कमी तथा कष्टों को प्राप्त करता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से विद्या, बुद्धि के पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना होगा तथा संतान के पक्ष में भी कष्टों का सामना करना होगा। सातवीं दृष्टि से आयु भाव को देखने से जातक को दीर्घायु प्राप्त होती है तथा लाभ भी प्राप्त होगा। आठवीं मित्र दृष्टि से भाग्य के स्थान को भी देखता है अतः जातक के भाग्य भवन में रुकावटें उत्पन्न होंगी।

तृतीय भाव—पराक्रम के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक विशेष साहस और पराक्रम की प्राप्ति करता है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने से भाई-बहन का सुख नहीं मिल पाता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से शत्रु के भाव को देखता है, अतः जातक को अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिए विशेष हिम्मत प्राप्त होती है तथा वह उन पर अपना प्रभाव भी रखता है। आठवीं उच्चदृष्टि माता-पिता एवं राज्य के भवन को देखता है अतः जातक को पिता से लाभ तथा सम्मान प्राप्त होगा।

चतुर्थ भाव—माता, सुख तथा भूमि के भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को माता का सुख पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाता। इसी प्रकार भूमि, भवन तथा पारिवारिक-सुखों में भी कमी आती है। चौथी दृष्टि से स्त्री के घर को देखने से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में क्लेश का सामना करना पड़ता है। परन्तु सातवीं उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य के दशम भाव को देखने से जातक को पिता द्वारा लाभ तथा राज्य द्वारा सम्मान तथा सुख की प्राप्ति होती होती है। आठवीं शत्रु


दृष्टि से मंगल लाभ भवन को देखता है अतः लाभ की प्राप्ति के लिए जातक को विशेष परिश्रम करना होगा।

पंचम भाव–पांचवें त्रिकोण एवं विद्या के भवन में मित्र सूर्य की राशि पर बैठे हुए मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा संतान के पक्ष में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी दृष्टि से आयु भाव को वृश्चिक राशि में देखता है, अतः जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा तथा उसे लाभ भी होगा। सातवीं मित्रदृष्टि से लाभ भवन को देखता है अतः लाभ की प्राप्ति कुछ परेशानियों के साथ होगी। आठवीं मित्र-दृष्टि से बारहवें व्यय स्थान को देखने से जातक का व्यय अधिक रहेगा, परन्तु संबंधों से लाभ प्राप्त होगा।

षष्ठ भाव–शत्रु तथा रोग भाव में बुध की राशि पर मंगल बैठा हो तो जातक अपने शत्रुओं पर प्रभाव स्थापित करता है तथा साहसी बना रहता है। मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से भाग्य भवन को देखता है अतः जातक को भाग्य के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल सातवीं मित्र-दृष्टि से व्यय-भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ प्राप्त करता है। आठवीं दृष्टि से अपनी राशि को देखता है अतः जातक का शरीर स्वस्थ रहेगा तथा प्रभाव प्रबल बना रहेगा।

सप्तम भाव–केन्द्र एवं स्त्री भाव में मंगल की स्थिति होने पर जातक को स्त्री पक्ष से सुख की प्राप्ति नहीं होगी तथा व्यवसाय में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मंगल चौथी दृष्टि से राज्य स्थान को देखता है अतः पिता द्वारा सुख प्राप्त होगा एवं राज्य द्वारा सम्मान, यश की प्राप्ति होगी। सातवीं दृष्टि से शरीर भवन को देखने से जातक का शरीर स्वस्थ रहेगा तथा वह प्रभावशाली तथा यशस्वी बनेगा। आठवीं दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए प्रयत्न करना पड़ता है।

अष्टम भाव–मृत्यु भाव में स्वक्षेत्री मंगल की स्थिति के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पैतृक लाभ भी प्राप्त होता है, परन्तु शरीर भाव का स्वामी होकर अष्टम भवन में बैठा है इस







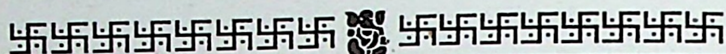
कारण शारीरिक सौंदर्य में कमी आती है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से लाभ भवन को देखता है, अतः आय के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए जातक को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु की राशि में धन एवं कुटुम्ब स्थान को देखने से जातक को धन एवं कुटुम्ब के क्षेत्र में असन्तोष बना रहेगा। आठवीं मित्रदृष्टि से पराक्रम स्थान को देखता है अतः पराक्रम अधिक होगा, परन्तु अष्टमेश होने से भाई-बहन का सुख कमी के साथ मिलेगा।

नवम भाव—त्रिकोण एवं भाग्य भाव में मंगल के प्रभाव से जातक को अच्छे भाग्य की प्राप्ति होती है, परन्तु अष्टमेश होने से जातक को कुछ असन्तोष रहता है तथा कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से व्यय भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से संबंध भी बनेंगे। सातवीं मित्रदृष्टि से पराक्रम के द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होगी परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई बहन के सुख में कमी रहेगी। आठवीं नीच दृष्टि से माता तथा भूमि के चतुर्थ भाव को देखता है अतः माता के सुख, भूमि, भवन आदि के विषय में कमी बनी रहेगी।

दशम भाव—केन्द्र स्थान तथा राज्य और पिता के भवन में मंगल शत्रु शनि की राशि पर उच्च होकर बैठा है, इसके प्रभाव से जातक का अपने पिता के साथ झगड़ा रहता है, परन्तु फिर भी जातक उन्नति करेगा और उसे सम्मान की प्राप्ति भी होती रहेगी। मंगल चौथी दृष्टि से स्वक्षेत्र में शरीर भाव को देखता है अतः शारीरिक प्रभाव में उन्नति होगी.। सातवीं नीच दृष्टि से माता तथा भूमि के चौथे स्थान को देखता है अतः जातक को माता व भूमि का सुख कम ही प्राप्त होगा। आठवीं मित्र दृष्टि से विद्या तथा संतान भवन को देखता है अतः विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलेगी।

एकादश भाव—लाभ भवन में मित्र शनि की राशि पर बैठे हुए मंगल के प्रभाव से जातक आय के साधनों में सफलता प्राप्त करता रहेगा, परन्तु अष्टमेश का दोष होने के कारण जातक को आय के क्षेत्र में कठिनाइयां आएंगी। मंगल चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय भाव को शत्रु शुक्र की राशि में देखता है अतः




धन तथा कुटुम्ब से संतोष प्राप्त नहीं होगा। सातवीं मित्रदृष्टि से विद्या और संतान भाव को देखता है अतः संतान तथा विद्या के पक्ष में भी कुछ कमी बनी रहेगी। आठवीं मित्रदृष्टि से शत्रु भवन को देखता है अतः जातक अपने शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करेगा तथा अत्यंत साहसी भी होगा।

द्वादश भाव–व्यय भवन में मित्र गुरु की राशि पर बैठे हुए मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है, बाहरी स्थानों में घूमने वाला होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी को प्राप्त करता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पराक्रम भवन को देखता है अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु मंगल के अष्टमेश होने के कारण जातक को भाई-बहिन के सुख में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को देखने से जातक शत्रु पक्ष में प्रबल बना रहेगा आठवीं दृष्टि से स्त्री भवन को देखता है अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा विशेष परिश्रम के पश्चात् ही सफलता मिलेगी।



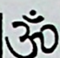
वृषभ लग्न में मंगल

प्रथम भाव–केन्द्र तथा शरीर स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे संबंध होते हैं। परन्तु मंगल के व्ययेश होने से धातु-क्षीणता, रक्त-विकार, निर्बलता आदि की शिकायत भी रहती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से माता एवं भूमि के भवन को देखता है अतः जातक को माता एवं भूमि के सुख में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से केन्द्र भाव को स्वक्षेत्र में देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं विरासत संबंधी कठिनाइयां तथा हानियां उत्पन्न होती रहती हैं।

द्वितीय भाव–धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के संबंध में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। स्त्री के पक्ष में भी







कठिनाइयां आती रहती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ की प्राप्ति होती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है अतः विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है अतः आयु के विषय में जातक को हानि उठानी पड़ती है तथा वह चिन्ताओं से घिरा रहता है। आठवीं उच्च दृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती रहती है।

तृतीय भाव—पराक्रम एवं भाई के भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पराक्रम तथा भाई-बहन के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। स्त्री के पक्ष में भी हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी शत्रु दृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक के जितने भी शत्रु होते हैं वे नष्ट हो जाते हैं। सातवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। आठवीं शत्रु दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता के पक्ष से परेशानी तथा राज्य के पक्ष से हानि उठानी पड़ती है। जातक की मान-प्रतिष्ठा एवं उन्नति के मार्ग में भी रुकावटें आती रहती हैं।

चतुर्थ भाव—केन्द्र, माता तथा सुख-स्थान में मित्र सूर्य की राशि में बैठे हुए व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को माता का सुख नहीं मिलता है तथा भूमि और भवन आदि के विषय में हानि प्राप्त होती है। पारिवारिक सुख जातक को नहीं मिलता है। मंगल चौथी दृष्टि से सप्तम भाव को स्वक्षेत्र में देखता है, अतः जातक पत्नी से परेशान रहता है। व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों में उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता का सुख नहीं मिलता तथा राज्य के पक्ष में हानि होती है। आठवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को देखने के कारण जातक की आय के साधनों में वृद्धि होती है, परन्तु बाहरी स्थानों के संबंध से विलम्ब से लाभ मिलता है।

पंचम भाव—त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में बुध की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या के क्षेत्र में हानि होती है तथा संतान के पक्ष से सदैव चिन्ता बनी रहती है। मंगल के व्ययेश होने के कारण स्त्री से संतोष की प्राप्ति नहीं होती तथा





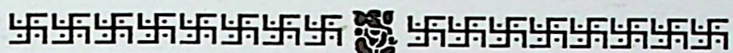
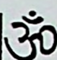
व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता तो प्राप्त होती है परन्तु कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है अतः जातक को आयु के विषय में हानि की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः बाहरी संबंधों से जातक को लाभ की प्राप्ति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से जातक का व्यय अधिक होता है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में वृद्धि होती है।

षष्ठ भाव–शत्रु तथा रोग भवन में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है परन्तु मंगल के व्ययेश होने के कारण जातक को पत्नी की ओर चिन्ता बनी रहती है। मंगल चौथी उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक धर्म का पालन करता है तथा भाग्य की वृद्धि भी करता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का व्यय अधिक रहता है , परन्तु बाहरी संबंधों से शक्ति की प्राप्ति होगी। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक का शरीर अस्वस्थ रहेगा। रक्तविकार के दोष होने के भी योग बनेंगे।

सप्तम भाव–केन्द्र, स्त्री के भवन में स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु मंगल के व्ययेश होने के कारण जातक को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जातक का व्यय अधिक होगा, परन्तु बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ प्राप्त होगा। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता के सुख का अभाव रहेगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक का शरीर अस्वस्थ रहेगा। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन व कुटुम्ब के क्षेत्र में चिन्ता, कठिनाइयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

अष्टम भाव–आयु के भवन में मंगल की राशि में स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री से कष्टों का सामना करना पड़ता है। जातक को परदेश में धनोपार्जन के लिए जाना पड़ता है तथा हानियां भी उठानी पड़ती हैं। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः विदेश से प्राप्त धन का लाभ होगा। सातवीं



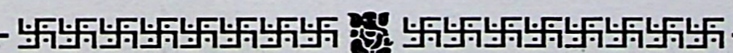
शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन एवं कुटुम्ब के क्षेत्र में कष्टों का सामना करना पड़ता है। आठवीं नीच दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में कमी रहेगी।

नवम भाव–त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में शत्रु शनि की राशि में स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री से लाभ प्राप्त होता है तथा भाग्य की उन्नति होती है, धर्म का पालन करता है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का व्यय अधिक रहेगा तथा बाहरी संबंधों से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं नीच दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन के सुख में कमी रहेगी। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा घरेलू सुख में भी कुछ कमी बनी रहेगी क्योंकि मंगल दोषी है।

दशम भाव–केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में शत्रु शनि की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता से परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। स्त्री पर प्रभाव तो बना रहेगा, परन्तु कुछ कटुता भी बनी रहेगी। बाहरी संबंधों से उन्नति होगी। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में निर्बलता रहेगी तथा रोग से भी ग्रस्त होगा। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि तथा घरेलू सुख में कमी अनुभव होगी। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से संतान पक्ष से कुछ परेशानी रहेगी।

एकादश भाव–लाभ भवन में मित्र गुरु की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आय में वृद्धि होती है तथा स्त्री से लाभ प्राप्त होता है। बाहरी संबंधों से उन्नति होती है परंतु मंगल के व्ययेश होने के कारण स्त्री तथा आय के पक्ष में पर्याप्त संतोष प्राप्त नहीं होता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः धन एवं कुटुम्ब के पक्ष में कुछ हानि तथा परेशानी प्राप्त होगी। सातवीं शत्रु दुष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या तथा संतान पक्ष निर्बल रहेगा। आठवीं समदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बना रहेगा।

द्वादश भाव–व्यय भाव में स्वराशि में स्थित मंगल के प्रभाव






से जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से शक्ति प्राप्त होती है। परंतु मंगल के स्त्री भाव के अधिपति होने तथा व्ययेश होकर स्वक्षेत्र में बैठने के कारण व्यवसाय में सामान्य सफलता की प्राप्ति होती है। मंगल चौथी नीच दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को पराक्रम तथा भाई-बहन के सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। सातवीं दृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक का शत्रु पक्ष में प्रभाव बना रहेगा। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानिकारक होने पर भी कुछ शक्ति देता रहेगा।



मिथुन लग्न में मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र एवं शरीर भाव में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक श्रम द्वारा धन का यथेष्ट लाभ प्राप्त होता है तथा शत्रु पक्ष पर भी विजय प्राप्त होती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है अतः माता से लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है अतः जातक को रोगों का शिकार होना पड़ता है तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जातक को परिश्रम द्वारा व्यवसाय में लाभ होता है। आठवीं उच्च दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक क्रोधी, परिश्रमी, झगड़ालू तथा लाभ कमाने वाला होता है।

द्वितीय भाव—धन-कुटुम्ब के भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि में स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा शत्रुओं द्वारा उत्पन्न झगड़ों में भी हानि उठानी पड़ती है। धन-हानि के कार्य जुए-सट्टे के द्वारा भी हो सकते हैं। मंगल चौथी दृष्टि से पंचम भाव को देखता है अतः जातक को संतान के पक्ष में कुछ कष्ट होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में जातक गुप्त-युक्तियों द्वारा लाभ प्राप्त करता है। सातवीं उच्च दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक की भाग्योन्नति कठिनाइयों के साथ होती है।



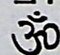



तृतीय भाव–पराक्रम एवं भाई के भवन में मित्र सूर्य की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहन का सुख तथा सहयोग तो मिलता है परन्तु उसे कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है। मंगल चौथी दृष्टि से षष्ठ भाव को स्वराशि में देखता है, अतः जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और लाभ भी प्राप्त करता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखत है, अतः जातक को भाग्य तथा धन के पक्ष में लाभ की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से जातक को पिता तथा राज्य से धन, सम्मान, यश एवं प्रभाव में वृद्धि प्राप्त होती है और जातक धन कमाने में सफलता प्राप्त करता है।

चतुर्थ भाव–केन्द्र, माता, भूमि के भवन में अपने बुध की राशि पर बैठे हुए मंगल के प्रभाव से जातक को माता से लाभ की प्राप्ति होती है तथा भूमि आदि का सुख प्राप्त करने के लिए परेशानियों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को व्यवसाय से कुछ झंझट के साथ लाभ प्राप्त होता है।

पंचम भाव–त्रिकोण एवं विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को संतान पक्ष से कुछ वैमनस्य के साथ लाभ होता है तथा विद्या की प्राप्ति कठिन परिश्रम द्वारा होती है। मंगल चौथी उच्च दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने के कारण जातक गुप्त युक्तियों और परिश्रम द्वारा लाभ कमाता है। आठवीं दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है। ऐसे जातक पेट संबंधी रोगों से ग्रस्त रहते हैं। ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

षष्ठ भाव–शत्रु एवं रोग भाव में स्वराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव बनाए रखता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आय में भी वृद्धि करता है। जातक को झगड़े-झंझटों से लाभ होता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से नवम भाव



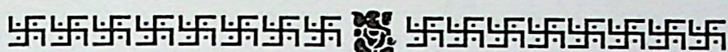
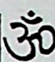



को देखता है अतः जातक के भाग्य में कुछ कमी तथा असन्तोष रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से जातक का व्यय अधिक रहता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक परिश्रमी होता है।

सप्तम भाव–केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में मित्र गुरु की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता तो प्राप्त करता है परन्तु उसे अनेक झंझटों का सामना भी करना पड़ता है तथा स्त्री से भी परेशानियों के साथ लाभ होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता के द्वारा भी कुछ धन, मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है, परन्तु कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है अतः जातक की शारीरिक शक्ति उत्तम होती है, परन्तु वह रक्त-विकार जैसे रोगों से भी ग्रस्त रहता है। आठवीं नीच दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक को धन की कमी अनुभव होती रहती है, जिससे दुःख की अनुभूति होती रहती है।

अष्टम भाव–आयु के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठे हुए उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि की प्राप्ति होती है। शत्रु पक्ष में भी सफलता मिलती है परन्तु कुछ परेशानियां उठानी पड़ती हैं। मंगल चौथी दृष्टि से स्वयं की राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को धन का लाभ होता है और विदेश से भी आय होती है। सातवीं नीच दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन के क्षेत्र में कमी तथा कुटुम्ब से क्लेश रहता है। आठवीं दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के पक्ष से लाभ होता है।

नवम भाव–त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में शत्रु शनि की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की परिश्रम एवं कठिनाइयों के सांथ भाग्योन्नति होती है। धर्म के पालन में अधिक रुचि नहीं होती है। शत्रु पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। मंगल चौथी दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक

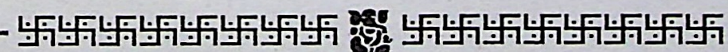




के पराक्रम में वृद्धि होती रहती है। तथा भाई-बहनों से सुख प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से जातक को सफलता प्राप्त होती है परन्तु कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है।

दशम भाव—केन्द्र तथा पिता के भाव में मित्र गुरु बृहस्पति की मीन राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को परिश्रम द्वारा पिता से लाभ की प्राप्ति होती है। शत्रु पक्ष में भी जातक का प्रभाव बना रहता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक की शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा कभी-कभी साधारण रोगों से ग्रस्त होता है। सातवीं दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक को माता के सुख में सफलता प्राप्त होती है। आठवीं मित्र दृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक को संतान पक्ष से वैमनस्ययुक्त लाभ होता है। ऐसे जातक की आय उत्तम होती है।

एकादश भाव—लाभ भवन में मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का पर्याप्त लाभ होता है। परंतु मंगल के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण जातक को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी नीच दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक को धन की कमी होती है। कुटुम्ब के पक्ष से पर्याप्त सुख नहीं मिलता है। सातवीं दृष्टि से पंचम भाव को देखता है अतः जातक को संतान पक्ष से लाभ होता है परंतु कुछ परेशानी का सामना करना पड़ता है तथा विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। आठवीं दृष्टि से स्वयं की राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव निरन्तर बनाए रहता है।

द्वादश भाव—व्यय भाव में मित्र शुक्र की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ प्राप्त होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के पक्ष से लाभ होता है परन्तु जातक को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से स्वयं की राशि में षष्ठभाव को देखता है अतः जातक को शत्रुपक्ष से हानि और लाभ








दोनों ही मिलते हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त करता है तथा जातक को स्त्री पक्ष से कुछ परेशानी होती है। ऐसी ग्रहस्थिति वाले जातक को जननेन्द्रिय रोग भी हो सकते हैं।

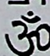
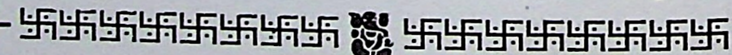


कर्क में लग्न मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र तथा शरीर स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि में स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक के सौन्दर्य में कमी रहती है तथा उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है। जातक को विद्या, संतान, राज्य एवं पिता के पक्ष से पर्याप्त संतोष एवं सुख नहीं मिल पाता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक माता का यथेष्ट सुख प्राप्त करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री से कुछ कठिनाइयों के साथ सुख की प्राप्ति होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से जातक के दैनिक जीवन में कठिनाइयां तो आती हैं, परन्तु वह लाभ भी प्राप्त करता है।

द्वितीय भाव—धन एवं कुटुम्ब के भवन में मित्र सूर्य की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक धन एवं कुटुम्ब का पूरा सुख प्राप्त करता है। उसे पिता द्वारा लाभ की प्राप्ति होती है। मंगल चौथी दृष्टि से पंचम भाव को स्वराशि में देखता है, अतः जातक को संतान एवं विद्या के क्षेत्र में शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से आयु-स्थान को देखता है अतः जातक को आयु में कुछ कमी अनुभव होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक के भाग्य तथा यश की वृद्धि होती है।

तृतीय भाव—पराक्रम भवन में बुध की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के पक्ष से भी शक्ति प्राप्त होती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक शत्रुपक्ष पर अपना प्रभाव बनाए रहता है तथा उन पर विजय भी प्राप्त करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक बुद्धिबल द्वारा भाग्यशाली बनता है तथा धर्म एवं यश की प्राप्ति करता है। आठवीं दृष्टि से


मेष राशि में दशम भाव को देखने के कारण जातक को पिता के पक्ष से सहयोग मिलता है, राज्य के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान प्राप्त होता है।

चतुर्थ भाव–केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख भवन में मित्र शुक्र की तुला राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। उसे विद्या, बुद्धि तथा संतान के पक्ष में सफलता की प्राप्ति भी होती है। मंगल चौथी उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री से सुख प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता पक्ष से सुख तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक को धन का पर्याप्त लाभ मिलता है। ऐसा जातक सफल जीवन बिताता है।

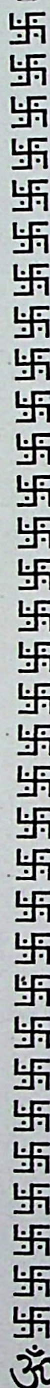
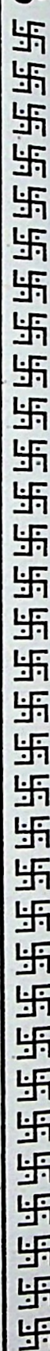
पंचम भाव–त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के सुख की प्राप्ति होती है तथा मान-सम्मान एवं प्रभाव में भी वृद्धि की प्राप्ति होती है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु का लाभ प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को लाभ-प्राप्ति के लिए परिश्रम अधिक करना पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण जातक का व्यय अधिक रहता है तथा यश, धन सफलता प्राप्त करता है।

षष्ठ भाव–शत्रु तथा रोग भाव में मित्र गुरु की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करता है तथा विद्या, बुद्धि एवं संतान का सुख भी प्राप्त करता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक बुद्धि द्वारा उन्नति करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से लाभदायक संबंध बनते हैं। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक-सौन्दर्य, स्वास्थ्य, सुख एवं शान्ति में कमी बनी रहती है।

सप्तम भाव–केन्द्र और स्त्री के भवन में शत्रु शनि की राशि





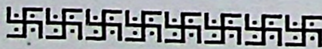



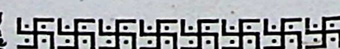
में स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को सुंदर स्त्रियों का संयोग प्राप्त होता है। परन्तु उनसे कुछ मतभेद भी बना रहता है। जातक को व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता भी मिलती है। विद्या, बुद्धि एवं संतान की शक्ति भी प्राप्त होती है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखता है, अतः पिता की शक्ति श्रेष्ठ रहती है तथा इनसे लाभ भी प्राप्त होता है। सातवीं नीच दृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है। घरेलू सुख में भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक की धन-संचय शक्ति प्रबल होती रहती है तथा वाणी में भी विशेष प्रभाव पाया जा सकता है।

अष्टम भाव–आयु के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु के क्षेत्र में लाभ प्राप्त होता है, परन्तु पिता, विद्या, बुद्धि तथा संतान के पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ेगी। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है अतः जातक को परिश्रम द्वारा लाभ की प्राप्ति होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक के धन की अत्यधिक वृद्धि होगी तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होगा। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होगी।

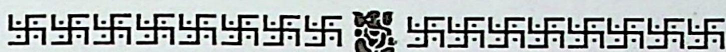
नवम भाव–त्रिकोण एवं भाग्य भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक उन्नति प्राप्त करता है तथा विद्या, बुद्धि, संतान के पक्ष से सुख तथा पिता एवं राज्य से सम्मान प्राप्त करता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ रहेगा। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है अतः जातक को भाई-बहिन का यथेष्ट सुख प्राप्त होगा तथा पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आठवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से जातक को माता के सुख में कुछ असंतोष के साथ सफलता प्राप्त होगी परंतु कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। ऐसा जातक धनी और सुखी होता है।

दशम भाव–केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में मेष राशि








पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सुख, सम्मान, सफलता, यश तथा धन प्राप्त होता है। मंगल चौथी नीच दृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के सौन्दर्य में कुछ कमी तथा दुर्बलता बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है अतः जातक को माता, भूमि, भवन के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती हैं।

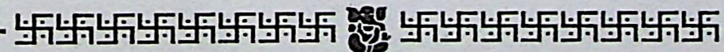
एकादश भाव—लाभ भवन में मित्र शुक्र की वृषभ राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धनवृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। जातक को पिता से लाभ की प्राप्ति होती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं दृष्टि से पंचम भाव को स्वराशि में देखता है अतः जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान की शक्ति प्राप्त होती है जिससे लाभ के साधनों में वृद्धि होती है तथा राज्य के द्वारा सम्मान एवं सफलता प्राप्त होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण जातक का शत्रु पक्ष में प्रभाव बढ़ता रहता है तथा उन पर विजय प्राप्त होती रहती है।

द्वादश भाव—व्यय भाव में बुध की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सफलता प्राप्त होती है। जातक को पिता, संतान, विद्या-बुद्धि एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है। मंगल चौथी मित्रदष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक का शत्रुपक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। आठवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को स्त्री के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परन्तु ऐसे जातक की बुद्धि में कुछ परेशानी बनी रहती है।



सिंह लग्न में मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र एवं शरीर स्थान में मित्र सूर्य की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शरीर से बड़ा प्रभावशाली होता है। वह भाग्यशाली, धर्मात्मा तथा भाग्य पर भरोसा रखने वाला होता है। मंगल चौथी







दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख तो प्राप्त होता है परन्तु उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है।

द्वितीय भाव—धन एवं कुटुम्ब के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहेगी। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है अतः जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में सफलता प्राप्त होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से नवम भाव को स्वराशि में देखने के कारण जातक के भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी तथा प्रतिष्ठित होता है।

तृतीय भाव—सहोदर एवं पराक्रम के भवन में शत्रु शुक्र की तुला राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के पक्ष से पर्याप्त सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है। जातक को माता का पूरा सुख प्राप्त होता है। मंगल चौथी उच्चदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य एवं धन की उन्नति होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सुख, सम्मान एवं उन्नति की प्राप्ति होती है।

चतुर्थ भाव—केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में स्वराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता का पूरा सुख प्राप्त होता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता तो मिलती है परन्तु कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा शक्ति तथा राज्य द्वारा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि







से एकादश भाव को देखने से जातक को आय के पक्ष में सफलता की प्राप्ति होती रहती है।

पंचम भाव–त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को संतान तथा विद्या, बुद्धि के पक्ष में सुख, सफलता एवं यश प्राप्त होता है। उसे माता तथा मातृभूमि से भी स्नेह प्राप्त होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है अतः जातक को आयु की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को लाभ होता है। आठवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से जातक को व्यय के कारण कुछ परेशानी बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों में भी निर्बलता रहती है।

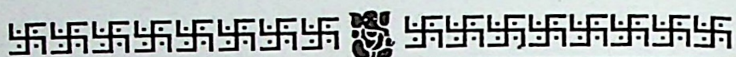
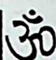
षष्ठ भाव–शत्रु भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में सफलता प्राप्त करता है तथा भाग्य की शक्ति से सुख भी प्राप्त करता है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातकों को व्यय के कारण कुछ परेशानी उठानी पड़ती है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भवन को देखने के कारण जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है।

सप्तम भाव–केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सुख तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है परंतु कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक कुछ मतभेद के साथ पिता द्वारा सुख प्राप्त करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है।

अष्टम भाव–आयु के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक आयु का लाभ प्राप्त करता है। परन्तु भाग्य एवं धन के पक्ष में दुर्बलता आती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है अतः जातक की आयु





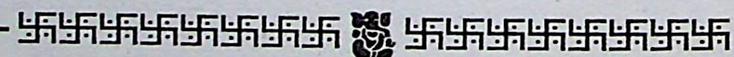



अधिक होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक को भाई-बहिन से सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

नवम भाव–त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में स्वराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। मंगल चौथी नीचदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को धन का अभाव होने के कारण कष्ट की प्राप्ति होती है तथा बाहरी संबंधों से भी परेशानी उठानी पड़ती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सुख कुछ असंतोषयुक्त प्राप्त होता है, परंतु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है।

दशम भाव–केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में शत्रु शुक्र की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा लाभ, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शरीर में प्रभाव रहता है तथा सौभाग्य की वृद्धि होती रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण जातक को संतान पक्ष से सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक मधुरभाषी, विनम्र तथा सज्जन होता है।

एकादश भाव–लाभ भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आय में वृद्धि होती है तथा माता का सुख भी प्राप्त करता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन प्राप्त होता है एवं कुटुम्ब द्वारा सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है अतः जातक को संतान तथा विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं उच्चदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण जातक






को शत्रुओं, रोगों तथा झंझटों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा जातक सुख प्राप्त करने वाला होता है।

द्वादश भाव—व्यय भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को व्यय के विषय में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कष्टों की प्राप्ति होती है। उसे माता के पक्ष से हानि उठानी पड़ती है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि की प्राप्ति होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को स्त्री से सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक धर्म के पक्ष में लापरवाह रहता है।



कन्या लग्न में मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र एवं शरीर भाव में बुध की राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है तथा भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव की देखता है अतः जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है अतः जातक को स्त्री से कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघर्षों से आगे बढ़ता है।

द्वितीय भाव—धन एवं कुटुम्ब के भवन में शत्रु शुक्र की राशि में स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है और वह कठिन पुरुषार्थ भी करता है। अतः जातक विद्या, बुद्धि की उन्नति के लिए प्रयत्न करता है तथा उसे संतान पक्ष से कुछ कष्ट के साथ उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टम भाव को देखता है अतः जातक को आयु खूब प्राप्त होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक के भाग्योन्नति में कुछ असंतोष रहता है।





तृतीय भाव–भाई एवं पराक्रम के भवन में स्वराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन से पर्याप्त सुख प्राप्त नहीं होता है परन्तु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। जातक को आयु का भी यथेष्ट लाभ प्राप्त होता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक का शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक को भाग्योन्नति के मार्ग में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से जातक को पिता से सुख नहीं मिलता तथा कठोर परिश्रम करने पर कम मात्रा में सफलता प्राप्त होती है।

चतुर्थ भाव–केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता का पर्याप्त सुख नहीं मिलता। भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त नहीं होता, परन्तु आयु का यथेष्ट लाभ मिलता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है अतः जातक को स्त्री पक्ष से शान्ति तो मिलती है; परन्तु कुछ परेशानियां उठानी पड़ती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है अतः जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में एकादश भाव को देखने के कारण जातक को लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयों का अनुभव भी होता है।

पंचम भाव–त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में शत्रु शनि की राशि में स्थित अष्टमेश तथा उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को संतान पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है, परंतु परेशानियों का सामना करना पड़ता है, विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में जातक को सफलता की प्राप्ति भी होती है। मंगल चौथी दृष्टि से अपनी राशि में अष्टम भाव को देखता है अतः जातक की शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखता है अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखता है अतः जातक को आय के मार्ग में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से व्ययभाव को देखने के कारण जातक का व्यय अधिक होता है और बाहरी स्थानों से लाभ की प्राप्ति होती है।





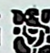
षष्ठ भाव—शत्रु एवं रोग भवन में शत्रु शनि की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। वह पुरुषार्थी तथा परिश्रमी होता है तथा भाई-बहिन से कुछ विरोध की प्राप्ति करता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य में कुछ कमियां आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से संबंध कम ही बनते हैं। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथाम भाव को देखने के कारण जातक का शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है तथा रक्तविकार से ग्रस्त होता है।

सप्तम भाव—केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से कष्ट की प्राप्ति होती है तथा आयु का लाभ प्राप्त होता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है अतः जातक को पुरुषार्थ द्वारा पिता के द्वारा उन्नति प्राप्त होती है, परन्तु कुछ परेशानियां उठानी पड़ती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है अतः जातक को शरीर में कुछ शक्ति एवं हिम्मत प्राप्त होगी, परन्तु कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक को धनसंचय में कुछ कमी का अनुभव होगा।

अष्टम भाव—आयु के भवन में स्वराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु का लाभ प्राप्त होता है तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है। मंगल चौथी नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखता है अतः जातक को आय के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक को धन संचय तथा कुटुम्ब के पक्ष से संतोष की प्राप्ति नहीं होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से जातक को भाई-बहिन के सुख में तथा पराक्रम में कुछ वृद्धि की प्राप्ति होती है।

नवम भाव—त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु जातक की आयु में वृद्धि होती



है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का व्यय अधिक होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखता है अतः जातक को भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है परंतु कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक को माता के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है।

दशम भाव—केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से सुख, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। आयु की शक्ति भी मिलती है परंतु भाई-बहिन के संबंध में कुछ कमी का अनुभव होता रहता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक का शारीरिक स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहता है, परन्तु शक्ति बनी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है अतः जातक को माता का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता रहता है। आठवीं उच्चदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण जातक को संतान पक्ष में भी कुछ कमी के साथ सफलता प्राप्त होती है।

एकादश भाव—लाभ भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि में स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को आय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा आयु के पक्ष में भी कुछ कमी का अनुभव होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से मंगल द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धनसंचय में कमी तथा क्लेश की प्राप्ति होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण जातक को संतान पक्ष से सफलता की प्राप्ति होती है, परंतु उसे कुछ परेशानियां उठानी पड़ती हैं तथा विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति भी प्राप्त होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक का शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा जातक साहसी तथा बहादुर भी होता है।

द्वादश भाव—व्यय भवन में मित्र सूर्य की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से कुछ शक्ति की प्राप्ति होती है। आयु के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़त है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव



को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का सामान्य सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि भी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक शत्रुपक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री से कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा परिश्रम के योग से उन्नति की प्राप्ति होती है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक उदर एवं इन्द्रिय विकारों से ग्रस्त रहता है।



तुला लग्न में मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र एवं शरीर स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख तथा घर में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। मंगल चौथी उच्च दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है अतः जातक को माता का सुख प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री का सुख प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु में वृद्धि होती है, परंतु पेट में विकार रहता है।

द्वितीय भाव—धन-कुटुम्ब के भवन में स्वराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख तो मिलता है, परंतु स्त्री एवं परिवार के पक्ष में संतोष की प्राप्ति नहीं होती है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखता है अतः जातक को संतान पक्ष से बाधायुक्त शक्ति की प्राप्ति होती है। विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति तो होती है परंतु कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है अतः जातक की आयु की शक्ति सामान्य बनी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है।

तृतीय भाव—भाई एवं पराक्रम के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से शक्ति प्राप्त होती है, भाई-बहिन का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, पराक्रम की वृद्धि होती है तथा धन भी खूब प्राप्त होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक शत्रु पक्ष पर विजय




प्राप्त करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक भाग्य के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति प्राप्त करता है। आठवीं नीचदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण जातक के व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति के मार्ग में रुकावटें उत्पन्न होती रहती हैं।

चतुर्थ भाव—केन्द्र, माता तथा भूमि के भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को माता का सुख प्राप्त होता है तथा धन का संचय भी खूब होता है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखता है अतः जातक को स्त्री से सुख तथा व्यवसाय क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। सातवीं नीचदृष्टि से दशम भाव को देखता है। अतः जातक को पिता के सुख में कमी का अनुभव होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से जातक को आय के पक्ष में सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक सुखी रहता है।

पंचम भाव—त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को संतान पक्ष में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। स्त्री में असंतोष बना रहता है तथा कुटुम्ब से भी वैमनस्य ही प्राप्त होता है। व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः आयु के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा कुछ परेशानियों के साथ लाभ भी प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है अतः जातक को खूब लाभ प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सफलता भी प्राप्त होती है।

षष्ठ भाव—शत्रु एवं रोग भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। धन-संचय में कमी का अनुभव होता है तथा स्त्री से सफलता प्राप्त होती है, परन्तु उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य में उन्नति होती है तथा वह स्वार्थ के लिए कार्य का पालन करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ






होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आ जाती है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ की प्राप्ति होती है।

सप्तम भाव—केन्द्र स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में स्वराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री से कुछ बंधन-सा रहता है, परन्तु भोग की अच्छी शक्ति भी प्राप्त होती है तथा व्यवसाय में भी सफलता की प्राप्ति होती है। मंगल चौथी नीच दृष्टि से दशम भाव को देखता है अतः जातक के शरीर में कुछ गर्मी का विकार होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से जातक के धन का संचय होता है तथा उसे सुख की प्राप्ति भी होती है।

अष्टम भाव—आयु तथा पैतृक भवन में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट की प्राप्ति होती है। बाहरी स्थानों पर व्यापार करने से लाभ प्राप्त होता है तथा धन की भी प्राप्ति हाती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को आय का लाभ भी प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक को कुटुम्ब का लाभ परिश्रम द्वारा प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक को भाई-बहिनों का सामान्य लाभ तथा सुख प्राप्त होता है।

नवम भाव—त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। जातक को भाग्यवती स्त्री भी मिलती है, अतः विवाह के पश्चात् उन्नति होती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। आठवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक को माता का सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक सभी प्रकार की उन्नति भी करता है।

दशम भाव—केन्द्र, राज्य तथा पिता के भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता की ओर से कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। स्त्री तथा कुटुम्ब के पक्ष







में भी कमजोरी तथा कष्ट की स्थिति बनी रहती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है अतः जातक के शरीर में कमजोरी बनी रहती है, परन्तु उसे सम्मान भी प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं शत्रु दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण जातक को संतान पक्ष से वैमनस्य तथा विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है।

एकादश भाव—लाभ भवन में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का पर्याप्त लाभ प्राप्त होता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी प्राप्त होता है। धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय से असंतोष एवं हानि के योग बनते हैं। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है अतः जातक को भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक का शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से दूसरे स्थानों के संबंध से व्यवसाय में लाभ प्राप्त होता है परंतु स्त्री से पर्याप्त सुख प्राप्त नहीं होता।

द्वादश भाव—व्यय स्थान में अपने बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है तथा संबंधों से लाभ की प्राप्ति होती है। धन, कुटुम्ब, स्त्री से भी असंतोष के योग उपस्थित होते हैं। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है अतः भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से जातक शत्रुपक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने के कारण दूसरे स्थानों के संबंध से व्यवसाय में लाभ होता है लेकिन स्त्री से अनबन बनी रहती है।



वृश्चिक लग्न में मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र तथा शरीर स्थान में अपनी राशि में स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहता है। उसे शत्रुपक्ष में भी सफलता की प्राप्ति होती है, परन्तु कभी-कभी उसे रोगों से




ग्रस्त भी होना पड़ता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता एवं भवन के सुख में कमी का अनुभव होता है। सातवीं शत्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री पक्ष से सफलता प्राप्त होती है, परन्तु उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आयु में वद्धि होती है।

द्वितीय भाव—धन एवं कुटुम्ब के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा धन की उत्पत्ति करता है तथा उसे कुटुम्ब से सफलता प्राप्त होती है परन्तु उसे कुछ परेशानियां उठानी पड़ती हैं। शारीरिक सुख में कुछ कमी बनी रहती है तथा शत्रुपक्ष पर उसका प्रभाव भी बना रहता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को संतानपक्ष से शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है। आठवीं नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक के भाग्य तथा धर्म की हानि होती है। जातक को यश की कमी का भी अनुभव बार-बार होता है।

तृतीय भाव—भाई एवं पराक्रम के भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य भी बना रहता है। मंगल चौथी दृष्टि से षष्ठ भाव को स्वराशि में देखता है। अतः जातक को शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। सातवीं नीचदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक को भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर अधिक विश्वास होता है तथा वह धर्म का भी पालन नहीं करता है। आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण जातक को पिता पक्ष से सुख तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक व्यवसाय में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है।

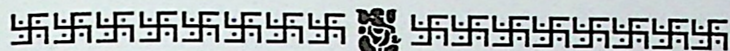
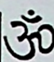
चतुर्थ भाव—केन्द्र, माता, भूमि के भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता एवं भवन के सुख में कमी का अनुभव होता है तथा शारीरिक सुख में भी कमी बनी

रहती है। मंगल चौथी दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है अतः जातक को स्त्रीपक्ष से मतभेदयुक्त शक्ति प्राप्त होती है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश एवं सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक को आय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है।

पंचम भाव–त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है परन्तु उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने के लिए जातक गहरी युक्तियां सोचता रहता है। मंगल चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु में वृद्धि का लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को आय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण जातक का व्ययं अधिक रहने पर जातक को परेशानी होती है तथा बाहरी संबंधों से सामान्य लाभ प्राप्त होता है, परंतु कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

षष्ठ भाव–शत्रु एवं रोग भवन में अपनी राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव बनाए रखता है तथा उन पर विजय भी प्राप्त करता है। मंगल चौथी नीचदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है तथा यश में भी कमी का अनुभव होता है। सातवीं शत्रु दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छे संबंध बनते हैं। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने के कारण जातक के शरीर में कुछ प्रभाव बना रहता है तथा आत्मबल की सामान्य वृद्धि होती है।

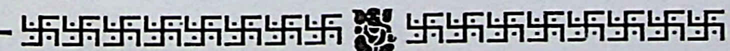
सप्तम भाव–केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री से कुछ परेशानी

रहती है तथा जननेन्द्रिय में विकार रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है अतः जातक को पिता से सुख तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखता है अतः जातक के व्यक्तित्व में वृद्धि होती है तथा शारीरिक शक्ति का विकास होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धनवृद्धि तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक प्रायः सुखी रहता है।

अष्टम भाव–आयु के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख की कमी का अनुभव होता है। आयु के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जातक के पेट में कुछ विकार रहता है तथा शत्रु से भी परेशानी बनी रहती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है। अतः जातक की आय का अच्छा योग बनता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक को धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। आठवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन की शक्ति भी प्राप्त होती है परंतु उनसे कुछ वैमनस्य भी बना रहता है।

नवम भाव–त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य में कुछ कमी का अनुभव होता है। साथ ही शत्रु पक्ष से भी झंझट प्राप्त होते हैं तथा भाग्योन्नति में बाधा उत्पन्न होती है। जातक का व्यय अधिक होता है। बाहरी संबंधों से शक्ति की प्राप्ति होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख भी प्राप्त होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक का माता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा भूमि आदि के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है।



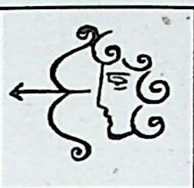



दशम भाव—केन्द्र, पिता और व्यवसाय के भवन में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता से सुख तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है, परंतु जातक को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा शत्रु पर विजय भी प्राप्त करता है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक शक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक स्वस्थ तथा स्वाभिमानी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। परंतु उसमें कुछ कमियां भी आती हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है।

एकादश भाव—लाभ भाव में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ प्राप्त करता है। परंतु उसे शत्रु से परेशानी रहती है तथा शारीरिक रोगों से भी ग्रस्त रहता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुम्ब की शक्ति तथा सुख भी प्राप्त होते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है परंतु उसे कुछ कमी का भी अनुभव होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु पर विजय प्राप्त करता है तथा उसे ननसाल से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा जातक स्वाभिमानी होता है।

द्वादश भाव—व्यय भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से सम्मान की प्राप्ति होती है। स्वास्थ्य भी कुछ ठीक नहीं रहता है। मंगल चौथी उच्च दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी राशि में षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़ों के मामलों में सफलता प्राप्त करता हैं। आठवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को स्त्री से कुछ वैमनस्य रहने पर भी उसका सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति होती है, परंतु उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।





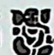
धनु लग्न में मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र एवं शरीर स्थान में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है। वह अपने बुद्धि-बल से बड़े-बड़े कार्यों की सिद्धि करता है। उसे विद्या, संतान एवं बाहरी संबंधों से भी लाभ की प्राप्ति होती है। परंतु व्ययेश मंगल के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आ जाती है तथा अहंकार की मात्रा भी बढ़ती रहती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है अतः माता का सुख तो प्राप्त होता है, परंतु जातक को कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ त्रुटियों के साथ सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं नीचदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से जातक की आयु में कुछ दुर्बलता उत्पन्न होती है।

द्वितीय भाव—धन एवं कुटुम्ब के भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक बुद्धि योग तथा बाहरी स्थानों से संबंधों से धन का संचय करता है तथा कौटुम्बिक सुख में न्यूनाधिकता भी बनी रहती है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु के क्षेत्र में निर्बलता बनी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक को भाग्योन्नति में सफलता की प्राप्ति होती है, परंतु उसे कई कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। व्ययेश मंगल के कारण जातक का जीवन संघर्षपूर्ण बना रहता है।

तृतीय भाव—भाई-बहिन एवं पराक्रम के भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है। विद्या तथा संतान के पक्ष में भी कमी आती है तथा व्यय भी अधिक होता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव स्थापित रखता है तथा झगड़े-झंझटों में सफलता भी प्राप्त करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से




नवम भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है अतः जातक को पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में न्यूनाधिक सफलता की प्राप्ति होती रहती है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षमय रहता है।

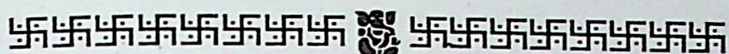
चतुर्थ भाव–केन्द्र, माता एवं भूमि के भाव में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख की विशेष हानि की प्राप्ति होती है तथा भूमि आदि का सुख भी प्रायः नहीं मिल पाता। संतान पक्ष तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कमी का अनुभव होता रहता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री से कुछ परेशानियां झेलनी पड़ती हैं तभी कोई काम बनता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता तो प्राप्त होती है परंतु कुछ कमियों का सामना करना पड़ता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक को आय के क्षेत्र में बुद्धि द्वारा सफलता की प्राप्ति होती है तथा बाहरी संबंधों से भी लाभ की प्राप्ति होती है।

पंचम भाव–त्रिकोण, विद्या एवं संतान के घर में अपनी राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों का सामना करने के पश्चात् सफलता प्राप्त होती है। मंगल चौथी नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु के क्षेत्र में कुछ कमजोरी आ जाती है तथा पेट में विकार रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है अतः जातक को बुद्धि-बल तथा बाहरी संबंधों से आय के क्षेत्र में कुछ सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने के कारण जातक को कुछ मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है, व्यय अधिक रहता है, परन्तु लाभ की प्राप्ति होती है।

षष्ठ भाव–शत्रु एवं रोग भवन में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को अपने शत्रु पर सफलता की प्राप्ति होती है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों में सफलता की प्राप्ति





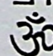
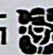



भी होती है परंतु उसे संतान से परेशानी तथा विद्या में कमी का अनुभव होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक को भाग्य एवं धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयां तथा परेशानियां उठानी पड़ती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को व्यय की अधिकता से परेशानी होती है तथा बाहरी संबंधों में भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक के स्वास्थ्य में कुछ कमी का अनुभव होता है तथा मस्तिष्क में तनाव बना रहता है।

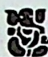
सप्तम भाव—केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में बुध की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री से कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों से संबंध अच्छे रहते हैं तथा जातक अपना व्यय बुद्धिबल से चलाता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है परंतु उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है अतः जातक का शारीरिक स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहता। आठवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक के धन संचय में कुछ उन्नति होती है तथा कुटुम्ब का सुख भी सामान्य रूप में अच्छा ही प्राप्त होता है।

अष्टम भाव—आयु के भवन में मित्र चंद्रमा की राशि पर स्थित व्ययेश एवं नीच के मंगल के प्रभाव से जातक की आयु की हानि होती है, पेट में विकार रहता है, चिन्ताएं एवं परेशानियां सदैव घेरे रहती हैं। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखता है अतः जातक कठिन परिश्रम द्वारा आय में वृद्धि करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक धन एवं कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन से विरोध रहता है।

दशम भाव—त्रिकोण भाग्य के भवन में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की कुछ त्रुटिपूर्ण



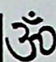


उन्नति होती है। इसी प्रकार विद्या एवं संतान के क्षेत्र में भी सफलता की प्राप्ति होती है परंतु कुछ कमियों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी दृष्टि से अपनी राशि में द्वादश भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के अच्छे संबंधों से व्यय की पूर्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः भाई-बहिनों से विरोध रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक को माता का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है।

दशम भाव—केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में बुध की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को पिता के सुख की हानि होती है, व्ययेश में भी हानि होती रहती है परंतु ऐसा व्यक्ति अपने बुद्धिबल से किसी बाहरी स्थान में काम करके बहुत अधिक सम्मान को प्राप्त करता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक का शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है तथा सौन्दर्य में कमी का अनुभव होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है अतः जातक को माता का सुख प्राप्त होता है परंतु उसमें कुछ कमियां भी होती हैं। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने के कारण जातक को विद्या-बुद्धि का लाभ तो मिलता है परंतु विद्या एवं संतान के सुख में कुछ कठिनाइयों का सामना पड़ता है।

एकादश भाव—लाभ भवन में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को आय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है, उसका व्यय भी अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से कुछ परेशानी के साथ लाभ भी प्राप्त होता है। मंगल चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक धनसंचय के लिए विशेष श्रम करता है तथा कौटुम्बिक सुख का लाभ भी प्राप्त करता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखता है अतः जातक को विद्या एवं संतान पक्ष से लाभ की प्राप्ति होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से जातक का शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों में जातक को लाभ प्राप्त होता है।



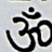
द्वादश भाव—व्यय भवन में अपनी राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है तथा बुद्धि योग द्वारा सफलता की प्राप्ति होती रहती हैं, परंतु संतान पक्ष में हानि एवं विद्या के पक्ष में क़मजोरी बनी रहती हैं। मंगज चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक का भाई बहिनों से वैमनस्य रहता है परंतु पराक्रम में वृद्धि होती रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक का शत्रुओं पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ प्राप्त होता हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को स्त्री से संकट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने बुद्धि-बल द्वारा लाभ प्राप्त करता है।



मकर लग्न में मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र एवं शरीर-स्थान में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। मंगल चौथी दृष्टि से अपनी राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि आदि के श्रेष्ठ सुख की प्राप्ति होती है। उसका रहन सहन अमीरी होता है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र की राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री सुख में कुछ असंतोष रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं। आठवीं मित्र दृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण आयु की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चतुर तथा धनी होता है।

द्वितीय भाव—धन एवं कुटुम्ब के भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ असंतोष के साथ कुटुम्ब और धन का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परंतु माता के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है तथा मकान आदि का लाभ भी प्राप्त होता है। मंगल चौथी शत्रु दृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में उन्नति की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की






आयु में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण जातक के भाग्य में वृद्धि होती है। ऐसा जातक आर्थिक लाभ का अधिक ध्यान रखता है।

तृतीय भाव–भाई-बहिन और पराक्रम के घर में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तभा भाई-बहिनों से शक्ति की प्राप्ति होती है। वह अपने पुरूषार्थ द्वारा आय में वृद्धि करता है तथा माता, का सुख भी प्राप्त करता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पर अपना प्रभाव स्थापित करता है तथा वह बहादुर भी होता है। सातवीं मित्र दृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है, जिसके कारण जातक को यश की प्राप्ति भी होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण जातक को कुछ त्रुटियों के साथ व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है।

चतुर्थ भाव–केन्द्र, माता और भूमि के भाव में अपनी राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता का विशेष सुख प्राप्त होता है। मंगल चौथी नीचदृष्टि से सप्तम भाव को मित्र की राशि में देखता है, अतः जातक को स्त्री सुख में कमी का अनुभव होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से मित्र शुक्र की राशि में दशम भाव को देखता है अतः जातक को पिता के पक्ष से सहयोग, राज्य के क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने के कारण जातक की आय अच्छी रहती है, तथा बड़ी सरलता से लाभ के साधन उपलब्ध होते रहते हैं। ऐसी ग्रहस्थितिवाला जातक सुखी होता है।

पंचम भाव–त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है तथा संतानपक्ष से भी सुख की प्राप्ति होती है, साथ ही माता के सुख का लाभ भी होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है अतः जातक की आयु लंबी होती है तथा लाभ भी प्राप्त होता रहता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में



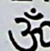
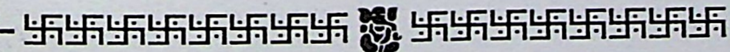


एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आय अच्छी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक का व्यय अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों के संबंध से लाभ की प्राप्ति होती है।

षष्ठ भाव–रोग एवं शत्रु भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर अपना प्रभाव बनाए रखता है तथा झगड़े- झंझटों के मामलों से लाभ उठाता है, माता के सुख में कमी का अनुभव होता है, साथ ही आय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उत्पन्न होती रहती हैं। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है अतः जातक का व्यय अधिक रहता है तथा संबंधों से लाभ प्राप्त होता है। आठवीं उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथम भाव को देखने के कारण जातक के प्रभाव में वृद्धि होती है और उसे समृद्धि की प्राप्ति होती है।

सप्तम भाव–केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा गृहस्थी से सुख प्राप्त करने में बड़ी कमी रहती है। इसी प्रकार व्यवसाय, माता का सुख भी बहुत कमजोर रहता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा सुख प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य-सुख में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक को धनसंचय में कुछ कठिनाइयां आयेंगी तथा कौटुम्बिक सुख सामान्य रूप में प्राप्त होता रहेगा।

अष्टम भाव–आयु के भवन में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु की प्राप्ति होती है, परंतु माता के सुख में कमी आती रहती है तथा आय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं। मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आय खूब अच्छी रहेगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है अतः जातक को धनसंचय में सामान्य त्रुटियों के साथ सफलता प्राप्त होगी तथा कुटुम्ब का





सुख भी प्राप्त होगा। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होगा तथा पराक्रम में वृद्धि होगी।

नवम भाव–त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती रहती है, वह धनी, धर्मात्मा, न्यायी तथा यशस्वी होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक को माता के सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी यशस्वी, विनोदी तथा पराक्रमी होता है।

दशम भाव–केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। राज्य के क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता की प्राप्ति होती है। मंगल चौथी दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। वह स्वाभिमानी तथा बड़प्पन रखने वाला होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में पंचम भाव को देखने के कारण संतान से सुख प्राप्त होता है, विद्या की विशेष वृद्धि होती है।

एकादश भाव–लाभ भवन में अपनी राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक की आय में खूब वृद्धि होती है। उसे माता का सुख भी प्राप्त होता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक को कुछ असंतोष एवं कमी के साथ धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से मित्र शुक्र की राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा संतान का सुख भी प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से जातक का शत्रु पक्ष






पर प्रभाव रहता है और झगड़ों में उसे सफलता की प्राप्ति होती है।

द्वादश भाव–व्यय भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ प्राप्त होता है। उसे माता के सुख में कमी का अनुभव होता है तथा मातृभूमि का वियोग भी सहना पड़ता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है अतः जातक शत्रु पर प्रभाव बनाए रखता है तथा झगड़ों से कोई चिन्ता उत्पन्न नहीं होती है। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि तथा सुख में कमी का अनुभव होता है।



कुम्भ लग्न में मंगल

प्रथम भाव–केन्द्र एवं शरीर स्थान में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य भी प्राप्त होता है। वह पिता के पक्ष में कुछ असंतोषयुक्त सहयोग भी प्राप्त करता है, व्यवसाय में उन्नति होती है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। मंगल चौथी मित्र दृष्टि से शुक्र की राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री से सुख एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है।

द्वितीय भाव–धन एवं कुटुम्ब के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है परंतु उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भाई-बहिन एवं पिता से सुख में कमी का अनुभव होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को बुद्धि एवं संतान पक्ष में सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं से अष्टम भाव को देखता है अतः जातक को आयु में वृद्धि की प्राप्ति होती है। आठवीं समान मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने



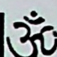


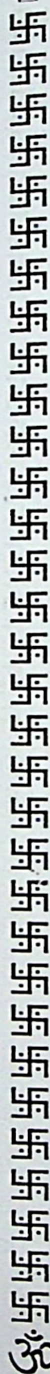
के कारण जातक को भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति प्राप्त होती है तथा यश भी प्राप्त होता है।

तृतीय भाव—भाई-बहिन एवं पराक्रम के भाव में अपनी राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि भी होती है। मंगल चौथी नीचदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है अतः जातक शत्रुपक्ष से परेशान रहता है। तथा ननसाल के पक्ष में भी हानि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के बल पर बहुत भाग्यवान बनता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने के कारण जातक को पिता की शक्ति प्राप्त होती है, व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति की प्राप्ति होती है।

चतुर्थ भाव—केन्द्र, माता, भूमि के भवन में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक कुछ कमी के साथ माता की शक्ति प्राप्त करता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है अतः जातक को पुरुषार्थ द्वारा सफलता की प्राप्ति होती है। सातवीं नीच दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा सुख, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा सहयोग तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक की आय में वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, यशस्वी जीवन बिताता है।

पंचम भाव—त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति की प्राप्ति होती है। तथा संतान से भी सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक भाई बहिन एवं पिता से भी शक्ति प्राप्त कर लेता है तथा व्यवसाय से लाभ उठाता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक को आयु भी प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः जातक को आय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण जातक का व्यय अधिक होता है, परंतु बाहरी संबंधों से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा जातक कानूनी बातें करने वाला होता है।





षष्ठ भाव–रोग एवं शत्रु भवन में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पर सफलता प्राप्त होती है, परंतु कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। भाई-बहिन तथा पिता के पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक कठिन परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा धर्म का भी पालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को शत्रु की राशि में देखता है अतः जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से विशेष संबंध बनते है। आठवीं शत्रु दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी का अनुभव होता है, परंतु प्रभाव में वृद्धि होती है तथा स्वभाव में तेजी रहती है।

सप्तम भाव–केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष उन्नति करता है। उसे भाई-बहिनों की शक्ति भी प्राप्त होती है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सहयोग तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है अतः जातक को शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी का अनुभव होता है, परंतु मान एवं प्रभाव की उन्नति होती रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन तथा कुटुम्ब की शक्ति मिलती है। ऐसा जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

अष्टम भाव–आयु के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल केप्रभाव से जातक को आयु की प्राप्ति होती है, परंतु पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आती है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखता है। अतः जातक की आय अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है अतः जातक को परिश्रम द्वारा धन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने के कारण जातक को भाई-बहिनों से सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है।

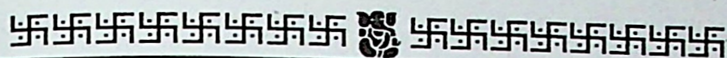




नवम भाव—त्रिकोण, भाग्य के भवन में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी यथाविधि होता है। उसे पिता से सुख तथा व्यवसाय में सफलात भी प्राप्त होती है। मंगल चौथी उच्चदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक का व्यय अधिक होता है। बाहरी संबंधों से शक्ति की प्राप्ति होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य मित्र दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक को माता, का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक भाग्यवान होता है।

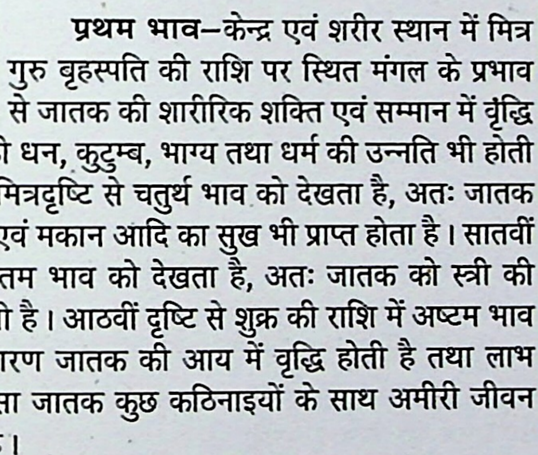
दशम भाव—केन्द्र, पिता राज्य एवं व्यवसाय के भाव में स्वराशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता की शक्ति, एवं व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहने पर भी प्रभाव, स्वाभिमान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है अतः जातक को माता के सुख में सामान्य कमी रहती है तथा मकान आदि की प्राप्ति भी होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण जातक को संतान पक्ष से सुख प्राप्त होता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष वृद्धि होती है।

एकादश भाव—लाभ भाव में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आय में खूब वृद्धि होती है। उसे पिता, एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी विशेष सफलता की प्राप्ति होती है। वह अपने पराक्रम द्वारा खूब धन कमाता है तथा भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त मिलता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक के धन का संचय खूब होता है तथ कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को संतान से शक्ति की प्राप्ति होती है तथा विद्या बुद्धि का लाभ भी होता है। आठवीं नीचदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण जातक को शत्रु पक्ष



से कुछ परेशानी रहती है तथा ननसाल का पक्ष भी कमजोर रहता है।

द्वादश भाव—व्यय भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है, परंतु संबंधों से विशेष लाभ भी प्राप्त होता है। पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। वह अपनी मातृभूमि की अपेक्षा अन्य स्थानों में सफलता प्राप्त करता है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि वमें तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं नीच दृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में षष्ठ भाव को देखता है जातक शत्रु से कुछ परेशान रहता है तथा उसका ननसाल का पक्ष भी दुर्बल रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को स्त्री पक्ष द्वारा दुःख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है।



मीन लग्न में मंगल

प्रथम भाव—केन्द्र एवं शरीर स्थान में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं सम्मान में वृंद्धि होती है। साथ ही धन, कुटुम्ब, भाग्य तथा धर्म की उन्नति भी होती है। मंगल चौथ मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री की शक्ति प्राप्त होती है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टम भाव को देखने के कारण जातक की आय में वृद्धि होती है तथा लाभ भी होता है। ऐसा जातक कुछ कठिनाइयों के साथ अमीरी जीवन व्यतीत करता है।

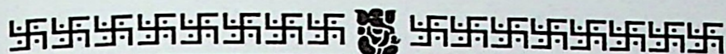
द्वितीय भाव—धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपनी राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक के धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि होती है और वह बड़ा धनवान समझा जाता है। मंगल चौथी नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या एवं संतान के पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा चिंता एवं परेशानी के कारण

बनते रहेंगे। ऐसा जातक कटु शब्दों का प्रयोग भी करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने के कारण जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है।

तृतीय भाव—भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है और उसे भाई-बहिन का सुख भी मिलता है। धन तथा कुटुम्ब की भी उन्नति होती है मंगल चौथी मित्र दृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक का शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों में विजय प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति होती है तथा आठवीं मित्र दृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण जातक को पिता से सुख सहयोग होता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। ऐसा जातक यशस्वी, धर्मात्मा, शत्रुजय तथा भाई-बहिन, कुटुम्ब एवं धन के सुख से सम्पन्न होता है।

चतुर्थ भाव—केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में बुंध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता से सुख मिलता है तथा मकान की शक्ति प्राप्त होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को भाग्यवान तथा सुशील स्त्री प्राप्त होती है व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है। घरेलू सुख भी पूर्ण रूप से मिलता रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा सुख तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होती रहती है। आठवीं उच्चदृष्टि से शत्रु की राशि में एकादश भाव को देखने के कारण जातक को घर बैठे लाभ की प्राप्ति होती रहती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है।

पंचम भाव—त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन मे मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या एवं संतान के पक्ष में कमी का अनुभव होता है तथा धन एवं

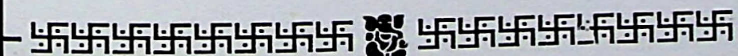
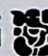





कुटुम्ब की चिंता लगी रहती है। भाग्य निर्बल होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से लाभ भवन को देखता है अतः जातक अपनी आय में वृद्धि हेतु कठिन परिश्रम करता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण जातक को व्यय संबंधित परेशानियां उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी संबंधों से असंतोषपूर्ण सहयोग की प्राप्ति होती है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षपूर्ण होता है।

षष्ठ भाव—शत्रु एवं रोग भवन में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पर प्रभाव बनाए रखता है। धन की कमी होने के बावजूद व्यय शान से चलता है तथा कुटुम्ब से सुख भी प्राप्त होता है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य के उन्नति होती है परंतु कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः जातक को व्यय की परेशानी बनी रहती है तथा बाहरी संबंधों से असंतोष की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक की शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि भी होती है तथा झगड़ों के मामलों में जातक हिम्मत तथा धैर्य से काम लेता है।

सप्तम भाव—केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति होती है। वह भाग्यशाली होता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः जातक को पिता द्वारा सुख तथा व्यवसाय द्वारा सहयोग तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, विशेषकर रोजगार खूब बढ़ता है तथा आय में वृद्धि होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से प्रथम भाव को देखता है अतः जातक के यश प्रतिष्ठा एवं स्वाभिमान में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने के कारण जातकं भाग्य की प्रबल शक्ति द्वारा धन में वृद्धि करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त करता है। ऐसा जातक, धनी, सुखी, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है।

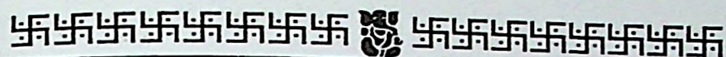
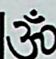



अष्टम भाव—आयु के भवन में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है लाभ प्राप्त होता है, परंतु भाग्य एवं यश के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है। मंगल चौथी उच्च दृष्टि से शत्रु शनि की राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः जातक की आयु खूब होती है तथा जातक अधिक लाभ कमाने का प्रयत्न भी करता रहता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक के धन का संचय परिश्रम द्वारा ही होता है तथा उसे कुटुम्ब का सहयोग भी प्राप्त होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक को भाई बहिन के सुख संतोष की प्राप्ति नहीं होती, परंतु पराक्रम में वृद्धि होती रहती है।

नवम भाव—त्रिकोण भाग्य के भवन में अपनी राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है। ऐसा जातक भाग्यशाली, धनी तथा यशस्वी होता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखता है अतः जातक को व्यय के मामले में संतोष प्राप्त नहीं होता तथा उसे बाहरी संबंधों में भी विशेष रुचि नहीं होती। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है परंतु पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण जातक को माता का सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक भाग्यवान तथा यशस्वी होता है।

दशम भाव—केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में मित्र गुरु बृहस्पति की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सुख तथा व्यवसाय में उन्नति की प्राप्ति होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख भी मिलता रहता है। मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव शक्ति, प्रतिष्ठा, यश एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। सातवीं मित्र दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख की प्राप्ति होती है। आठवीं नीच दृष्टि से मित्र की राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को संतान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है। वाणी में रूखापन तथा मस्तिष्क में कुछ परेशानियां भी रहती हैं।

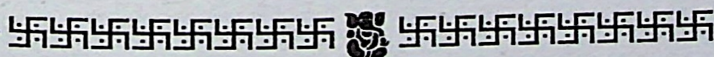


एकादश भाव—लाभ भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आय में वृद्धि की प्राप्ति होती है। वह भाग्यवान होता है तथा धर्म का पालन भी करता है। मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः जातक के धन तथा कुटुम्ब की उन्नति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र चन्द्रमा की राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः जातक को विद्या तथा संतान के पक्ष में कुछ परेशानियों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आठवीं मित्र दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण जातक भाग्य की शक्ति द्वारा शत्रु पर विजय एवं प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता की प्राप्ति करता है। ऐसा जातक हिम्मती, धनवान तथा यशस्वी होता है।

द्वादश भाव—व्यय भवन में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से शक्ति की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में बहुत कमी का अनुभव होता है तथा भाग्य एवं यश की उन्नति में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहिनों की कुछ असंतोषपूर्ण शक्ति प्राप्त होती है, परंतु पराक्रम में वृद्धि होती रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है, अतः जातक का शत्रु पर प्रभाव स्थापित होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण पत्नी द्वारा सुख तथा व्यवसाय द्वारा भरपूर लाभ प्राप्त होता है।










5

मंगल दोष

समाज में मंगल दोष के विषय में एक अफवाह फैली हुई है—जब भी विवाह हेतु जन्मपत्री का मिलान होता है तो माता-पिता यह देखना चाहते हैं कि लड़की या लड़का कहीं मांगलिक तो नहीं हैं? कभी-कभी तो माता-पिता इस चक्कर में गलत जन्मपत्री तक बनवा लेते हैं। जिसका परिणाम अनेक बार आगे चलकर भयानक हो जाता है।

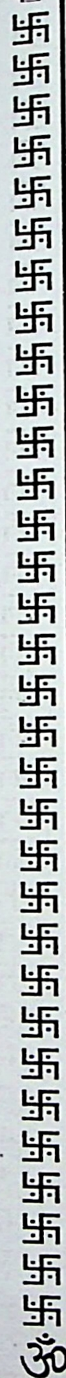
ज्योतिष के अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। उनमें मंगल दोष के विषय में कोई विशेष परिभाषा नहीं है। उन ग्रंथों में वृहद् होरा पराशर, प्रश्न मार्ग, फलदीपिका, जातक-परिजात, सारावली केवल दक्षिण भारतीय ''देवकेरलम्'' में ही मंगल दोष का विवरण मिलता है। ज्योतिषियों के लिए मंगल दोष के विषय में यह जानकारी अत्यंत महत्वपूर्ण होगी।

जन्मपत्री में लग्न से या लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश में मंगल होने से यह दोष होता है।

लग्न में मंगल—लग्न में जातक के व्यक्तित्व का ज्ञान होता है। लग्न में मंगल क्रोधी बनाता है, उग्र मानसिकता, दुर्घटना, दूसरे से व्यक्ति बहुत अधिक उग्र हो जाता है एवं उस पर नियंत्रण नहीं रख सकता है। लग्न से मंगल चतुर्थ भाव, सप्तम भाव और अष्टम भाव पर दृष्टि देता है। इससे घर, स्वास्थ्य, विषय-संपत्ति और आयु पर अपना प्रभाव देता है।

द्वितीय भाव—कुटुम्ब, धन, विद्या और मृत्यु आदि का विवेचन



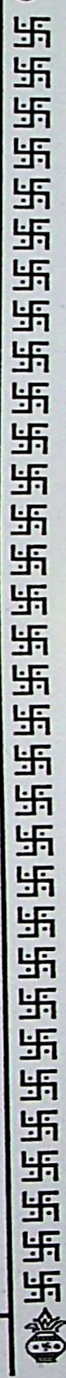
हम द्वितीय भाव से करते हैं। द्वितीय भाव में बैठकर मंगल पंचम भाव, अष्टम भाव एवं नवम भाव पर दृष्टि देता है। इस कारण यह भी कुछ कष्टदायक होता है। द्वितीय मंगल जीवन साथी के स्वास्थ्य को नष्ट करता है, दूसरे कुटुम्बों के कारण विवाहिता जीवन में कलह भी उत्पन्न होते हैं। द्वितीय मंगल अगर पाप ग्रह द्वारा दृष्टि या आक्रांत नहीं है, तो अनिष्ट नहीं होता है। यदि पापग्रह द्वारा दृष्टि या आक्रांत है तो अवश्य ही दुःखदायी स्थिति उत्पन्न करेगा।

चतुर्थ मंगल–वैवाहिक विचार में इसे सुख-भाव कहते हैं। चतुर्थ भाव का मंगल धन व अचल संपत्ति के लिए अच्छा है, परंतु पारिवारिक सुख-शांति में बाधा उत्पन्न करता है। दूसरे, चतुर्थ भाव से सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि देता है, इसके कारण जीवन साथी से मतभेद उत्पन्न होते रहते हैं।

सप्तम मंगल–सप्तम भाव वैवाहिक विचार में यह भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे वैवाहिक सुख, जीव साथी का स्वभाव आदि का विचार होता है। अतः यह भाव अत्यंत विचारणीय है। यहां से मंगल लग्न भाव और कुटुम्ब भाव को देखता है। इसके कारण रोग, दुर्घटना परिजनों से लड़ाई-झगड़ा इत्यादि देता है। चरित्र में भी दोष देता है।

अष्टम भाव–अष्टम भाव से विघ्न, बाधा, आयु, मृत्यु का विचार होता है। दूसरे स्त्री-जन्मांग में यह भाव अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। मंगल का अष्टम भाव में होना अनिष्टकारी होता है। इस भाव के संबंध में प्रायः सभी शास्त्रकारों ने अनिष्ट कहा है। पराशर ने तो ''मृत्यौ धननाशं पराभव'' (धन-हानि एवं पराजय होती है) द्वितीय भाव को अर्थात् भाव के सिद्धांत से जीवन साथी की मृत्यु या हत्या भी होने का योग बनता है।

द्वादश मंगल–विवाहित जीवन में अड़चन उत्पन्न करता है क्योंकि यहां से सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य प्रायः खराब रहता है। बंधु, भाईयों के साथ विरोध, पारिवारिक कलह, अत्यधिक कामुक, गुप्तरोग यहां तक कि विदेश







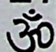
यात्रा भी होती है। पत्नी या पति घाती भी होने का योग बनता है। पथभ्रष्ट भी हो जाते हैं। जेलयात्रा भी होने का योग बनता है।

अगर मंगल 1-2-4-7-8 या 12वें भाव में हो और गुरु बृहस्पति द्वारा द्रष्ट हों या दोनों एक-दूसरे से सप्तम हों तो भी मंगल दोष होता है। शुक्र, मंगल या गुरु बृहस्पति एकत्र हों या परस्पर सप्तम में हों या केंद्र में हों तो मंगल नष्ट हो जाता है। अपनी राशि का मंगल कम घातक होता है, परंतु मेष का मंगल अधिक घातक होता है।

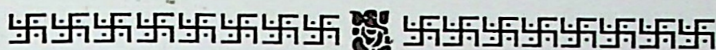
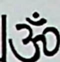
निम्नलिखित अवस्था में मंगल दोष नहीं होता है—

अगर मंगल 4 या 7 भाव में किसी पापग्रह द्वारा दृष्टि या युक्त न हो और इन भाव में 1-4-8 और 10 राशि हों। यदि 2 या 7 राशि में मंगल चतुर्थ या सप्तम भाव का हो। यदि मिथुन का कन्या पर मंगल द्वितीय भाव का हो। अगर कन्या के राशि में 1, 2, 4, 7, 8 या 12वें भाव मंगल हों और वर के इन्हीं भावों में शनि हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

□□□





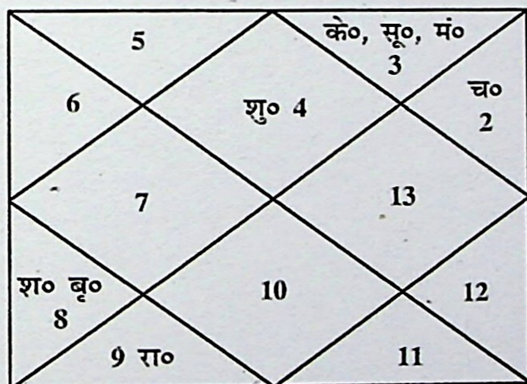






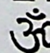
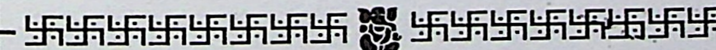
विवाहित जीवन में मंगल

यहां पर मैं मंगल दोष पर कोई चर्चा नहीं कर रहा हूं। यहां पर भिन्न-भिन्न प्रकार की जन्मपत्री देकर मंगल के विषय में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी दे रहा हूं!

यह जन्मपत्रिका जिस व्यक्ति की है वह लगभग 56 वर्ष का है। चार संतान हैं। द्वादश मंगल सूर्य, बुध और केतुयुक्त परंतु मंगल द्वादश भाव में बैठकर शैया सुख से वंचित कर रहा है। पत्नी वर्षों से तलाक या कोट-कचहरी किये बिना ही अपने पिता के घर में रह रही है।



यह जन्मपत्रिका एक महिला जातक की है। अनेक व्यक्तियों से प्रेम करने के पश्चात् विवाह हुआ। विवाह के तीन माह पश्चात् ही पति-पत्नी में तनाव आरंभ हुआ और आज दोनों ही अलग-अलग





जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मंगल अष्टम परंतु गुरु बृहस्पति की दृष्टि होने से विवाह तो हुआ परंतु पति से शैया सुख नहीं मिला, क्योंकि द्वादश भाव का स्वामी बुध मंगल के दृष्टि में है।

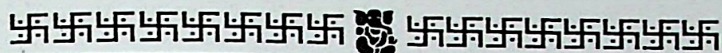
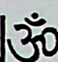
बृ० 5
3
सू०, 6
बु०
शु० 4
2
7
1
रा०, 8
श०
10
12
9 च०
11 मं०

विवाह के एक वर्ष पश्चात् ही पति-पत्नी का विवाहित जीवन नरकमय हो उठा है। सप्तम भाव के स्वामी शुक्र ने सुख तो दिया है परंतु पत्नी ने द्वितीय भाव में अग्निराशि का मंगल द्वितीय भाव के स्वामी गुरु बृहस्पति कन्या राशि में पत्नी के भीतर अहंकार, छोटी-छोटी बातों पर पत्नी पति का अपमान करती है। हर बातों का कटुपूर्ण उत्तर देती है।

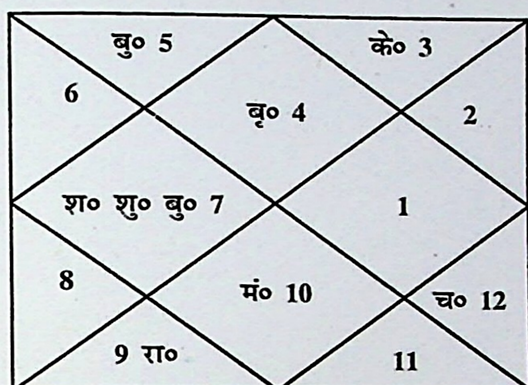
मं० 9
च०, सू०
7
10
शु० 8
बु०, 6
बृ०
रा० 11
5
12
2
4 शु०
1
3

यह जन्मपत्रिका एक पुरुष की है। उच्च का गुरु बृहस्पति तीन भाव में तीन उच्च ग्रह हैं—गुरु, शनि और मंगल। सप्तम भाव का

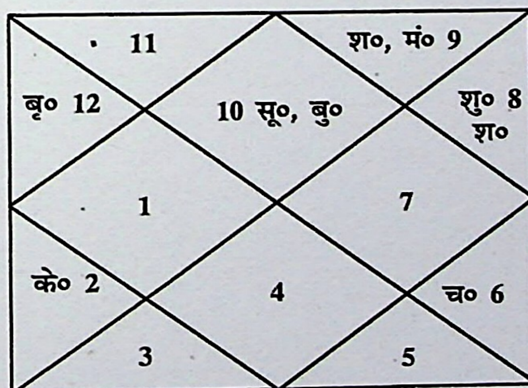


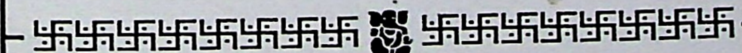




स्वामी उच्च में परन्तु सूर्य नीच राशि में और द्वादश भाव मिथुन का स्वामी बुध, सिंह राशि अपने मित्र के घर में मंगल के अष्टम दृष्टि और राहु के पंचम या नवम दृष्टि होने से जातक ने तीन-तीन शादियां कीं, परन्तु पत्नी छोड़कर चली गई—द्वादश पति के मंगल के प्रभाव होने से ऐसा हुआ।

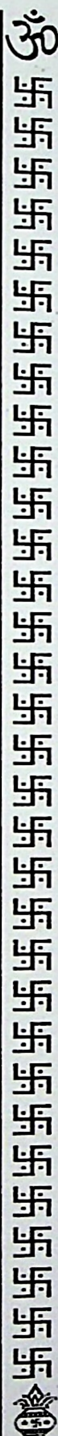


यह दंपति विवाह से आज तक नरकीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सप्तम भाव का स्वामी चंद्रमा कन्या राशि में और शनि के दशम दृष्टि परंतु गुरु बृहस्पति की नवम दृष्टि, परंतु बृहस्पति भी राहु के पंचम दृष्टि होने से पति पूर्ण शक्की मिजाज का व्यक्ति है, केवल द्वादश में शनि होने से अलगाव नहीं किया परंतु कोई संबंध नहीं है।

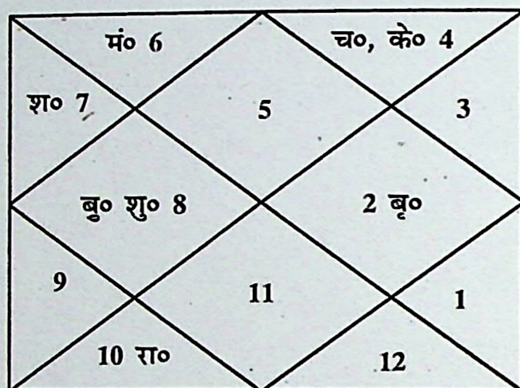


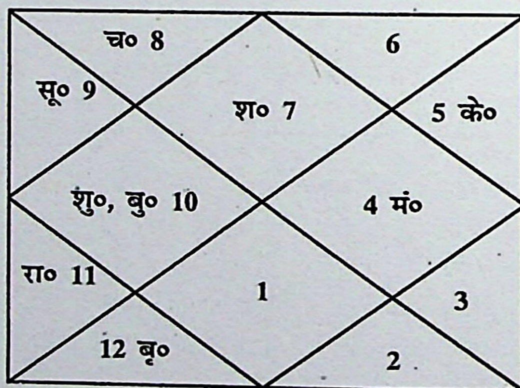


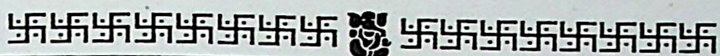
विवाहित जीवन सुखी नहीं है क्योंकि द्वादश भाव में चंद्रमा, द्वितीय भाव मंगल पत्नी का स्वभाव कटुपूर्ण है, जिसके कारण पति का दिमाग सदैव परेशान रहता है। शारीरिक क्षमता पूर्ण है परंतु जब भी पत्नी के साथ संपर्क की इच्छा करता है उसी समय अपने को उपेक्षित समझने लगता है।



यह बहुत ही हठी महिला है। अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह किया। दशम कर्क राशि के मंगल के प्रभाव से विवाह के सात-आठ वर्ष पश्चात् उग्र-दिमाग पति को उपेक्षित करना, छोटे-से-छोटे विषय में भी कुतर्क करना—विवाहित जीवन को नरक बना दिया और पति पत्नी को छोड़कर विदेश चला गया। यहां पर भी द्वादश भाव का नियम ही प्रयोग होता है।

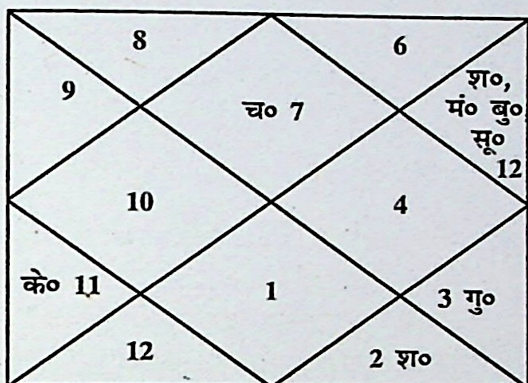




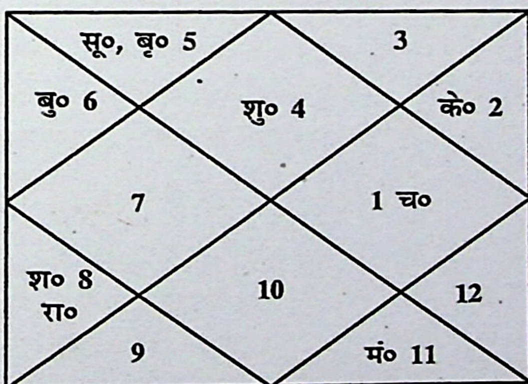



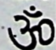


यह एक ऐसे व्यक्ति की जन्मपत्रिका है जो सदैव अपनी पत्नी से भयभीत रहता है, कि कब क्या हो जायेगा? क्योंकि सप्तम भाव का स्वामी मंगल और सप्तम से द्वितीय शनि से पत्नी का स्वभाव बहुत ही जिद्दी है। राहुयुक्त मंगल होने से पत्नी हर बात से पति को उत्तर देती है, पुनः शुक्र शनि के तृतीय प्रभाव में वह अपने को किसी भी रूप में निर्बल नहीं समझती है। दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण वातावरण में कट रहा है।



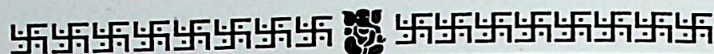
इसके दाम्पत्य जीवन का दुःखद अंत हुआ है। लग्न में मंगल अष्टम पुनः पंचम शनि राहु यह तो प्रमाणित करता है कि जातिका प्रेम विवाह करती है। पुनः द्वादश भाव शैया का स्वामी बुध मंगल के अष्टम दृष्टि में होने से जीवन साथी से अलग करता है।



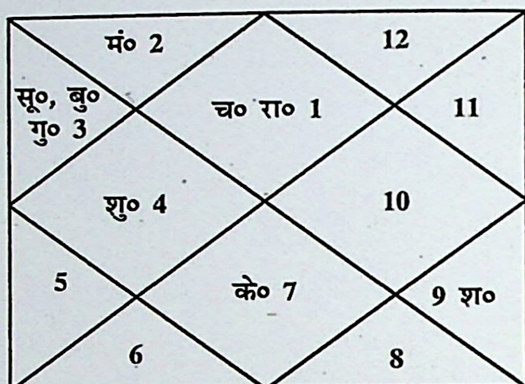






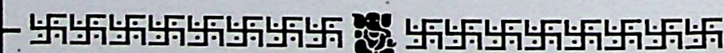



द्वितीय भाव मंगल प्रायः दाम्पत्य जीवन के लिए कष्टमय होता है। जातिका विवाह अपनी इच्छा से करती है। पति या योग्य पुरुष होता है परंतु अपने अहंकारपूर्ण व्यवहार कटुपूर्ण वाक्य के कारण पति को छोड़कर अकेली रहती है।



कभी-कभी तो ऐसा भी देखा गया कि विवाह के 20 वर्ष पश्चात् भी मंगल अपना प्रभाव दिखाता है। इसका संबंध दशा से भी होता है। कुछ ग्रह शीघ्र ही प्रभाव करते हैं; जैसे 1-4-7-10-2-5-8-11 देर से 3-6-9-12 अगर 15 अंश तक हैं तो शीघ्र ही अपना प्रभाव यदि 15 अंश के ऊपर है तो देर से करता है। मंगल मानव के जीवन को खुशहाल बना सकता है। मंगल जीवन को नरकमय भी बना सकता है। देखना है कि मंगल किस भाव में किस ग्रह द्वारा द्रष्ट है।










मंगल ग्रह से डरना कैसा?

"मंगल" उन नवग्रहों में से एक ग्रह का नाम है, जो सौरमण्डल के सदस्य हैं। यह लाल आभा वाला ग्रह है। जब यह चक्कर लगाते हुए पृथ्वी के समीप पहुंचता है तो उस समय यह लाल अंगारे के समान दिखाई पड़ता है।

इस ग्रह की प्रधान विशेषता यह है कि जब यह धरती की सीध में आता है, तब इसका उदय माना जाता है। उदय के पश्चात् 300 दिनों के पश्चात् यह वक्रीमार्गी होकर 60 दिनों तक चलता है। बाद में फिर अपने सामान्य परिक्रमा-मार्ग पर आकर 300 दिनों तक संचालित रहता है। ऐसी स्थिति को मंगल का अस्त होना कहा जाता है। मंगल की उत्पत्ति भगवान विष्णु के पसीने की बूंद से धरती द्वारा हुई थी। "महाभारत" में वर्णन है कि मंगल का जन्म भगवान कार्तिकेय के शरीर से हुआ था। वामन पुराण के मतानुसार, मंगल की उत्पत्ति तब हुई थी, जब भगवान भास्कर धारी भोलेनाथ ने "महासुर अंधक" का वध किया था। मंगल पृथ्वी का पुत्र है, अतः इसका एक नाम "भौम" भी है। "मंगल" का गोत्र "भारद्वाज" है, क्योंकि इसे भारद्वाज मुनि का वंशज माना गया है और वे ब्राह्मण जाति के हैं। "मंगल" ग्रह का रंग लाल है। मंगल का वाहन 8 पहियों वाला मूंगा रत्न व लाल रत्नजड़ित स्वर्ण रथ है। इनके रथ में आठ तेजस्वी लाल घोड़े जुते होते हैं।

मंगल ग्रह के विभिन्न नाम इस प्रकार हैं—भौम, महीसूत, भूमि, सुत, कुराक्ष, आग्नेय, अंगारक, कुज एवं रुधिर।

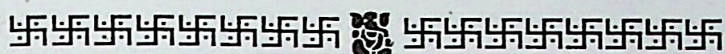
मंगल का स्वभाव क्रूर है अर्थात् इन्हें क्रोधी स्वभाव वाले ग्रह की संज्ञा मिली है। "मंगल" सेनापति की तरह है। मंगल शुभ हो तो साहसी, शस्त्रधारी व सैन्य अधिकारी बनाता है। मंगल शनि से शत्रुता करता है, पर शनि ऐसा नहीं करता है। मंगल सीधा चलने वाला ग्रह है। जब कभी मंगल को बुराई की ओर जाने की प्रेरणा मिलती है तो यह पीछे नहीं हटता।

लाल किताब के अनुसार मंगल चौथे व आठवें भाव में अशुभ और शेष भावों (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10,11 और 12वें) में शुभ फल देता है।

मंगल अशुभ होने पर बच्चे जन्म लेते ही मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। आंख, शरीर के जोड़ काम नहीं करते, जोड़ों में दर्द बना रहता है, रक्त की कमी हो जाती है और शक्ति होने पर भी संतान नहीं होती।

मंगल भाव नं० एक में हो अर्थात् प्रथम भाव के मंगल के दाएं-बाएं चंद्र, सूर्य हों तो जातक की 14, 28 या 1, 15 वर्ष की आयु में माता अथवा पिता की मृत्यु हो जाती है। आकाश मंडल का प्रभाव क्षेत्र दक्षिण दिशा को माना गया है। विश्व के वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण में आकाश मंडल में मंगल ग्रह का चौथ स्थान है। सूर्य से इसकी दूरी 22,40,00,000 किलोमीटर है। इसका आकार छोटा है अर्थात् सूर्य व चंद्र से छोटा और इसका व्यास 6,860 किलोमीटर है। 687 दिनों में यह सूर्य की एक परिक्रमा पूर्ण करता है तथा पृथ्वी क़ी अपेक्षा केवल एक दसवां भाग गुरुत्व शक्ति रखता है।

सभी ग्रहों के उपग्रह भी हैं, इसी प्रकार मंगल का भी उपग्रह है, जिनकी संख्या दो है। इनमें से एक का नाम "फोबोस" तथा दूसरे का नाम "डेमोस" है, जो मंगल की परिक्रमा करते रहते हैं। पृथ्वी से मंगल की न्यूनतम दूरी 7,80,000 किलोमीटर है। इसका रंग लाल है, जिसे "ताम्रवर्णी लाल" कहा जा सकता है। मंगल के साथ बृहस्पति की युति होने से मंगल "बलवान" होता है।


मित्र : सूर्य, चंद्र, गुरु बृहस्पति।

शत्रु : बुध, केतु।

सम : शुक्र, शनि, राहु।

''मंगल'' मेष तथा वृश्चिक दोनों राशियों का स्वामी है। इसकी उच्च राशि मकर व नीच राशि कर्क है। मंगल ग्रह के नाम पर ही मंगलवार दिवस का नामकरण हुआ है और वे ''प्रथम भाव'' के स्वामी हैं।

प्रथम भाव में मंगल-मांगलिक योग

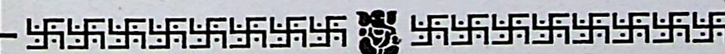
लग्नस्थ मंगल वाले जातक को बाल्यकाल में उदर रोग, दांतों के रोग होते हैं। वह शत्रुओं से झगड़ता रहता है तथा उसके शरीर में ''व्रण'' होता है।

लग्नस्थ मंगल स्वग्रही या उच्च का हो तो जातक पुष्ट देह सत्कार पाने वाला एवं यशस्वी होता है। यदि मंगल के साथ कोई पापग्रह हो अथवा शत्रुग्रही मंगल लग्नस्थ हो या पापग्रहों की मंगल पर दृष्टि हो तो जातक नेत्र रोगी होता है।

लग्नस्थ मंगल होने पर जातक अनेक व्यवसायों की ओर आकृष्ट होता है, किंतु उसे एक में भी सफलता नहीं मिलती। मंगल लग्नस्थ हो तो जातक का कुशल सर्जन (शल्यचिकित्सक) बनने का योग बनता है।

मिथुन एवं तुला का मंगल होने से जातक मिलनसार होता है। सिंह राशि का मंगल होने से जातक उन्नति प्राप्त करता है, लेकिन वृष, कन्या और मकर राशि का मंगल होने से किसी को भोजन देने में भी कंजूस हो जाता है और मकर राशि का मंगल होने से यदि एक व्यक्ति भी उसके यहां भोजन करे तो वह सहन नहीं कर पाता। कर्क, वृश्चिक, कुम्भ एवं मीन राशियों में मंगल हो तो जातक कंजूस होता है।

जिन जातकों की जन्मकुंडली में प्रथम भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम, अष्टम एवं बारहवें भाव में ''मंगल'' है, वे सभी ''मांगलिक'' माने जाते है। ''मांगलिक योग'' व्यक्ति का मांगलिक कन्या से विवाह







हो जाए तो अनिष्ट नहीं होता। यदि सप्तम एवं अष्टम भवन का पूर्ण (10 से 20 डिग्री) मंगल हो तो लड़की की मृत्यु तक हो जाती है।

लग्न व चौथे भाव के मंगल से लड़की सदैव रोगी रहती है या उसकी संतान नहीं होती अथवा उसके गर्भाशय का बहुत बड़ा ऑपरेशन होता है।

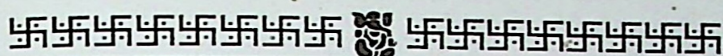
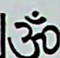
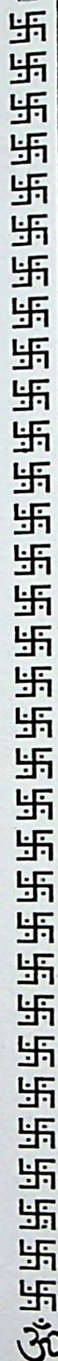
ज्योतिषाचार्यों के मतानुसार, 28 वर्ष के पश्चात् मांगलिक दोष समाप्त हो जाते हैं, परंतु शुक्र की स्थिति अत्यंत अच्छी और सातवें भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो या सप्तमेश सप्तम भाव अर्थात् अपने ही भाव को देखता हो, ऐसी अवस्था में पति अथवा पत्नी दोनों में से कोई भी ''मांगलिक'' दोष के कारण मृत्यु प्राप्त नहीं करते।

दूसरे भाव में मंगल

धन भाव का मंगल प्रायः अशुभ फल ही देता है। धनभावस्थ मंगल के रहने से जातक को पराए और निकृष्ट अन्न का भोजन करने वाला कहा है। ऐसे जातक की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है, परिवार बड़ा होता है, लेकिन वह इसका उपयोग नहीं कर सकता। जातक का परिजनों से प्रेमभाव नहीं रहता। फलतः वे भी इसकी परवाह नहीं करते। सांसारिक सुखों को भोगने के लिए धन की आवश्यकता रहती है, अतः धनभावस्थ मंगल इसके लिए धन भी देता है, लेकिन जातक उसका उपयोग नहीं कर सकता।

पृथ्वी तत्वीय राशियों में से किसी में भी मंगल हो तो पत्नी की मृत्यु तो नहीं होती, लेकिन पत्नी और पति किसी कारणवश एक साथ नहीं रह पाते अर्थात् धनभावस्थ मंगल ''शैया सुख'' में कमी करता है। वायु तत्वीय राशि में मंगल हो तो धन का संग्रह खूब होता है, किंतु व्यय नहीं होता। जलराशि में मंगल हो तो औषधि के कार्यों में लाभ रहता है। धनभावस्थ मंगल जातक को कर्कश वाणी वाला बनाता है।



तीसरे भाव में मंगल

तीसरे भाव में मंगल हो तो जातक वीर होता है तथा परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है। उसे अपने जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह आगे बढ़ता जाता है। पड़ोसियों और संबंधियों से उसका झगड़ा प्रायः होता ही रहता है। किसी सरकारी कागज पर हस्ताक्षर करने से ऐसे जातक को राजदंड का भय भी होता है।

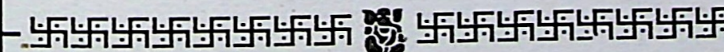
मकर राशि को छोड़कर किसी भी अन्य राशि में अगर राहु के साथ मंगल अशुभ योग करे तो ऐसा जातक वेश्यागामी होता है, फलतः वैवाहिक जीवन नरक बन जाता है। भाइयों के लिए तीसरे भाव का मंगल शुभ नहीं होता। मकर को छोड़कर अन्य किसी स्त्री राशि में मंगल हो तो छोटे भाई होते हैं। पुरुष राशियों में हो तो छोटी बहनें होती हैं।

तीसरे भाव के मंगल में इतना अवश्य अनुभव में आया है कि भाइयों से मेल नहीं रहता। स्थिति यहां तक बिगड़ सकती है कि बंटवारे के लिए जातक को न्यायालय की शरण भी लेनी पड़ जाती है।

स्वराशिस्थ या उच्च राशि का मंगल हो तो जीवन स्थिर नहीं होता।

चौथे भाव में मंगल–मांगलिक योग

चतुर्थ भाव में मंगल होने से प्रायः अशुभ फल ही अनुभव में आते हैं। ऐसा जातक झगड़ालू प्रकृति का होने से समाज में सम्मान नहीं पाता। वह सदैव अपने भले-बुरे के बारे में ही विचार करता रहता है। केवल अपने लिए संघर्षरत रहने से लोग उसे पागल समझने लगते हैं। ऐसा जातक साहसी होता है तथा माता-पिता के लिए अनिष्टकर एवं सुखविहीन होता है। छोटी आयु से ही ऐसे जातक का अपने माता-पिता से विरोध चलता रहता है, जिसके कारण आगे चलकर जातक का अपने माता-पिता से वैमनस्य हो जाता है।





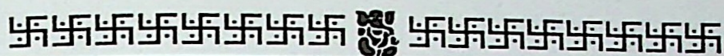
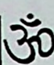
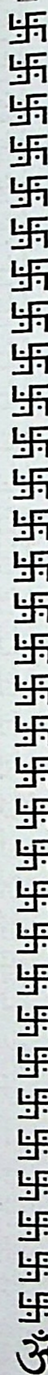

अगर चतुर्थेश मंगल शुभ संबंध में हो तो जातक की अपनी माता के प्रति श्रद्धा होती है, लेकिन मां का स्वभाव थोड़ा कर्कश होने से प्रायः जातक का उससे मनोमालिन्य होता रहता है। मंगल स्वग्रही या उच्च का हो तो जातक को उच्च वाहन की प्राप्ति होती है तथा उसे अपने जीवन में सदैव सुखों का ही अनुभव होता है। संतान की ओर से ऐसा जातक प्रायः दुःखी रहता है। ''द्वि-भार्या योग'' होता है। मेष, कर्क, सिंह और मीन लग्नों को छोड़कर जातक व अभ्युदय जन्मभूमि से अन्य स्थान पर होता है। ऐसे जातक को उन्नति के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है तथा प्रवास अधिक होते हैं। मेष, सिंह व धनु राशि का मंगल हो तो घर को आग लगने का भय रहता है। कर्क, वृश्चिक, तुला या मिथुन राशि का मंगल हो तो जातक का अंतिम समय घर पर व्यतीत होता है, लेकिन मृत्यु बाहर ही होती है। यदि मंगल नीच का हो या अष्टमेष से युक्त होकर सुख भाव में हो तो माता की शीघ्र मृत्यु होती हैं।

पांचवें भाव में मंगल

पंचमस्थ मंगल संतान के लिए शुभ नहीं रहता। जातक की पत्नी रोग से पीड़ित होती है। यदि मंगल निर्बल हो तो पिता के भाग्य की हानि होती है। ऐसे जातक की रुचि पापकर्मों की ओर अधिक रहा करती है। ऐसा जातक साहसी होता है और कैसी भी विषम परिस्थिति आ जाए, उसका डटकर सामना करता है।

पत्नी के विचारों से मतभेद रहने के कारण घर में कलह का वातावरण बना रहता है। यदि मंगल उच्च का या पुरुष राशियों में हो तो स्त्री के पूर्व जन्म के कर्मों के कारण संतति सुख में बाधा होती है। ऐसे जातक की पत्नी को मासिक धर्म की गड़बड़ी भी रहा करती है। ऐसे जातक को धन भले ही कम मिले, लेकिन ख्याति अवश्य मिलती है। डॉक्टरों के लिए पंचमस्थ मंगल शुभ रहता है।

अग्नि तत्वीय राशियों का मंगल सेना, पुलिस, मोटर ड्राइविंग तथा टैक्नॉलोजी द्वारा जीविका अर्जित कराता है। पृथ्वी तत्वीय राशियों का मंगल सिविल इंजीनियरिंग, भूमि तथा सर्वे विभाग से

जीविका प्रदान करता है। ऐसे जातक के वकील होने पर उसे फौजदारी मुकदमों में अच्छा लाभ प्राप्त होता है। ऐसे अधिकारी घूस लेते हैं तो शीघ्र ही पकड़ में आ जाते हैं। पंचमस्थ मंगल विदेश वास कराता है, प्रसिद्धि देता है, कामुक बनाता है तथा कार्यों में सफलता देता है।

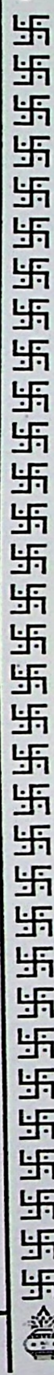
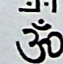
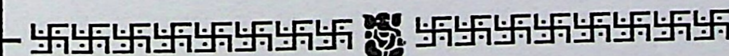
छठे भाव में मंगल

अगर छठे स्थान में मंगल हो तो जातक का शक्तिशाली-से-शक्तिशाली शत्रु भी उसके सम्मुख टिक नहीं पाता। ऐसे जातक की जठराग्नि तीव्र होती है। कामवासना का वेग भी बढ़ा-चढ़ा रहता है। स्थिर राशि का मंगल जातक को हृदय रोग, द्वि-स्वभाव राशि में हो तो क्षय रोग, चर राशि में हो तो यकृत रोग व बालों का झड़ना जैसी पीड़ा देता है।

मातृत्व के लिए छठे भाव का मंगल शुभ नहीं होता। मंगल अग्नि राशि का हो तो शत्रु द्वारा शस्त्राघात, विषघात अथवा अग्निघात का भय रहता है। शुभ प्रभाव में आया मंगल कीर्ति लाभ तो कराता है, लेकिन जातक को कठिन संघर्ष करना पड़ता है। यदि जातक अधिकारी हो तो बहुत रिश्वतखोर होता है और पकड़ा भी नहीं जाता। मिथुन या कन्या राशि में मंगल षष्ठस्थ हो तो जातक को कुष्ठ रोग होने का भय रहता है।

सातवें भाव में मंगल–मांगलिक योग

सप्तम भाव का मंगल जातक के लिए "मांगलिक योग" बनाता है। जातक की पत्नी का स्वभाव उग्र होता है, वह झगड़ालू होती है। दाम्पत्य जीवन में कलह का वातावरण बना रहता है। पत्नी के साथ इतनी कलह हो जाती है कि दोनों को अलग-अलग रहने के लिए विवश होना पड़ता है। मंगल सप्तम भाव में किसी भी राशि का हो, एक फल अनुभव में यह आया है कि जातक हर कार्य करने की इच्छा बना लेता है। दूसरे शब्दों में, वह कोई भी कार्य करने के लिए तत्पर रहता है, लेकिन उसे सफलतापूर्वक पूरा करने में सक्षम






नहीं होता। व्यवसाय के प्रतिपक्षियों के साथ स्पर्धा चलती ही रहती है। यदि अग्नि राशि में मंगल हो तो छापेखाने यानि प्रेस का धंधा लाभदायक रहता है। भूतत्वीय राशियों में हो तो भवन निर्माण या खेती-बाड़ी का व्यवसाय लाभदायक रहता है, वायु तत्वीय राशि में रहने पर वाहन चालक, वाहन-मरम्मत करने या वायुयान चालक का कार्य लाभदायक रहता है तथा जल तत्वीय राशियों में हो तो सर्जन जैसे कार्य लाभदायक रहते हैं।

आठवें भाव का मंगल–मांगलिक योग

अगर अष्टम भाव में मंगल हो तो जातक "मांगलिक" होता है। ऐसा जातक रोगों से ग्रस्त रहता है। वह अल्पायु होता है। अनुभव में आया है कि ऐसे जातक की आयु का मध्यकाल निर्धनावस्था में व्यतीत होता है।

सूर्य, चंद्रमा और शनि के साथ अगर मंगल भी अशुभ संबंध में हो तो ऐसा जातक अल्पायु होता है। यदि अकेला मंगल हो तो मृत्यु शीघ्र नहीं होने देता। मंगल अग्नि तत्वीय राशियों में हो तो जातक की आग से जलकर या गोली लगने से मृत्यु की संभावना रहती है। वायु तत्वीय राशियों में होने पर मृत्यु का कारण बनती है।

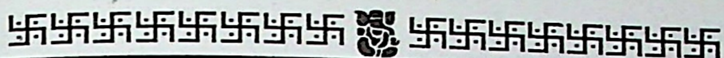
मंगल वृषभ, कन्या और मकर राशि में है तो शुभ फल मिलते हैं। मकर राशि में मंगल संतान का अभाव रहता है। ऐसा जातक अधिक खाने वाला होने से अजीर्ण रोग से पीड़ित रहता है। यदि कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि में मंगल हो तो जातक की जल में डूबने से मृत्यु की संभावना होती है।

नौवें भाव में मंगल

मंगल नवम भाव में हो तो शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल मिलते हैं। नवमस्थ मंगल जातक को क्रोधी बनाता है। मकर एवं मीन राशि में अधिकतर अशुभ फल मिलते हैं। ऐसा जातक व्यभिचार की इच्छा रखने वाला होता है। व्यर्थ की डींगें हांकना उसका स्वभाव होता








है। ऐसे जातक समाज के लिए कलंक होते हैं। अगर मंगल अग्नि तत्वीय राशि में या जल राशि में हो तो जातक उदार एवं मिलनसार होता है।

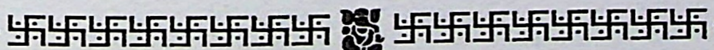
नवमस्थ मंगल होने से जातक प्राचीन रूढ़ियों का पोषक नहीं होता, बल्कि नए विचारों व नई मान्यताओं को स्थापित करने का प्रयास करता है। विवाह तक को ऐसा जातक मात्र समझौता ही मानता है। इसी कारण विवाह संबंध के लिए सूक्ष्म विचार भी नहीं करता, बल्कि कैसी भी स्त्री मिले, स्वीकार कर लेता है। मंगल शुक्र से द्वादश स्थिति में हो तो ''द्वि-भार्या योग'' बनता है। नवमस्थ मंगल शुभ फलदाता नहीं होता।

दसवें भाव में मंगल

दशम भाव में मंगल हो तो जातक व्यापार में प्रवीण होता है। किसी संस्थान में उच्च पदाधिकारी होता है। ऐसे जातक के माता-पिता की मृत्यु उसके बाल्यकाल में हो जाती है या वह दत्तक पुत्र बनकर माता-पिता से अलग हो जाता है। उसके भी किसी एक पुत्र की मृत्यु हो जाती है। नवमेश एवं दशमेश एक साथ हों तो ''राज योग'' बनता है।

अगर मंगल गुरु बृहस्पति के साथ हो तो जातक प्रचुर धन प्राप्त कर लेता है। शुभ ग्रह के साथ या शुभ वर्ग में हो तो कार्यों में सफलता मिलती है तथा कीर्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक धैर्यशाली और बहादुर होता है। पापग्रह के साथ हो तो प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएं आती हैं तथा जातक अभिमानी, उतावला एवं लोभी स्वभाव का हो जाता है। यदि लग्न स्त्री राशि का हो तो जातक अपने भुजबल से संघर्षरत रहकर व भारी कष्ट उठाकर उन्नति कर लेता है। पुरुष राशि का लग्न हो तो उन्नति पथ पर अग्रसर होने के लिए उसे कष्ट नहीं उठाना पड़ता, संघर्ष नहीं करना पड़ता, बल्कि सहज ही उन्नति हो जाती है।

वृश्चिक राशि में होने से चिकित्सकों, वकीलों के लिए धनप्रद






होता है, पर नौकरी करने वालों के लिए अशुभ फलदायी होता है, क्योंकि उच्चाधिकारियों से ताड़ना मिलती रहती है।

ग्यारहवें भाव में मंगल

अगर "लाभ स्थान" में मंगल हो तो जातक पैतृक संपत्ति से वंचित हो जाता है। जातक की शिक्षा में अनेक व्यवधान आते हैं, जिसके कारण जातक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। ऐसा जातक परिश्रमी होता है तथा आजीविका के लिए उसे कठोर संघर्ष करना पड़ता है। पुरुष राशि का मंगल हो तो पुत्र संतान का अभाव रहता है या तो पुत्र होते ही नहीं हैं, यदि होते भी हैं तो कालकवलित हो जाते हैं। पत्नी का गर्भस्राव होने से संतानाभाव बना रहता है। मंगल स्त्री राशि में हो तो पुत्र होते हैं, आज्ञाकारी भी होते हैं तथा जातक संतान के कारण यशस्वी बनता है। इन राशियों में मंगल के रहने से जातक यदि राज्याधिकारी हो और रिश्वत ले तो पकड़ा जाता है।

बारहवें भाव का मंगल–मांगलिक योग

अगर व्यय भाव में मंगल स्थित है तो प्रायः गुप्त शत्रुओं से घात का भय बना रहता है। अर्थदंड का भय रहता है तथा चोर, लुटेरों द्वारा हानि होती है। दाम्पत्य जीवन में मधुरता नहीं रहती। जुए की लत होती है। धन का नाश होता है। जातक मंगल के प्रभाव के कारण हिंसक वृत्ति पर उतरकर अपराधी बन जाता है। ऐसा जातक कामुक होता है। स्त्री-सुख का उसे अभाव रहता है।

द्वि-भार्या योग बनने से दूसरे विवाह की संभावना भी रहती है। अगर मंगल पापग्रह में आया हो तो भाई एवं संतान के लिए अशुभ रहता है। स्वस्त्री होने के बाद भी जातक पर स्त्री का भोग करता है। उसे अपच जैसे रोग होते हैं। धनसंग्रह के अवसर नहीं आते। उधार ले जाने वाला प्रायः लौटाता नहीं। धनसंचय होने से बाधा आती है। ऐसा जातक निडर एवं साहसी होता है।




जातक के घर जब संतान जन्म लेती है तो उसके माता-पिता को दिल पर एक चोट-सी अनुभव होती है।

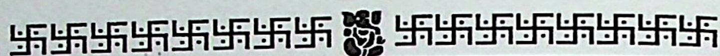
1, 4, 7, 8 व 12वें भाव की अपनी एक अलग महत्ता है। प्रथम भाव से शरीर, चतुर्थ भाव से सुख, सप्तम भाव से काम, पति-पत्नी अथवा रति सुख, अष्टम भाव जीवन में आने वाली बाधाओं व मृत्यु का द्योतक है, द्वादश भाव व्यय अथवा क्रयशक्ति का सूचक है। इन भावों का सुख तभी मिल सकता है, जबकि इन भावों में पापग्रह न हों और न ही पापग्रहों से दृष्ट हो।

यदि जातक के चतुर्थ भाव में मंगल हो या दृष्टि पड़े तो दैनिक भोगोपभोग की वस्तुओं की अल्पता रहती है। यदि मंगल सप्तम भाव में विराजित हो या दृष्टि पड़े तो पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं रहता। जातक की जन्मकुंडली में यदि मंगल आठवें भाव में स्थित है या दृष्टि पड़े तो जीवन में बाधाएं और अनिष्ट होता है। जातक के लग्न में मंगल हो या दृष्टि पड़े तो स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, स्वभाव उग्र एवं जिद्दी होता है। मंगल द्वादश भाव में स्थित हो या दृष्टि पड़े तो व्यय की चिंता व परेशानी अधिक होती है।

''मांगलिक दोष'' जातक पर प्रायः 28 वर्ष के पश्चात् समाप्त हो जाता है। हिंदी में मूंगा, उर्दू और फारसी में मिरजान, अंग्रेजी में कोरल तथा संस्कृत में प्रवाल, विद्रुम, लतामणि और रक्तांग भी कहते हैं। मोती के समान मूंगा भी खनिज पदार्थ नहीं हैं। इसकी उत्पत्ति वानस्पतिक मानी गई है, जो समुद्र से प्राप्त होता है। देखने में इसका रूप बेल की शाखाओं जैसा लगता है।

आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार यह मूंगा जल जन्तु चूने की ठठरी के समान जमाव दिए रहता है और उसका अधिकांश भाग समुद्र से निकले कैल्शियम कार्बोनेट का बना होता है।

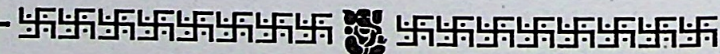
मूंगा बनाने वाला जमाव सब समुद्रों में या किसी समुद्र के सब भागों में नहीं पाए जाते। इसके लिए एक निश्चित तापमान की आवश्यकता होती है। मूंगे के जमाव लगभग नौ सौ फीट की गहराई में पाए जाते हैं, परंतु प्राप्ति स्थान की गहराई जितनी अधिक होती है, मूंगे के रंग की गहराई उतनी ही कम होती है।

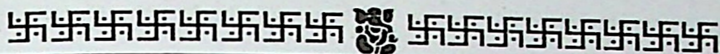

लाल मूंगे की माला धारण करने से हृदय रोग, मिरगी तथा दृष्टि से मुक्ति मिलती है। मांगलिक जातक के अनिष्टों का नाश करता है। इसकी माला बालकों के गले में धारण कराने से उसका सूखा रोग तथा पेट का दर्द आदि दूर हो जाते हैं। यदि मूंगा घिसकर गर्भवती स्त्री के पेट पर लेप किया जाए तो गर्भपात रुककर ठीक समय पर प्रसव होता है। जिस व्यक्ति के पास मूंगा हो, उसे भूत-प्रेत, चुड़ैल आदि परेशान नहीं करते। मूंगे की भस्म सेवन करने से हृदय रोग, रक्त विकार, मिरगी, दमा, वायु, कफ, शारीरिक व मानसिक दुर्बलता, जोड़ों का दर्द, पेटदर्द, नेत्र रोग आदि ठीक हो जाते हैं।

गहरा लाल, गेरूआ, सिंदूरी लाल और हिंगुल रंग के मूंगे होते हैं, परंतु कुछ मूंगे गुलाबी, सफेद तथ श्याम वर्ण के भी होते हैं। मूंगा धारण करने के लिए निम्नलिखित नियमों पर ध्यान देना आवश्यक है–

- मंगलवार का दिन हो।
- मेष या वृश्चिक राशि पर चंद्रमा या मंगल हो।
- मृगशिरा, घनिष्ठा अथवा अनुराधा नक्षत्र हो।
- उस दिन ग्यारह बजे से पूर्व स्नानादि से पवित्र होकर मूंगे को सोने की मुद्रिका में जड़वाएं। रत्न का निचला भाग उंगली से स्पर्श अवश्य करता रहे।
- मुद्रिका तैयार करवाने के पश्चात्, फिर दूसरे मंगलवार को तांबे का त्रिकोण बनवाकर उसके ऊपर मूंगा जड़ित अंगूठी को रखकर मंगल का शोडषोपचार पूजन करें तथा "ॐ भौं भौमाय नमः" जप करते हुए 700 आहुतियों से हवन करें। तत्पश्चात् बाएं हाथ की मध्यमा उंगली में अंगूठी को धारण करें। इस विधि से मूंगा धारण करने वाले की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। मूंगे का वजन कम-से-कम 8 रत्ती तक का होना चाहिए तथा ध्यान रहे कि इसे सोने में ही जड़वाएं। मुद्रिका में जड़वाने के दिन से प्रारंभ करके 3 वर्ष 3 दिन तक जातक के ऊपर मूंगे का प्रभाव बना रहता है, तत्पश्चात् प्रभाव नष्ट हो जाता है, फिर इस अवधि के पश्चात् दूसरे मूंगे की मुद्रिका बनवाकर धारण करनी चाहिए।








मंगल ग्रह से डरना क्या!

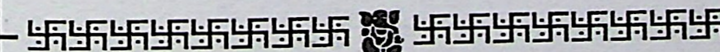
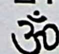
हम जिस पृथ्वी पर रहते हैं, वह एक ग्रह है, जो सूर्य से अलग होकर अब सूर्य की परिक्रमा करता है और इस परिक्रमा को वह जितने समय में पूरा करता है, उसे एक वर्ष की संज्ञा दी जाती है। वृत्ताकार पृथ्वी अपनी धुरी पर जितने समय में घूमती है, उसे दिन-रात की संज्ञा दी जाती है और उसके साथ ही अन्य ग्रहों की किरणें इस धरती पर आकर धरती और धरती के जीवों को प्रभावित करती हैं। ये प्रभाव उस चुम्बकीय शक्ति के प्रभाव होते हैं, जो हर जीव में अलग-अलग होती है। जैसे कुछ जातकों पर मंगल की किरणें उसकी चुम्बकीय शक्ति के कारण तेजी से आती है तथा कुंछ की शक्ति क्षीण होती है। उन्हें प्रभावशाली बनाने के लिए मंत्रशक्ति, रत्नधारण, उपाय-व्यवस्था आदि का विधान है।

भूमि पर विद्यमान हर जातक की एक अलग किस्म है और यह किस्म उसके स्वामी से प्रभावित है। समस्त प्राणियों का नवग्रहों में से एक स्वामी है। उस ग्रह के अनुसार उसकी राशि बनी है और उस राशि के अनुसार ही ग्रह का स्वामी मिलता है। उस ग्रह के अनुसार कुछ ग्रह मित्र बनते हैं और कुछ अशुभ या शत्रु बनते हैं।

यहां मेरा विषय केवल मंगल है, अतएव मैं केवल मंगल तक ही सीमित रहूंगा।

मंगल की महादशा में अगर कारक ग्रह मंगल हो तो आपको शुभ और फलदायी फल प्राप्त होंगे। जैसाकि आप सभी जानते हैं, जन्मकुंडली में जिनके चौथे, आठवें एवं बारहवें स्थान पर मंगल होते हैं, वे वास्तव में अधिक रूप से मंगल से प्रभावित होते हैं।

लेकिन मंगल ग्रह का सबसे अधिक फल मंगल की महादशा में ही मिलता है और उस समय लग्न की स्थिति के अनुसार लाभ होता है। मंगल अगर कारक नहीं है तो बहुत सावधान होकर चलना चाहिए, क्योंकि मंगल की स्थिति में प्राथमिकता अधिक आ जाती है। अत्यधिक आत्मविश्वास हो तो उसका भी विपरीत फल मिलता है।




मंगल दोष क्या है? इसके विषय में अधिकतर लोग परिचित हैं। जिस जातक के जन्मचक्र में मंगल ग्रह लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित होता है, उसे ज्योतिषशास्त्रों में मंगल दोष-युक्त माना जाता है। ऐसे जातक को विवाह संबंधी बाधाएं, दाम्पत्य सुख में न्यूनता आती है और अगर उसके भावी जीवन साथी के जन्म चक्र में उसी के अनुरूप ग्रह नहीं हों तो उसके जीवन साथी के जीवन के लिए यह अनुकूल नहीं है, पर उसकी मृत्यु ही हो जाए, यह कहना ठीक नहीं है। मंगल दोष के विषय में स्पष्ट लिखा गया है—

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे,
कन्या भर्तु र्विनाशाय भर्तु र्कन्यां विनाशयेत्।

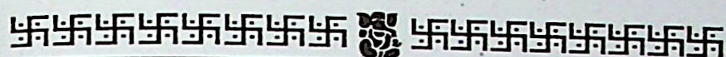
इसी प्रकार अगर इन भावों में पापग्रह; जैसे शनि, राहु, केतु, सूर्य आदि स्थित हों तो ये मंगल ग्रह के परिहार हैं।

लग्नादि धोर्वा यदि जन्मकाले
महिसुतो वाशति राहु केतवः
व्यथाष्टतुर्ये प्रथमे कलत्रे कन्या वरं
हन्ति वरश्च कन्याम्

मंगल दोष वास्तव में दोष है और यह दाम्पत्य सुख को क्षीण कर देता है। इस दोष का विचार वर तथा वधू के विवाह से पूर्व कर लेना चाहिए। ज्योतिष शास्त्रों में मंगल दोषयुक्त वर अथवा कन्या का विवाह बिना मंगलीक कन्या अथवा वर से करने हेतु निषेध बताया गया है और मंगलीक वर का विवाह मंगलीक कन्या के साथ किए जाने का शास्त्र सम्मत विचार है, किंतु क्या आज के युग में ऐसा संभव है? क्या मंगलीक को मंगलीक जीवन साथी न मिलने से अविवाहित रहना पड़ेगा?

प्राचीन काल में ज्योतिष के दृष्टिकोण से जन्मपत्रिका की गणना सूक्ष्मतापूर्वक की जाती थी और प्रायः सभी जातकों के जन्मचक्र बनवाए जाते थे, किंतु आज की स्थिति बदल गई है, क्योंकि इसमें सूक्ष्मता के साथ-साथ जन्म-समय आदि की शुद्धता भी परम आवश्यक है।



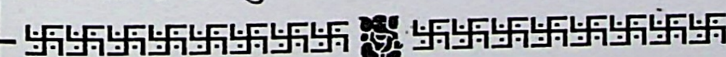

मंगलीक वर अथवा वधू को मंगलीक जीवन साथी न मिलने से उसके विवाह में अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न हो जाती हैं और उसका विवाह सम्पन्न होना कठिन हो जाता है। कभी कभी जन्मचक्र का सही मिलान न होने के कारण और एक की जन्मकुंडली में मंगल का प्रभाव होने के कारण दाम्पत्य सुख क्षीण हो जाता है।

वास्तव में मंगलीक दोष क्या है? यह पूर्वजन्मकृत कर्मों का फल है, क्योंकि जो संचित और प्रारब्ध कर्म कहे जाते हैं, उनके शुभ और अशुभ दोनों ही संबंध अज्ञात हैं, जो हमारे जीवन के मार्ग को भ्रष्ट कर देते हैं, जिससे हमारे जीवन में पूर्वजन्मकृत दोष के रूप में इस तरह के घटनाक्रम जुड़ जाते हैं और हमारा जन्म भी उसी अनुरूप समय काल के अनुसार होता है।

ज्योतिष के विद्वान तो इस दोष के निवारण के विषय में कई बार परिस्थितिवश मौन हो जाते हैं। बात ठीक भी है कि विवाह कठिन जीवन का महत्वपूर्ण निर्णय है और इसे हल्केपन से नहीं लिया जाना चाहिए, क्योंकि इससे वर अथवा वधू के पूरे जीवन पर प्रभाव पड़ता है। मांगलिक दोष के कारण विवाह में बाधाएं आती हैं और कभी-कभी दोष इतना प्रबल होता है कि विवाह योग ही नहीं बनता और अगर योग बनता भी है तो विवाह-सुख न्यून हो जाता है। इस प्रकार दुर्भाग्य उसके साथ जुड़ा रहता है।

मांगलिक योग को लेकर समाज में अनेक भ्रांतियां फैली हुई हैं और लगभग प्रत्येक जातक इसके नाम से भी डरता है, परंतु लोगों का भय जहां तक शास्त्र की बात है तो ठीक भी है, किंतु उसके साथ ही दृष्टि का भ्रमजाल भी है।

मांगलिक योग में मंगल को इसलिए इतना महत्व दिया गया है कि मंगल रक्त का कारक माना जाता है। इसी मंगल के कारण जातक के साहस, उत्साह, ऊर्जा का समावेश होता है और मंगल को हिंसाप्रिय है। इसके विपरीत शनि अड़चनें डालने में प्रसिद्ध है, सूर्य ग्रह एक दूसरे को अलग करने में प्रसिद्ध है और राहु-केतु छाया ग्रह होने के पश्चात् भी प्रबल होते हैं, क्योंकि राहु शनि की भांति प्रभाव देता है तो केतु मंगल की तरह।







इन भावों से भी आगे सप्तम व अष्टम भाव का मांगलिक योग अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि सप्तम भाव पति या पत्नी का और अष्टम भाव आयु का माना जाता है और अष्टम भाव को दुर्भाग्य का भी माना जाता है। अब अगर सप्तम या अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों या लग्नेश के ऊपर क्रूर ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक में जिद व क्रोध का संचार अत्यधिक करेंगे, चतुर्थ भाव में यह योग हो जाए तो सुख को ही समाप्त कर डालता है, क्योंकि चतुर्थ स्थान सुख का माना जाता है। द्वादश स्थान व्यय का माना जाता है, अब अगर वहां पर इन ग्रहों का योग हो जाए तो यह जातक को व्ययशील बना डालते हैं।

ऐसी स्थिति में मांगलिक दोष निवारण करना आवश्यक है। मंगल के दोषों को समाप्त करने के लिए यह अति आवश्यक है कि हम किसी विद्वान से निवारण विधि प्राप्त कर इन दुर्घटनाओं, कष्टों और दोषों का निवारण करें।

मांगलिक दोष निवारण मस्तिष्क पर पड़ी दुर्भाग्य की रेखा को मिटा देने का सर्वश्रेष्ठ साधन है, जिसे संपन्न कर आप अपना गृहस्थ जीवन संवार सकते हैं। इसे करने के पश्चात् समस्त पूर्वजन्मकृत पापों, दोषों का नाश संभव है और जो कष्ट उसे गृहस्थ जीवन में भोगने होते हैं, वह नहीं भोगने पड़ते।

मंगल ग्रह के दोष-शमन हेतु सर्वोत्तम तो यही है कि आप किसी विद्वान से वैदिक और तंत्रोक्त दोनों ही प्रकार के अनुष्ठान कराएं। अगर आप किसी कारण से ऐसा कराने में असमर्थ हैं, तो निम्न उपाय करें—

● निम्न वस्तुओं का दान करते रहना चाहिए—लाल मूंगा, ताम्र (तांबा) धातु, मूसर लाल, गुड़, शुद्ध घी, रक्त चंदन, लाल कनेर, लाल केसर, लाल वस्त्र, सोना या लाल गेहूं। मूंगा रत्न धारण करें। मंगलवार के दिन आप 10,000 बार यह मंत्र पाठ करें—

ॐ ह्रिं क्लीं भौमाय नमः।

● मूंगा सात रत्ती का हो और उसे चांदी की अंगूठी में जड़वाकर



मंगल के दिन धारण करें। जब मंगल की महादशा में मंगल का अंतर हो तो इष्टदेव को स्मरण करें। रामायण के सुंदरकांड का अविरल पाठ करें। रामचरितमानस का पाठ भी मंगल ग्रह का शमन करता है।

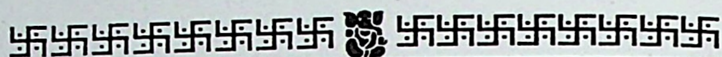
- लाल रंग को अधिकतर देखें और पहनें।
- क्रोध कम करें। काम वासना पर अंकुश रखें।
- मंगल यंत्र अपने पास सदैव रखें, यंत्र इस प्रकार है—
- अधिक उत्तेजना और काम-वासना से अलग रहें। विलासी न बनें। संयमित जीवन जिएं। मंगलवार को एक समय भोजन करें। हनुमान चालीसा या बजरंग बली का पाठ करें। क्रोध, आलस्य का त्याग करें, आलस्य और प्रमाद के कारण ही सारे काम बिगड़ते हैं। उदर के रोग आपको हो सकते हैं, इसलिए गंगाजल का सेवन और अर्द्धचंद्राकार रूद्राक्ष का धारण, रोगों का शमन कर सकता है।

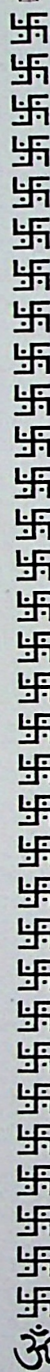
मंगल यंत्र

ॐ हूं श्री मंगलाय नमः

ॐ क्रां क्रीं क्रौ सः भौमाए नमः

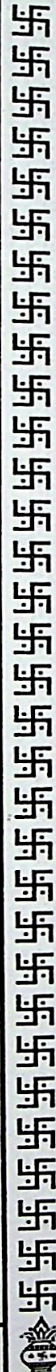
12 ॐ कुनाय नमः
11 ॐ धरात्मजाय नमः
13 ॐ रक्ताय नमः
14 ॐ भूमिपुत्राय नमः
9 ॐ लोहितां गाय नमः
10 ॐ सामगानां कृपाकराय नमः
8 ॐ लोहिताय नमः
15 ॐ भूमिदाय नमः
16 ॐ अंगारकाय नमः
6 ॐ महाकामाय नमः
7 ॐ सर्वकाम विरोधकाय नमः
1 ॐ मंगलाय नमः
17 ॐ यमाय नमः
18 ॐ सर्वरोग ग्रहारिणे नमः
5 ॐ स्थिरासनाथ नमः
4 ॐ धनप्राय नमः
3 ॐ ऋणहर्त्रे नमः
2 ॐ भूमिपुत्राय नमः
21 ॐ सर्वकामफल प्रदाय नमः
19 ॐ सृष्टिकर्त्रे नमः
27 ॐ सृष्टिकर्जे नमः



यहां विवेचन में केवल मंगल ग्रह को ही लिया गया है, फिर कभी राशि या भाव के अनुसार युति का विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगा। सुधी पाठकों को स्मरण कराना चाहता हूं कि ज्योतिष एक शुद्ध विज्ञान है, जिसकी सहायता से भावी जीवन को संवारकर सुनियोजित किया जा सकता है। नियति को बदलने की न मेरी क्षमता है, न नीयत।

❑❑❑











8

मंगल विवाह कब, कहाँ और किससे?

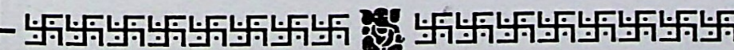
जन्मपत्रिका हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों का लेखा है जो कर्म व भाग्य के मिश्रण से व दशाओं के सहयोग से धन-लाभ का संकेत देती है। व्यक्ति के पास धन तभी आएगा, जब वह कर्म करे। कर्मक्षेत्र को प्रदर्शित करता है दशम् भाव। कर्मक्षेत्र के प्रतिफल के लाभ का भाव एकादश है। अर्थ संचय के लिए द्वितीय भाव व पूर्व जन्मों के कर्म के विषय में पंचम् भाव एवं इनको सफल बनाने वाला भाग्य स्थान (नवम् भाव) व इनके स्वामियों के लाभ में महत्वपूर्ण योगदान होता है। अगर उपरोक्त भावों के स्वामी शुभ स्थिति में हैं तो आर्थिक लाभ होता है। लाभ कारक दशा का स्वामी किस प्रकार लाभ देगा, देखें–

सूर्य दशा–अगर सूर्य शुभ स्थिति में है तो पिता से, राज्य पक्ष से, स्वयं के कार्य करने से, किसी सरकारी व्यक्ति से लाभ होगा।

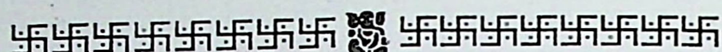
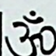
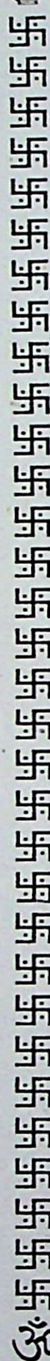
चंद्र दशा–चंद्रमा की शुभ दशा में माता से, जल संबंधित वस्तु अथवा सफेद वस्तु से या आपको भ्रमण करने से लाभ होगा।

मंगल दशा–मंगल की शुभ दशा में भाइयों से भवन से, भूमि आदि से लाभ होगा।

बुध दशा–बुध की शुभ दशा में चचेरे भाइयों से, व्यापार, ट्रेडिंग, मार्केटिंग, मैनेजमेंट व बुद्धि के प्रयोग करने से व विद्या से लाभ होता है।





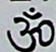
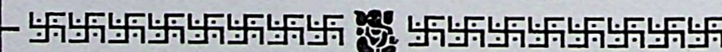
गुरु बृहस्पति दशा–गुरु बृहस्पति की शुभ दशा में पुत्र या पति से, धार्मिक व शुभ कार्यों से, बड़े-बड़े ठेके लेने से, धार्मिक संस्थान से, दान से, गुरु से, धार्मिक प्रकाशन से लाभ होगा।

शुक्र दशा–शुक्र की शुभ दशा में स्त्री से, सौंदर्य, ऐश्वर्य फैशनेबुल सामान से, गिफ्ट से, आधुनिक बदलाव से लाभ होगा।

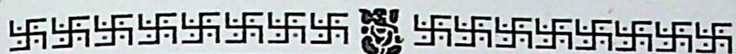
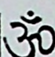
शनि दशा–शनि की शुभ दशा में वृद्ध जन से, दीर्घकालीन योजना से, लोहे समान से, व्यापार व भूमि भवन से, काली वस्तुओं से लाभ होता है।

सप्तम भाव में मंगल की स्थिति को आचार्यों ने वैवाहिक जीवन के लिए अत्यन्त कष्टदायक बताया है। मंगल सप्तम भावगत होने से जातक शारीरिक दृष्टि से प्रायः क्षीण, रूग्ण, धनहीन, शत्रुओं से आक्रान्त, चिन्ताओं में लीन रहता है। ईर्ष्या और द्वेष आदि अवनतिमूलक प्रवृत्तियाँ प्रबल होती हैं। मंगल क्रोध व विध्वंस को बढ़ाता है। जातक इसके कारण अपने धन और स्वास्थ्य की हानि कर डालता है। वह ऐसी स्थितियां होती हैं जिनसे बचा जा सकता है। किन्तु मंगल के द्वारा प्रभावित होने के कारण जातक का विवेक उचित निर्णय नहीं ले पाता। क्रोध की मात्रा अधिक हो जाती है। इन समस्त कारणों से जातक का दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है। उसके सुख निरन्तर कम होते जाते हैं। जातक की पत्नी साहस के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक नियमों में काफी आगे होती है।

अगर सप्तम भाव में मंगल ग्रहों की युति से दूषित हो तो दो स्त्रियों का सानिध्य प्राप्त होता है। अगर मंगल स्वराशिगत होकर यहां बैठा हो तो शीघ्र विवाह के अतिरिक्त एक और अवांछनीय स्थिति की ओर संकेत करता है। जातक की रुचि छोटी आयु की कन्याओं में अधिक होती है, वह प्राय: उनसे दैहिक सूत्र जोड़ने के लिए व्याकुल रहता है और नियमित रूप से आयु के किसी भाग



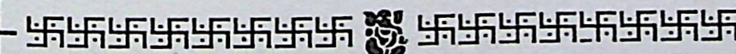



में उसका संबंध छोटी आयु की कन्या के साथ होता है। स्त्री वर्ग प्रायः उसे अनादर की दृष्टि से देखता है।

मंगल अगर पाप ग्रह की राशि में हो तो जातक की पत्नी को जीवन का संकट अवश्य रूप से होता है। शुभ ग्रह के साथ मंगल की स्थिति हो तो जातक के जीवनकाल में ही उसकी पत्नी प्राण त्यागती है। शनि मंगल के साथ हो तो जातक निन्दनीय कार्यों को सम्पादित करने में सिद्धहस्त होता है। केतु के साथ मंगल की युति जातक को वासनान्ध बनाती है, वह रजस्वला स्त्री से भोग करने में भी संकोच नहीं करता। मंगल अगर किसी शत्रु ग्रह के साथ हो तो जातक की एकाधिक पत्नियां अकाल कालकवलित होती हैं। शुभ ग्रहों की दृष्टि इस कुफल से रक्षा करती है। मंगल स्वगृही हो तो जातक की पत्नी चंचला, मनोहरा, कुटिलहृदया और गोपनीय कार्यों की ओर प्रवृत्त रहती है, इस स्थिति में विवाह एक होता है। मंगल पापी ग्रहों से युक्त हो तो दो विवाहों का योग होता है। जातक कमर की पीड़ा से दुःखी रहता है। एक उल्लेखनीय तथ्य है कि मंगल सप्तमस्य होकर आयु के सैंतीसवें वर्ष में जातक का प्रायः नाश करता है।

मंगल सप्तम भाव में जातक के यौन व्यवहार को भी प्रभावित करता है। ''भृगुसूत्र'' के अनुसार, अगर सप्तमभावस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि हो तो वासना के आवेग में जातक स्त्री के यौनांग का स्पर्श अपने मुंह से करता है। मंगल व राहु सहस्थिति में हों तो अपने से निम्न एवं अपने आश्रय में रहने वाली सेविका के साथ यौन संबंध बनाता है। ''सारावली'', ''वृहज्जातक'', ''भृगुसूत्र'', ''वृहत् पाराशर'' आदि समस्त ग्रंथों में इस तथ्य को रेखांकित किया गया है।

कहावत है कि जोड़े स्वर्ग से निश्चित होकर आते हैं और उनका मिलन पृथ्वी पर विवाह-संस्कार से होता है; अर्थात् सब कुछ विधि के अनुसार तय होने के बाद भी जब बेटी की आयु 20-21 के पार हो जाती है तो मां-बाप की चिंताएं बढ़ने लगती हैं। दिन-रात उन्हें






यही प्रश्न सालने लगता है कि हमारी लाड़ली के हाथ पीले कब होंगे? कहीं वह मंगली तो नहीं है?

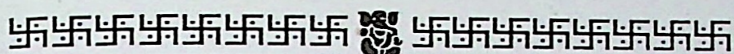
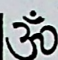
उसे पति कैसा मिलेगा? ससुराल कैसी और कहां होगी आदि। चिंता मत करिए ज्योतिष शास्त्र में आपके इन प्रश्नों के उत्तर हैं और आप स्वयं थोड़ा परिश्रम करके इन प्रश्नों के उत्तर जान सकते हैं।

ज्योतिष में लग्न कुंडली का प्रथम भाव जातक का स्वयं का होता है और इसके ठीक सामने वाला सातवां भाव पत्नी का होता है। इस भाव से प्रमुख रूप से विवाह का विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह भी पता कर सकते हैं कि जीवनसाथी का स्वभाव कैसा होगा? उसका चरित्र कैसा होगा, ससुराल कैसी मिलेगी और वर-वधू में आपसी मित्रता कैसी रहेगी?

किसी भी जन्मपत्रिका में विवाह-काल का निर्णय करते समय सर्वप्रथम विचारणीय यह है कि कन्या या जातक का विवाह उचित आयु में होगा अथवा विलम्ब से होगा या नहीं होगा? प्रायः कन्या के विवाह में विलम्ब होने की स्थिति में ही माता-पिता चिन्ताग्रस्त होते हैं। जब विलम्ब अधिक होने लगता है तो स्वयं कन्या की व्यग्रता भी बढ़ जाती है।

विवाह की समुचित अवस्था, विशेषतया कन्या के लिए 18-25 वर्ष तक है। परन्तु 22वें वर्ष के समाप्त होने के साथ-साथ कन्या के अविवाहित रहने की स्थिति में माता-पिता को कुछ विलम्ब अनुभव होने लगता है। 25वें वर्ष से माता-पिता के संग-संग कन्या स्वयं भी विवाह की ओर से अनिश्चितता की स्थिति में आ जाती है। विवाह में विलम्ब होगा अथवा विवाह होगा ही नहीं, इसके ज्ञान के लिए ज्योतिष से अधिक कोई अन्य विज्ञान नहीं है। सर्वप्रथम निम्नलिखित प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए: विवाह में अवरोध का क्या कारण है? कौन-कौन-से ग्रह बाधक हैं? किस ग्रहयोग के कारण अनेक प्रयत्न भी लगातार विफल होते जा रहे हैं?



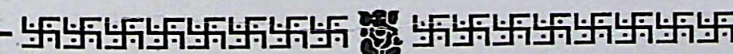
जब किसी कन्या की जन्मपत्रिका में शनि, चन्द्रमा अथवा सूर्य से युक्त या दृष्ट होकर सप्तम भाव अथवा लग्न में क्रमशः बैठा हो तो विवाह नहीं होता। नवांश चक्र भी अवश्य देखना चाहिए।

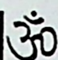
शनि और मंगल अगर लग्न में या नवांश लग्न में सप्तमस्थ हों तो विवाह नहीं होता, विशेषतः लग्नेश और सप्तमेश के बलहीन होने पर।

अगर क्रूर शनि और मंगल से सप्तम भावस्थ कोई भी ग्रह हो, उनमें से एक के सामने सूर्य अथवा गुरु बृहस्पति में से कोई ग्रह हो तो विवाह में अनावश्यक विलम्ब होता है तथा विवाह 25 से 30 वर्ष के बीच में होता है। अगर मंगल और शनि, शुक्र और चन्द्रमा से सप्तमस्थ हों; तब विवाह में विलम्ब होता है। शनि और मंगल अगर तुला लग्न वालों के लिए क्रमशः द्वितीयस्थ व अष्टमस्थ हों तो विवाह में विलम्ब होता है और विवाह का पूर्ण सुख नहीं मिलता है।

प्रायः माता-पिता की यही कामना होती है कि कन्या का विवाह कब होगा? इसका पता लगाने के लिए सप्तम भाव स्थित राशि, सप्तम भाव स्थित ग्रह व उस पर पड़ने वाली दृष्टियां, सप्तमेश की स्थिति व प्रकृति, सप्तमेश पर अन्य ग्रहों की दृष्टि व प्रभाव एवं महादशा आदि का विश्लेषण करते हुए निम्न बातों को ध्यान में रखते हुए विवाह के समय की गणना करें–

- सप्तमेश शुभ ग्रह की राशि में बैठा हो, शुक्र अपनी सप्तमेश अगर शुभ ग्रह से युति नहीं कर रहा हो या 6, 8, 12वें भाव में हो, शुक्र व चन्द्रमा पर मंगल या शनि की दृष्टि हो, 7 या 12वें स्थान में पाप ग्रहों की युति हो या पंचम भाव में चद्रंमा हो, सप्तम भाव में केतु हो व शुक्र की दृष्टि हो तो विवाह देरी से होता है।
- लग्नेश व सप्तमेश के स्पष्ट राशि व अंश जोड़ने पर जो राशि व अंश आते हैं, गोचर का गुरु बृहस्पति जब वहां आता है तो



विवाह का उचित समय समझें। जन्म राशि व अष्टमेश के योग तुल्य राशि व अंश पर जब गोचर का गुरु बृहस्पति आता है तो विवाह का समय समझें।

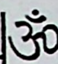
- शुक्र व चंद्रमा दोनों में से बलवान हो उसकी महादशा में गुरु बृहस्पति, चंद्र या शुक्र के प्रत्यन्तर में विवाह होता है। अगर सप्तमेश शुक्र के साथ हो तो सप्तमेश की अन्तर्दशा में विवाह का योग बनता है। इसके अलावा सप्तम भाव स्थित ग्रह, भाग्येश व कर्मेश की अन्तर्दशा भी विवाह कारक होती है।
- गोचर का गुरु लग्न कुंडली में 2, 5, 7, 9, 11वें भवन में आता है तो भी विवाह का समय माना गया है। लग्न, सप्तम व द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों एवं इन पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो शीघ्र विवाह होता है। लग्नेश व सप्तमेश कुंडली में समीप हों तो विवाह शीघ्र होता है एवं दूर हों तो विवाह देरी से होता है। साथ ही शुक्र जिस राशि में बैठा हो, उस राशि के स्वामी की महादशा में, गुरु बृहस्पति की अन्तर्दशा में विवाह योग बनते हैं। जन्मपत्रिका में सप्तमेश या शुक्र के साथ केंद्र स्थान में गोचरवश जब चंद्रमा, गुरु बृहस्पति आते हैं तो विवाह होता है। शुक्र लग्न या केन्द्र में बैठकर शुभ ग्रहों से युति कर रहा हो तो कन्या का विवाह शीघ्र होता है। इसके विपरीत होने पर विवाह में प्रायः विलम्ब होता है।

सप्तमाधिपति शुक्र, राहु, शनि से दृष्ट हो तथा सप्तम भाव दुर्बल हो तब विवाह 50वें वर्ष में होता है। चन्द्र चरराशिस्थ हों एवं लग्नाधिपति, सप्तमाधिपति व शुक्र दुर्बल तथा स्थिर राशिस्थ हों तो अधिक आयु में विवाह होता है।

शनि सप्तम भाव में, राहु लग्न में, शुक्र क्षीण हो तो अधिक आयु में विवाह होता है। सप्तमाधिपति नीचराशिस्थ तथा शुक्र अष्टमस्थ हो तो अधिक आयु में विवाह होता है।

राशियों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया गया है, राशियों के तत्व भी होते हैं, जो विवाह का समय तथा जीवन साथी के स्वभाव

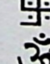
व मानसिकता से परिचित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विवाह के समय के निर्धारण में भी राशियों का निम्न वर्गीकरण बहुत महत्वपूर्ण है—

शुभ फलप्रदायक राशियां	—	कर्क, वृश्चिक, मीन
अर्ध फलप्रदायक राशियां	—	वृषभ, तुला, कुम्भ
अर्ध बन्ध्या राशियां	—	मेष, धनु, मकर
पूर्ण बन्ध्या राशियां	—	मिथुन, सिंह, कन्या

विवाह का समय निर्धारण करने में इन ग्रह-राशियों के वर्गीकरण को ध्यान में रखकर विचार करना चाहिए। अगर बन्ध्या राशियों में ग्रह होंगे तो विवाह के सम्पन्न होने में अनेक प्रकार के अवरोध उत्पन्न करेंगे। लग्न, लग्नेश, सप्तमेश, सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु बृहस्पति, शुक्र, लग्नस्य ग्रह, लग्नेश का नक्षत्राधिपति, सप्तमेश का नक्षत्राधिपति तथा सप्तमस्थ ग्रहों की राशि और नक्षत्र पर सतर्कतापूर्वक विचार करना चाहिए, कि विवाह का योग है अथवा नहीं?

अगर पापाक्रान्त राहु पुरुष या महिला के जन्मांग में नवम भाव में हो तो विवाह में अवरोध उत्पन्न करता है। सप्तमस्थ शनि भी विवाह में प्रायः विलम्ब उत्पन्न करता है।

उपरोक्त सूत्रों के अनुसार विवाह हेतु सर्वाधिक सशक्त समय का अनुमान सुगमता से लगाया जा सकता है। महादशा एवं अन्तर्दशा का निश्चय हो जाने के पश्चात् गोचर के ग्रहों का आश्रय लेना चाहिए। गोचर का गुरु बृहस्पति जब लग्न या चन्द्रमा पर से भ्रमण करे या वहां से सप्तम अथवा त्रिकोण स्थान में भ्रमण करे, तो विवाह निश्चित होता है। शनि भी विवाह में मुख्य भूमिका का निर्वाह करता है। शनि ग्रह द्वारा विवाह प्रतिबन्धक योग भी निर्मित होते हैं। अतः शनि के गोचर भ्रमण की अवहेलना नहीं की जानी चाहिए। सप्तम भाव पर शनि का प्रभाव, यदि सकारात्मक है, तो विवाह राशि विशेष में गोचर के शनि के भ्रमणकाल में सम्पन्न होता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि गोचर के शनि का सप्तम भाव पर






प्रभाव, गोचर के गुरु बृहस्पति का पंचम, नवम, लग्न या सप्तम भाव पर प्रभाव के साथ अन्तर्दशा में समान अन्तराल में ही विवाह तय होता है। उस समान समय के भाग को एक स्थान पर लिखकर उसी अन्तराल में जिन ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा हो, उस पर सतर्कतापूर्वक विचार करना चाहिए।

कन्या की ससुराल की दिशा व स्थान का निर्धारण जन्मपत्रिका में शुक्र की स्थिति से किया जाता है। शुक्र अगर शुभ स्थान, राशि में हो व कोई भी पाप ग्रह उसे नहीं देख रहा हो तो ससुराल आस-पास होती है। अगर शुक्र चतुर्थ भाव में, किसी पाप ग्रह से देखा जा रहा हो या शुक्र 6, 8, 12वें भाव में हो तो जन्मस्थान से दूर कन्या का ससुराल होता है। विवाह जन्म स्थान से किस दिशा में होगा? इसका निर्धारण भी शुक्र से ही किया जाता है। जन्मपत्रिका में जहां शुक्र बैठा है उससे सातवें स्थान पर जो राशि स्थित है उस राशि के स्वामी की दिशा में ही विवाह होता है। ग्रहों के स्वामी व उनकी दिशा निम्न प्रकार है—

राशि	स्वामी	दिशा
मेष, वृश्चिक	मंगल	दक्षिण
वृषभ, तुला	शुक्र	अग्निकोण
मिथुन, कन्या	बुध	उत्तर
कर्क	चन्द्रमा	वायव्य कोण
सिंह	सूर्य	पूर्व
धनु, मीन	गुरु बृहस्पति	ईशान
मकर, कुम्भ	शनि	पश्चिम

मतान्तर सें मिथुन के स्वामी राहु व धनु के स्वामी केतु माने गए हैं तथा इनकी दिशा नैर्ऋत्य कोण मानी गई है।

किस माह में विवाह होगा? इसका निर्णय करना एक जटिल प्रक्रिया है, परन्तु इसे ज्ञात कर सकना संभव अवश्य है। विवाह का मास जानने हेतु कतिपय नवांश सूत्रों, गोचर तथा प्रत्यन्तर्दशा का उपयोग करना चाहिए।





कतिपय जन्मांगों का अध्ययन तथा सम्बन्धित सूत्रों का प्रयोग, विवाह के समय की गणना में सहायक सिद्ध होगा।

सप्तम भावस्थ राशि के अनुसार जीवन साथी के सामान्य स्वभाव के विषय में जानें–

मेष–जिस कन्या के सप्तम भाव में मेष राशि होती है, उसका जीवन साथी धनवान होता है। इनका दांपत्य जीवन सुखी रहता है।

वृषभ–इनका जीवनसाथी सुंदर और गुणवान होता है। मधुरभाषी, और पत्नीभक्त होता है।

मिथुन–सामान्य रंगरूप वाला, समझदार और उच्च विचारों वाला जीवन साथी मिलता है। जीवन साथी व्यवसाय करने वाला होता है।

कर्क–सुंदर, तीखे नाक-नक्श वाला जीवन साथी मिलता है।

सिंह–अपनी बात मनवाने वाला, पर ईमानदार जीवन साथी मिलता है।

कन्या–जिस कन्या के सप्तम भाव में कन्या राशि होती है, उसे सुंदर और सुशील जीवन साथी मिलता है। विवाह के पश्चात् कन्या का भाग्योदय होता है।

तुला–सुशिक्षित, सुंदर और मर्यादापूर्ण बात करने वाला, मुसीबत के समय पत्नी के साथ चलने वाला जीवन साथी मिलता है।

वृश्चिक–जिस कन्या के सप्तम भाव में वृश्चिक राशि होती है, उसका जीवन साथी सामान्य शिक्षा, कठिन परिश्रमी, हर संकट में हँसने वाला होता है।

धनु–अपने सम्मान को सर्वोपरि समझना, अपने आप पर गर्व करने वाला और साधारण परिवार का जीवन साथी मिलता है।

मकर–पूजा-पाठ और गुप्त शक्तियों में आस्था रखने वाला, वचन का पक्का, शौकीन प्रवृत्ति का जीवन साथी मिलता है।

कुंभ–भगवान में श्रद्धा रखने वाला, मर्यादित व्यवहार वाला जीवन साथी मिलता है।

मीन–चंचल, गुणवान, धर्म के प्रति आस्थावान, सुंदर,





बातचीत में होशियार और कन्या के सौभाग्य में वृद्धि करने वाला जीवन-साथी मिलता है।

भारतीय संस्कृति में ज्योतिष शास्त्र को सदैव ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने भी अब यह तथ्य स्वीकार कर लिया है कि ग्रहों का मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सुविधा की दृष्टि से मनुष्यों का 12 राशियों में वर्गीकरण किया गया है। भारतीय ज्योतिष में राशि का निर्धारण जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति से होता है। सामान्य जातक इसे इस तरह समझ सकता है कि अगर जन्मपत्रिका में चन्द्रमा एक अंक वाले भवन में हो तो मेष राशि, 2 में वृषभ, 3 में मिथुन, 4 में कर्क, 5 में सिंह, 6 में कन्या, 7 में तुला, 8 में वृश्चिक, 9 में धनु, 10 में मकर, 11 में कुंभ और 12 में मीन राशि होगी।

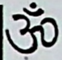
किसी आदमी को अगर अपनी जन्म तारीख, जन्म समय आदि ज्ञात न हो तो ऐसी स्थिति में उसकी जन्मपत्रिका बना पाना और जन्मकालीन चंद्र राशि को जान पाना संभव न हो सकेगा, तब उसकी राशि का निर्धारण उसके नाम के प्रथम अक्षर से इस प्रकार किया जायेगा–

जब जातक के पास जन्मपत्रिका हो तो प्रायः यह प्रश्न उठता है कि जन्म राशि और नाम राशि में से किसकी प्रधानता है? किस कार्य हेतु भविष्यफल अथवा मुहूर्त किस राशि से विचार किया जाएगा?

ज्योतिषशास्त्र में इन प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार दिया गया है–**विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मरशिः प्रधानत्वं नामराशिं न चिंतयेत।।** विवाह आदि सभी मांगलिक कार्यों में, यात्रा हेतु मुहूर्त विचार करते समय, ग्रहों के गोचर का फल जानने के लिए जन्म राशि को ही आधार बनायें, नाम राशि को नहीं।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिंतयेत्।। अर्थात् किसी देश अथवा नगर को निवास करने हेतु चुनते समय, मुकदमा दायर करते समय, जमीन-जायदाद को खरीदते और रजिस्ट्री करवाते समय, चुनाव में नामांकन भरते समय, नौकरी के चयन में नाम-राशि से ही विचार करें।



पाश्चात्य ज्योतिष में साधन पद्धति के अनुसार सूर्य की स्थिति से राशि का निर्धारण किया जाता है किंतु यह व्यवस्था भारतीय ज्योतिष में निर्दिष्ट चंद्र-राशि की अपेक्षा अत्यंत स्थूल सिद्ध हुई है। पृथ्वी का निकटतम ग्रह होने के कारण कोमल चंद्रमा मानव मस्तिष्क पर सर्वाधिक प्रभाव अच्छा या बुरा डालता है, अतः चंद्र राशि से ग्रहों के फलादेश को जानने की भारतीय प्रक्रिया विज्ञान सम्मत भी है।

वर्तमान समय में लगभग सभी समाचारपत्र, पत्रिकाओं में राशिफल बताया जाता है। इससे लोगों का हृदय बेतरह प्रभावित होता है। पीड़ित व्यक्ति के हृदय में यह प्रश्न उठता है कि वह अपनी राशि के प्रतिकूल ग्रहों की शांति किस प्रकार कर सकता है? प्रायः एक राशि में अनेक ग्रहों की विपरीत स्थिति होने से व्यक्ति यह निश्चय नहीं कर पाता है कि अशुभ ग्रहों में से किसकी शांति पहले करे और किसकी बाद में? किस ग्रह को महत्व दे और किसे छोड़ दे? हमारे ज्योतिष ग्रंथों में इस समस्या का अत्यंत सरल समाधान राशि मंत्रों के रूप में दिया गया है। आप अगर विपरीत परिस्थितियों से त्रस्त हों तो आप अपनी राशि के मंत्र का जप अनुष्ठान के रूप में स्वयं पूर्ण करें। मंत्र शक्ति के प्रभाव से आपको बहुत शान्ति मिलेगी। ग्रहों के प्रकोप का शमन होगा। संकट का निवारण होगा। निराशा में आशा का संचार होगा। समस्या का समाधान होगा।

सामान्य परिस्थितियों में राशि मंत्र का नित्य 108 बार जप करने से मानसिक शांति मिलती है। मंत्र की ऊर्जा से कार्यक्षमता का विकास होता है। व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है।

शास्त्रों में प्रत्येक राशि के मंत्र इस प्रकार वर्णित हैं—

मेष : ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः।

वृष : ॐ गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।

मिथुन : ॐ क्लीं कृष्णाय नमः।

कर्क : ॐ हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः।

सिंह : ॐ क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः।

कन्या : ॐ नमो प्रा प्रीतांबराय नमः।





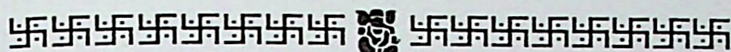

तुला : ॐ तत्वनिरंजनाय तारकरामाय नमः।
वृश्चिक : ॐ नारायणाय सुरसिंहाय नमः।
धनु : ॐ श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वदन्ताय नमः।
मकर : ॐ श्रीं वत्सलाय नमः।
कुंभ : ॐ श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।
मीन : ॐ क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

तंत्र शास्त्र में विभिन्न राशियों के बीजमंत्रों का भी उल्लेख मिलता है—

मेष : ॐ ऐं क्ली सौः।
वृष : ॐ ऐं क्लीं श्रीं।
मिथुन : ॐ क्लीं ऐं सौः।
कर्क : ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं।
सिंह : ॐ ह्रीं श्रीं सौः।
कन्या : ॐ क्लीं ऐं सौः।
तुला : ॐ ऐं क्लीं श्रीं।
वृश्चिक : ॐ ऐं क्लीं सौः।
धनु : ॐ ह्रीं क्लीं सौः।
मकर : ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः।
कुम्भ : ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं।
मीन : ॐ ह्रीं क्लीं सौः।

विस्तृत मंत्र को जपने में असमर्थ बीजमंत्र का प्रयोग कर सकते हैं। मंत्र अक्षरों का वह समूह है—जो अपने भीतर ध्वनि एवं ऊर्जा समेटे हुए है। विधिवत् जप करने पर मंत्र फल प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति की यह देन मानव के लिए वरदान ही है।

मंगल ग्रह का अच्छा-बुरा प्रभाव जातक के जीवन पर आखिरी सांस तक पड़ता रहता है। यह निर्णायक और दूर तक प्रभाव करने वाला होता है। शुभ भावों का स्वामी मंगल ग्रह सफलता की ऊंची चोटी पर पहुंचा सकता है, तो अशुभ मंगल अनेक परेशानियां भी खड़ी कर सकता है। इन परेशानियों का रूप प्रायः भयानक ही होता है। घात-प्रतिघात, दुर्घटना और भयंकर चोट-चपेट की स्थिति मंगल

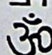




ग्रह के अशुभ प्रभाव से आ सकती है। मंगल को रक्तपात कराने में संकोच नहीं होता है।

ईश्वरीय कृपा प्राप्त करने के उपाय ज्योतिष शास्त्र में बताये गये हैं। दैवज्ञ ज्योतिषी हमें बुरे ग्रहों के प्रभाव कम करने और शुभ ग्रहों का प्रभाव बढ़ाने का मार्ग बतलाते हैं।

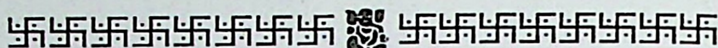
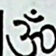
ये मार्ग पूजा-पाठ ग्रह-शांति दान इत्यादि हो सकते हैं। ऐसा ही एक उपाय है चमत्कारी रत्नों को पहनना। रत्न सदैव हमारे शरीर का स्पर्श करते रहते हैं। इन रत्नों से निकलने वाली किरणें और इनके रंग हमारे मन और शरीर को प्रभावित करते हैं। यह एक सरल उपाय है। इसमें पूजा-पाठ, संकल्प और मंत्र जप की कोई समस्या नहीं होती है। केवल जानकार रत्न विशेषज्ञ, ज्योतिषी से परामर्श लेकर आप अच्छा रत्न शुभ मुहूर्त में पहन सकते हैं और उसका लाभ उठा सकते हैं। इन अशुभ प्रभावों से बचने के लिए अगर आप मूंगा या उपरत्न पहनते हैं तो अनेक संकटों और दुर्घटनाओं से सुरक्षित रह सकते हैं।

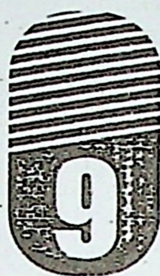
□□□







ग्रहों की युतियां और सरल उपाय

'लाल किताब' ज्योतिष-प्रेमियों के मध्य एक अत्यन्त लोकप्रिय पुस्तक है। लाल किताब की चर्चा उसके सरल उपायों को लेकर भी की जाती है। ग्रह-शांति के लिए लाल किताब के उपायों को ज्योतिष-प्रेमी बड़े विश्वास से बतलाते हैं। सबसे प्रमुख बात उपायों की सरलता एवं उस पर होने वाला कम व्यय है। ज्योतिष-प्रेमी लाल किताब के उपायों को जानने के लिए सदैव उत्सुक भी रहते हैं।

ब्रह्माण्ड (ZODIAC) के कण-कण में व्याप्त नारायण की तीन शक्तियों को काल ही गति देता है। तीनों लोकों में काल का साम्राज्य सर्वोच्च है। सृष्टि की हर रचना मरणशील है, परन्तु काल (समय) अनंत है, अनादि है।

मृत्युलोक पर काल की रहस्यमयी गति मानव मस्तिष्क को सदा ही भ्रमित करती रहती है। सुख के पलों में समय भागता अनुभव होता है, परंतु वेदना के समय में इसकी गति धीमी प्रतीत होती है। ज्योतिषयों के अनुसार इस समय का सीधा सम्बंध चारों ओर घूमते ग्रहों की गति से है। 12 राशियों व 27 नक्षत्रों से सजे इस चक्र में नवग्रहों का भ्रमण उस घड़ी को दर्शाता है, जो सूर्य के प्रकाश से ''अहोरात्रि'' की प्रक्रिया को जन्म देकर समय का बोध कराती है। ''अहो'' का अर्थ है दिन; यानि प्रकाश का आरम्भ तथा ''रात्रि'' का अर्थ है रात; यानि अंधकार का उदय। अगर ''अहोरात्रि'' का पहला तथा आखिरी अक्षर हटा दिया जाए, तो बचता है–होरा; यानि दिन के उदय और रात्रि के प्रारम्भ के मध्य का समय। संसार में,





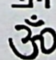


होरा जन्म और मृत्यु के मध्य झूलते प्रारब्ध को दर्शाता है। ज्योतिषियों ने काल के इस खण्ड में कालपुरुष की कुण्डली की रचना की। ज्योतिष का सम्पूर्ण रहस्य कालपुरुष की कुण्डली में ही छिपा है।

27 नक्षत्रों की छाया में घूमती 12 राशियां कालपुरुष की देह के 12 अंगों को दर्शाती है। क्रमानुसार मेष से मीन तक ये राशियां कालपुरुष के मस्तिष्क, मुख, हाथ, दिल, पेट, कूल्हे, पेडू, लिंग, जांघें, घुटने, लात व पांव का उद्घोष करती हैं। होरा शास्त्र के अनुसार, संसार के पूर्व क्षितिज पर मेष राशि के उदय के साथ ही कालपुरुष की आत्मा (सूर्य) ने देह में तथा देह ने लग्न के रूप में कुण्डली के प्रथम भाव में प्रवेश कर पहली सांस ली। शेष 11 राशियां भी क्रमानुसार कुण्डली के ग्यारह भावों में समा गयीं। यही प्रारम्भ था इस नश्वर संसार में जीवन का।

सतत गोचर में आज भी ग्रह कालपुरुष के ऊर्जा केन्द्रों को प्रभावित कर जीवन का संचालन कर रहे हैं। कालपुरुष की कुण्डली ज्योतिष शास्त्र की रचना का आधार है। मानव योनि में कुण्डली के 12 भाव जन्म से मृत्यु तक प्रारब्ध के विभिन्न रूपों को दर्शाते हैं। जन्म के समय इन भावों में समाई राशियां प्रारब्ध को मानवदेह से जोड़ती हैं, जिनके द्वारा जातक सुख या दुःख का अनुभव करता है। नवग्रहों की विभिन्न भावों में स्थितियां प्रारब्ध को ही दर्शाती हैं, जो दशानुसार नवग्रहों से प्रभावित होकर जातक के पुरुषार्थों को जगाते हैं। पुरुषार्थ से कर्म का निर्माण होता है तथा कर्म से प्रारब्ध का। जातक की जन्मपत्रिका में वह राशि जो शुभ ग्रहों के प्रभाव में है, जातक के उस अंग को शक्ति प्रदान करती है, इसी प्रकार वे राशियां जो क्रूर ग्रहों के अभाव में हैं—जातक के अंगों को रोग प्रदान करती हैं।

लाल किताब में फलादेश के सिद्धांतों को समझने से पूर्व ग्रहों एवं भावों की प्रवृत्ति का पूर्णरूपेण अध्ययन अनिवार्य रूप से करना होगा। लाल किताब में लग्न में सदैव एक अंक लिखा जाता है। किसी भी जातक की कुण्डली लाल किताब के अनुसार बनाने के लिए पारम्परिक ज्योतिष के अनुसार बनायी गयी कुण्डली में






ग्रहस्थिति उन्हीं भावों में रहती है, केवल कुण्डली के विभिन्न भावों में अंकित संख्या परिवर्तित हो जाती है।

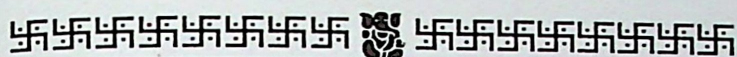
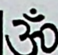
मनीषियों के अनुसार, समय की दो प्रमुख विशेषताएं ये हैं—

1. निरंतर गतिशीलता और 2. समय अपनी निश्चित गति से सदैव चलता रहता है और वह परस्पर विरोधी गुण-धर्मों को आश्रय देता है। इसलिए एक ही समय में जन्म एवं मृत्यु, हार एवं जीत, लाभ एवं हानि और सुख एवं दुःख जैसी परस्पर विरोधी घटनाएं होती हैं। वस्तुतः समय को इन परस्पर विरोधी घटनाओं के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव से बल मिलता है जिससे उसमें गतिशीलता बनी रहती है। इस प्रकार समय का स्वभाव है कि वह एक ही समय में कुछ लोगों को शुभ और कुछ लोगों को अशुभ लगता है।

यह समय किसके लिए शुभ और किसके लिए अशुभ है, इसका निर्णय परिणाम पर आधारित है। जिस जातक को इच्छित परिणाम मिलता है उसके लिए वह समय शुभ और जिसको अनिच्छित परिणाम मिलता है, उसके लिए वह समय अशुभ होता है। इस प्रकार इच्छाओं की पूर्ति हो, वह समय शुभ और जब इच्छाओं की पूर्ति न हो, वह समय अशुभ माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार, दिन के विभिन्न समयों को भिन्न-भिन्न ग्रहों का प्रतिनिधि माना जाता है। सूर्य निकलने के पश्चात् दिन का प्रथम भाग गुरु बृहस्पति के आधिपत्य में होता है। दोपहर बाद का समय सूर्य का कहलाता है। चांदनी रात चन्द्र का प्रतिनिधित्व करती है। रात्रि में चांदनी के अभाव में समय का प्रतिनिधित्व शुक्र करता है। काली रात में जब बादल आकाश में छाए हुए हों, तो उस दिन का प्रतिनिधि शनि होता है। रात्रि से पहले संध्या का समय राहु का होता है। प्रातःकाल सूर्योदय का समय केतु का प्रतिनिधित्व करता है। दोपहर का समय मंगल का प्रतिनिधित्व करता है।

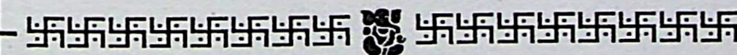
मंत्रों में अथाह शक्ति होती है और इनके द्वारा रोगों का निदान सम्भव है। कहा जाता है जो मन को स्पंदित कर दे, वही मंत्र है। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार, जिस ग्रह का अधिकार प्राणी

के जिस अंग पर होता है, वह उसी अंग को दुष्प्रभावित करता है और उसी ग्रह की दशा, महादशा, अंतर्दशा, मारकदशा, अंतर, प्रत्यंतर आदि में यह अपना प्रभाव दिखाता है। ज्योतिष में यह स्पष्ट वर्णन भी है कि कौन-सा रोग किस ग्रह के अशुभ होने से होता है और इसका निदान क्या है?

ज्योतिष में जातक के शरीर पर रक्त पर मंगल का अधिकार माना जाता है। जन्म-पत्रिका में मंगल तथा उसके साथ बैठने वाले अन्य ग्रहों की स्थिति को देखकर यह पता लगाया जा सकता है कि किसी जातक को रक्तचाप होने की सम्भावना है या नहीं? कुण्डली में मंगल अगर बलवान हो और क्रूर अथवा अग्नि तत्व प्रधान ग्रहों के साथ बैठा हो तो उच्च रक्तचाप तथा अगर निर्बल हो और क्षीण चंद्र के साथ बैठा हो, तो निम्न रक्तचाप होता है। मंगल को मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी माना जाता है। कालपुरुष की कुण्डली में ये राशियां क्रमशः सिर और गुप्तांगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। स्त्री जातक की कुण्डली में चन्द्र-मंगल के योग से मासिक धर्म होता है। यहां अगर मंगल बद हो, तो रक्त में विकार उत्पन्न करता है। यह स्थिति, जन्मपत्रिका में षष्ठ भाव में शनि के होने और शुक्र के दुष्प्रभावी होने के कारण होती है। इसमें अगर मंगल भी शामिल हो तो ब्लडशुगर की सम्भावना बलवती हो जाती है। अतः यदि केवल मधुमेह हो, तो शुक्र और यदि ब्लडशुगर हो, तो मंगल एवं शुक्र दोनों की शांति करनी चाहिए। हालांकि इस रोग में प्रधानता शुक्र की ही रहती है क्योंकि ज्योतिष में शुक्र को जननांगों और वीर्य का कारक माना जाता है। इस तरह शुक्र के अशुभ होने पर गुप्त रोगों की ही सम्भावना रहती है। अतः ऐसे जातकों को शुक्र की आराधना करनी चाहिए। जातक के हृदय पर सिंह राशि का प्रभाव होता है, जिसके स्वामी राजा सूर्य माने जाते हैं। अतः हृदय से सम्बंधित रोगों का कारक सूर्य को माना जाता है। कुण्डली में यदि सूर्य पाप से आक्रांत हो या शनि के साथ हो, तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।

लाल किताब की एक विशेषता यह भी है कि लाल किताब में दिए गए सूत्रों के आधार पर ज्योतिषी ऐसे जातक को भी उपाय बता सकता है जिसकी जन्मपत्रिका न हो।





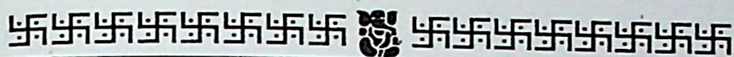
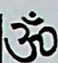

लाल किताब में ग्रहों की स्थिति को समझने के लिए पर्याप्त चिन्तन करना चाहिए तभी लाल किताब के उपाय समझ में आ सकते हैं। लाल किताब में ग्रह अपना भाव बनाकर कारकत्व भी बदल देते हैं। चौथे घर में चन्द्रमा को माता का प्रतिनिधि माना जाता है, वहीं छठे भाव में बैठा चन्द्रमा नानी का प्रतिनिधि भी बन जाता है। बारहवें घर में बैठा चन्द्रमा स्वास्थ्य का प्रतिनिधि होता है। इस प्रकार विभिन्न भावों में ग्रहों की स्थिति उनके कारकत्व में भिन्नता उत्पन्न कर देती है। लाल किताब में उपायों का विचार करते समय इसका ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। लाल किताब में ग्रहों की स्थिति को व्यावहारिक रूप से समझने के लिए ग्रहों के अशुभ होने की निशानियां भी बतायी गयी हैं, जिनको पहचानकर सम्बंधित ग्रहों का सटीक उपाय दिया जा सकता है।

लाल किताब में जातक को अच्छा इन्सान, गृहस्थ बनने के ऊपर बल दिया गया है, अगर मनुष्य अच्छा गुण अपना लेता है तब उसकी बहुत-सी परेशानियां कम हो जायेंगी। लाल किताब ने हाथ के नाखून को राहु माना है, अब अगर कोई जातक अपना नाखून बढ़ा लेता है तब समझो उसके ऊपर राहु का बुरा प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो जाएगा क्योंकि उसके नाखून में गन्दगी चली जायेगी और जो कुछ खाये-पीयेगा उसके शरीर के भीतर गन्दगी जाकर रोग उत्पन्न कर देगी। मनुष्य जैसा खान-पान बना लेता है उसका प्रभाव उसके ऊपर पड़ना शुरू हो जाता है।

लाल किताब ने शुक्र को पत्नी और राहु को राक्षस माना है। अब अगर किसी जातक की कुण्डली में शुक्र, राहु एक साथ बैठे हैं या उनकी दृष्टि में बैठे हैं और जातक की पत्नी नाखून बढ़ाना शुरू कर देगी या पत्नी दिन में काला सुरमा डालकर दिनभर आंखें झपकाती फिरेगी, तब जातक स्वयं परेशानी में आ जाएगा।

जन्मपत्रिका में शनि छठे घर में बैठा होगा तब उस जातक का मकान या तो गली के अन्त में होगा या दो गलियों वाला मकान होगा, अर्थात् उसका मकान दो गलियों के मध्य में होगा।

जहां पर दो हकीम बैठते हैं उनके विचारों में अन्तर होता ही है, इसी प्रकार अलग-अलग ज्योतिषियों के विचारों में कुछ-न-कुछ

फर्क होता है लेकिन हर ज्योतिषी का अपना-अपना अनुभव होता है, उनमें से जो अच्छा लगे उसे अपना लें, जो अच्छा न लगे उसे छोड़ दें।

ज्योतिष के अनुसार वैज्ञानिक बनने के लिए परिस्थितियां और गुण प्रदान करने में ग्रहों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वैज्ञानिक बनने के ज्योतिषीय योग इस प्रकार हैं–

- नवांश कुण्डली में शुक्र पराक्रम भाव में बैठकर शुभ मंगल से दुष्ट हो, तो जातक परिश्रमी और व्यवसायी होगा। लाभेश सूर्य अष्टस्थ होकर धन भाव में स्थित हो और पराक्रम को देखे, तो जातक को शोध से यश दिलाता है।
- वैज्ञानिक बनने के लिए आवश्यक है कि जातक में तीक्ष्ण बुद्धि के साथ-साथ कठिन परिश्रम की भी क्षमता हो। इसके लिए कुण्डली में मंगल और बुध का लग्नेश होना अनिवार्य है।
- दशम भाव में पंचमेश शुक्र का उच्चराशिस्थ होना जातक को मेधावी बनाकर उत्कृष्ट बुद्धि प्रदान करता है। ऐसा जातक अपने अनुसंधान से ख्याति अर्जित करता है।
- कुण्डली का पंचम भाव विद्या और बुद्धि का भाव है अतः पंचम भाव में शुभ ग्रहस्थिति होना आवश्यक है। इस भाव में दशमेश और पराक्रमेश की युति होना, लाभ या लाभेश से दृष्टि सम्बन्ध होना जातक को मेधावी बनाता है और वह अनुसंधान क्षेत्र में सम्मान प्राप्त करता है।
- जन्मकुण्डली का अष्टम भाव शोध अनुसंधान और खोज का भाव होता है। इस भाव में यदि लग्नेश और पंचमेश की युति हो, तो वह जातक को अनुसंधान क्षेत्र में सफलता दिलाती है। अष्टमेश और लग्नेश का राशि परिवर्तन योग भी जातक को वैज्ञानिक बनाने में सहायता करता है।
- लग्न में बैठा मंगल जातक को बुद्धिमान बनाता है। यह जातक को मानसिक रूप से क्रियाशील बनाता है। इससे वह अन्तर्प्रज्ञा का धनी बनता है, जो उसे इस क्षेत्र में मार्गदर्शन करती है।



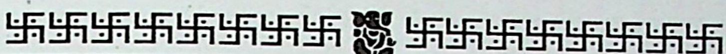



- अगर चन्द्र कुण्डली के छठे भाव में अष्टमेश बुध और पराक्रमेश शनि की युति हो, तो वह अनुसंधान क्षेत्र में जातक को लाभ देती है।

श्रीमद्‌भागवत गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने लिखा है कि यह सारा विश्व मेरे से उत्पन्न हुआ है और मेरे में ही समा जायेगा; इसलिए भगवान हमारे माता-पिता हैं और हम लोग उनकी सन्तान हैं लेकिन कर्म अनुसार इस विश्व में अपने अच्छे और बुरे कर्मों को भोगता है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि भाग्य के साथ में पुरुषार्थ करो। अब कुछ लोग कहते हैं कि अगर भाग्य है तभी पुरुषार्थ होगा लेकिन भगवान हम सबको अवसर प्रदान करते हैं लेकिन उनमें से कुछ लोग उसका उपयोग करके ऊपर जाते हैं और कुछ लोग दुरुपयोग करके नीचे चले जाते हैं। अशुभ स्थिति से बचने के लिए ही उपाय करे जाते हैं।

ज्योतिष प्रकाश देकर मार्ग दिखाती है और अगर जातक ज्योतिष के नियम का पालन करते हैं तो अपनी किस्मत बदल सकते हैं। अब कुछ लोग कहते हैं कि जो भगवान ने लिख दिया वह बदला नहीं जा सकता है, हां—मेरे विचार से वह बदला नहीं जा सकता है लेकिन कुछ उपाय करके कम किया जा सकता है। विद्वानों का मत है कि जब रोगी हो जाते हैं तब डॉक्टर के पास क्यों जाते हैं, अगर सर्दी का मौसम है तो गर्म कपड़े क्यों पहनते हैं? अगर रात को अंधेरा है तब मोमबत्ती क्यों जलाकर प्रकाश करते हैं? डॉक्टर के पास जाना, वातावरण के हिसाब से कपड़ा, अंधेरे में लाईट जलाना यह सब हमारे उपाय हैं।

□□□




10

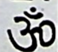
विघटन का कारण मंगल ?

नवग्रहों का सेनापति मंगल है। सेनापति का कार्य ही युद्ध करना या युद्ध के समय सेना का संचालन करना है। मंगल ग्रह अगर सेनापति है तो यह बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है कि हर समय जीवन में उथल-पुथल रखे या पूरे जीवन को ही रण क्षेत्र बनाकर रख दे। ग्रहों के अच्छे-बुरे फल का आधार उनकी प्राकृतिक आदत और जैसी संगत बैठिए वैसा ही फल दीन है।

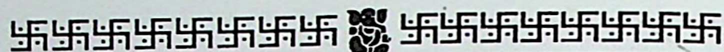
यह बात मैं पहले ही बतला चुका हूं कि मंगल मेष तथा वृश्चिक राशि का स्वामी है। अतः अगर मंगल मेष अथवा वृश्चिक राशि में स्थित हो तो उसे ''स्वग्रही'' कहा जाएगा। किन्तु मेष राशि के एक से 18 अंश तक मंगल का ''मूलत्रिकोण'' तथा 19 से 20 अंश तक ''स्वक्षेत्र'' कहा जाता है। मकर के 28 अंश तक मंगल उच्च का तथा कर्क के 28 अंश तक नीच का होता है। मंगल जिस भवन में भी बैठता है, वह वहां से तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें और नौवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे एवं आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें, चौथे व आठवें भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

जिस जातक की जन्मपत्रिका में मंगल मूलत्रिकोण (मेष राशि के 18 अंश तक) में हो, वह सामान्य धनी, नीच, स्वार्थी, लम्पट, क्रोधी, चरित्रहीन, दुष्ट, निर्दयी तथा अपयशी होता है।

जिस जातक की जन्मपत्रिका में मंगल स्वक्षेत्री (मेष राशि का)






हो, वह प्रायः जमींदार, किसान, साहसी, बलवान तथा यशस्वी होता है।

नीच राशिगत मंगल का फल—जिस जातक की जन्मकुंडली में मंगल नीच राशि (कर्क) का हो, वह कृतफल तथा नीच स्वभाव का होता है।

शत्रु क्षेत्रगत मंगल का फल—जिस जातक की जन्मकुंडली में मंगल अपने शत्रु (बुध) की राशि (कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह दीन, मलिन, विकलांग तथा व्याकुल रहने वाला होता है।

मित्र क्षेत्रगत मंगल का फल—जिस जातक की जन्मकुंडली में मंगल अपने मित्र (सूर्य, चंद्र अथवा गुरु) की राशि (सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन) में बैठा हो, वह धनवान तथा मित्रप्रेमी होता है।

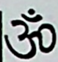
मंगल कब और कितना कष्टदायक हो जाता है, किस प्रकार कौन-से रोग को जन्म देता है अथवा जन्मपत्रिका के किस भाव में कितना अमंगलकारी होता है या किस ग्रह के साथ कितना क्रूर बन जाता है? अब हम इस विषय में चर्चा करेंगे। ऐसे मंगल से बचाव हेतु कभी तो उसको बलवान् करना होता है तथा कभी बलवान मंगल की शांति करानी अनिवार्य हो जाती है।

मंगल एक हिंसात्मक ग्रह माना गया है और जब छठे या एकादश भावों का स्वामी बन जाए तथा साथ ही केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी भी हो, तो फिर ऐसे मंगल से बढ़कर हिंसा का सूचक कोई दूसरा ग्रह नहीं हो सकता। अब अगर ऐसे मंगल का प्रभाव मन पर हो; अर्थात् चतुर्थ भाव और चंद्रमा आदि सभी पर हो, तो हिंसा की वृत्ति इतनी प्रबल हो जाती है कि जातक किसी की भी जान तक ले सकता है।

जन्मपत्रिका में षष्ठ भाव चोट से संबंधित है और इधर षष्ठ से षष्ठ भाव; अर्थात् एकादश भाव भी "भावात् भावम" के सिद्धांतानुसार षष्ठ भाव की भांति चोट देने वाला है। अतः जब मंगल, केतु इनके द्वारा अधिष्ठित राशियों के स्वामी, षष्ठेश और एकादेश—किसी भाव तथा भावाधिपति पर अपना प्रभाव डाल रहे हों तो वह भाव शरीर के जिस अंग का प्रतिनिधि होगा, अवश्य चोटग्रस्त होता है। मंगल हिंसाप्रिय और क्रूर ग्रह है। यह जन्मकुंडली







के जिस भाव पर प्रभाव डालता है, उस पर चोट लगती है। केतु भी मंगल की भांति चोट लगाता है।

मंगल को दशम भाव में दिक्‌बल की प्राप्ति होती है लेकिन दशम से सप्तम अर्थात् चतुर्थ भाव में मंगल में शून्य दिक्‌बल होता है। अब अगर मंगल चतुर्थ भाव में नीच राशि "कर्क" में स्थित हो तो और भी बलहीन होकर चतुर्थ तथा प्रथम भाव को हानि पहुंचाएगा। ऐसे जातक को छाती का कोई न कोई रोग होने की संभावना रहती है। विशेषतया ऐसी स्थिति में, जब मंगल पर कोई शुभ दृष्टि न हो। लग्न लग्नेश और अष्टम–अष्टमेश पर पड़ने पर प्रभाव का मृत्यु का ढंग प्रदर्शित करता है। अतः अगर इन सब पर मंगल का प्रभाव हो, विशेषकर जब मंगल केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी हो या छठे तथा ग्यारहवें (षष्ठ-एकादश) भाव का स्वामी हो तो जातक की मृत्यु हत्या द्वारा संभावित है जबकि द्वितीयेश अथवा षष्ठेश का भी मृत्यु लाने में हाथ हो।

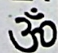
मंगल अग्नि तत्व प्रधान है। विध्वंस करना उसका प्राकृतिक स्वभाव है। प्लेग, सूजन, शस्त्र से आघात, मस्तिष्क विकार, रक्तस्राव, टाइफाइड, निमोनिया, गर्भपात, नाक की फुंसियां, मूत्रपिंड के विकार, बवासीर, भगंदर और उष्णता के विकार आदि रोग मंगल के कारण होते हैं।

मेष : मेष राशि में मंगल हो तो जातक को मस्तिष्क विकार एवं अम्लपित्त के रोग होते हैं। मेष लग्न में मंगल होने पर कुष्ठ रोग, बवासीर, फोड़ा-फुंसियां, कंठ, दमा, अर्श, भगंदर, मेदवृद्धि, मलोत्सर्ग क्रिया में अवरोध आदि रोग होते हैं।

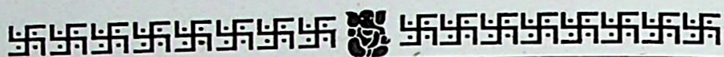
वृष : मंगल वृषभ राशि मे हो तो जातक के स्वर में विकृति आती है। वृष लग्न में मंगल होने पर मुंह, कंठ, श्वास, नलिका, अर्श, भगंदर, मेदवृद्धि, मलोत्सर्ग क्रिया में अवरोध जैसे रोग होते हैं।

मिथुन : शल्य चिकित्सा करनी पड़े ऐसे रोग विकार मिथुन राशि में मंगल होने पर उत्पन्न होते हैं। मिथुन लग्न में मंगल होने पर फेफड़े, बांह एवं कंधों में विकार उत्पन्न होते हैं। खांसी-दमा एवं रक्त विकार भी उत्पन्न होते हैं।

कर्क : कर्क राशि में मंगल होने पर नेत्रों को कष्ट, मैथुन








से होने वाले रोग, मदिरापान से होने वाले रोग, दंतरोग उत्पन्न होते हैं। कर्क लग्न में मंगल होने पर दमा, खांसी, फेफड़ों के रोग, एवं प्रसूति ज्वर आदि रोग होते हैं।

सिंह : सिंह राशि में मंगल हो तो उदर रोग, गर्भपात के कारण कष्ट जैसे विकार उत्पन्न होते हैं। सिंह लग्न में मंगल होने पर जातक की कामवासना बढ़ती है, लेकिन सिंह लग्न में मंगल होने पर ऐसे जातक शीघ्र ही रोग-मुक्त भी हो जाते हैं।

कन्या : कन्या राशि में मंगल होने पर जातक में उष्णता के विकार उत्पन्न होते हैं। कन्या लग्न में मंगल हो तो संसर्गजन्य रोग होते हैं।

तुला : तुला राशि में मंगल होने पर जातक में उदासीनता बढ़ती है। जातक का किसी भी काम में मन नहीं लगता। तुला लग्न में मंगल होने पर अनेक प्रकार के रोगों का जन्म होता है।

वृश्चिक : वृश्चिक राशि में मंगल होने पर जातक में उष्णता के विकार उत्पन्न होते हैं। वृश्चिक लग्न में मंगल हो तो मलोत्सर्ग तथा गुदा के रोग उत्पन्न होते हैं।

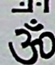
धनु : धनु राशि में मंगल होने पर अपघात, व्रण, मज्जातंतु यां फेफड़ों से संबंधित रोग उत्पन्न होते हैं। धनु लग्न में मंगल होने पर खेल-कूद या दुर्घटना के कारण जातक को कष्ट पहुंचता है।

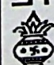
मकर : मकर राशि में मंगल होने पर त्वचा रोग, वात विकार, संधिवात, उष्णता के विकार, शल्य चिकित्सा के कारण कष्ट आदि उत्पन्न होते हैं। मकर लग्न में मंगल होने पर मधुमेह, जलना, जख्म होना जैसे विकार उत्पन्न होते हैं।

कुंभ : कुंभ राशि में मंगल होने पर उष्णता तथा त्वचा विकार होते हैं। कुंभ लग्न में मंगल होने पर रक्त विकार एवं संसर्गजन्य रोग उत्पन्न होते हैं।

मीन : इनका गुस्सा तेज होने के कारण ये किसी के वश में नहीं आते। ये लोग केवल स्वयं पर भरोसा करते हैं, दूसरों पर भरोसा करने से ये कतराते हैं।

आज के जटिल युग में विभिन्न समस्याओं, चिन्ताओं और प्रयत्नों के अनन्तर विवाह सम्पन्न होता है। कन्या का विवाह इस







दृष्टि से और भी चिन्तीय होता है। परिणय संपन्न होने के पश्चात् जीवन का चिर-प्रतीक्षित उद्देश्य कई बार क्लेश में फंस जाता है। दम्पति पारस्परिक परिचय के संदर्भ में शारीरिक और मानसिक सामंजस्य के उद्‌गम दुःखी करते हैं। किन्तु सामंजस्य की निषेधात्मक स्थिति में स्वप्नों के शिविर एक-एक करके टूटने लगते हैं। असहमति, असन्तोष के कारण किसी पक्ष से संधनित हुए हों, उनसे हताहत होता है—सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन। वैवाहिक जीवन में उपस्थित विडंबनाएं जीवन में लघुत्तम से महत्तम तक त्रासदी के शिलालेख लिखती हैं।

आज समाज में यह मिथ्या भ्रम पल्लवित होता जा रहा है कि मंगली कन्याओं अथवा युवकों का जीवन विघटनकारी स्थितियों से पूर्णतः पृथक् नहीं किया जा सकता। अगर मंगली कन्या का विवाह मंगली युवक के साथ कर दिया जाए तो वह दोष दूर हो जाता है। इस बात की उपयोगिता का उल्लेख इसी पुस्तक में, मैं विस्तार से कर चुका हूं। प्रायः मंगली कन्याओं के साथ जन्मांगों के मेलापक के अभाव में अमंगलकारी स्थितियां गतिशील होती हैं, परन्तु ऐसी अन्तिम रूपेण नहीं समझना चाहिए कि अगर वर-वधू में से कोई भी मंगली नहीं तो किसी प्रकार का अमंगल हो ही नहीं सकता। अगर द्वितीय अथवा सप्तम भाव पापाक्रान्त है, या वैवाहिक सुख का कारक शुक्र अनष्टिकारी ग्रहों के प्रभाव में है तो विघटनकारी स्थितियां जन्म लेती हैं।

यह ग्रह स्थितियां क्या है? यह ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि एक ही प्रकार की ग्रह स्थितियां अनेक प्रकार की विघटनकारी स्थितियां उत्पन्न करती हैं। व्यावहारिक कारण तो प्रायः सर्वविदित है। विचारों की भिन्नता, चरित्रहीनता, परिवार जनों द्वारा वधू की आक्रामक अनर्गल आलोचना, पति द्वारा पत्नी की उपेक्षा अन्य परिवार जनों के प्रति अत्यधिक झुकाव, आधुनिकता, आयु, आय की न्यूनता के कारण इच्छाओं की पूर्ति में बाधा, कन्या का अपने माता-पिता के प्रति अत्यधिक मोह और उन्हीं के पास अधिक बने रहने की उत्कृष्ट अभिलाषा, विदेश गमन, सन्तति हीनता, कुरूपता और कभी-कभी सौन्दर्य की अधिकता आदि विघटनकारी स्थितियां उत्पन्न करने के कारण बनते हैं।






किस ग्रह द्वारा विघटन संभव है, यह कहना बड़ा कठिन कार्य है। कोई भी ग्रह कभी भी विघटनकारी स्थितियां उत्पन्न कर सकता है, अगर वह कुछ विशेष ग्रहों द्वारा स्थिति विशेष में पापाक्रान्त है।

दाम्पत्य जीवन को अंसतोष के विष से बचाना सामाजिक हितों की सुरक्षा के लिए अनिवार्य है।

मांगलिक होने के कारण अनेक कन्याओं के जीवन में अनेक विघटनकारी स्थितियां जन्म लेती हैं। आधुनिकता में समाज का एक वर्ग अत्याधुनिक हो गया है जो जन्मपत्रिका का मिलान, मंगल-दोष को ढकोसला अथवा मूर्खता समझता है। अनेक वर-वधू दाम्पत्य सूत्र के बंधन से पूर्व एक सुखी, समृद्ध और वैभवशाली जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं। विवाह की कल्पना उनमें जीवनदायी प्रेरणा संचरित करता है। विवाह के पश्चात् जब स्वप्न वास्तविकता में परिणत नहीं होते तो वे एक वेदना तथा निरंतर चिन्ताग्रस्त, असंतुलित मानसिकता आदि से भरे हुए जीवन का आरम्भ करते हैं। जन्मपत्रिकाओं का मिलान किये बिना हुए विवाह में उनकी अज्ञानता का जो मूल्य उन्हें चुकाना पड़ता है, विवाह से पूर्व उसकी कल्पना से वे अपरिचित होते हैं। अगर कन्या की जन्मपत्रिका में मंगली दोष विद्यमान है तथा वर के जन्मांग में मंगली दोष नहीं है तो जीवन में विघटनकारी स्थितियां बनती हैं। अगर मंगल ग्रह के कारण विघटन हुआ हो तो मंत्र जाप से उन स्थितियों में सुधार होता है और थोड़े ही समय में वैवाहिक जीवन मधुर हो जाता है।

जन्मपत्रिका में जातक के अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा नहीं होता। कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। शास्त्रानुसार हमारे जीवन का संबंध हमारे पूर्वजन्म में किए कर्म से होता है।

यही कारण है कि अनेक लोग इस जन्म में बुरे कर्म करने पर भी सुखी होते हैं। ऐसे लोग इस जन्म में किए हुए कर्मो का फल अगले जन्म में अवश्य पायेंगे। अतः यही माना जाएगा कि इस जन्म में उन्हें पूर्वजन्म के शुभ कर्मों का फल मिल रहा है, जिस कारण घृणित कार्य करने पर भी वे सुखी हैं।

प्राचीन आचार्यों ने यह फल दो प्रकार का माना है—दृढ़ तथा अदृढ़। दृढ़ कर्मों का कोई उपचार नहीं है। उनका फल तो भोगना



ही होगा, किन्तु अदृढ़ कर्मों का उपचार या शांति पूजा, दान, जप और रत्न धारण आदि से किया जा सकता है।

इस विषय में अनेक लोगों का मत है कि जब हम कर्म का फल भोगने के लिए विवश हैं, तो फिर शांति आदि कराने से क्या लाभ? मेरे विचार में यह विचार बिल्कुल ठीक नहीं है, क्योंकि मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है और ईश्वर उसको बुरे कर्मों की सजा देता है, किन्तु मनुष्य की स्वतंत्रता में तारतम्य है। इसका कारण यह है कि मनुष्य एकदम स्वतंत्र नहीं है। उद्देश्य यह है कि जातक उपाय एवं उपचार द्वारा औषधियों, देवताओं तथा रत्नों आदि की सहायता से अशुभ कर्मों के फल किसी सीमा तक दूर कर सकता है। विशेषकर उस ग्रह की शांति परम आवश्यक है, जिसका प्रकोप चल रहा हो।

महर्षियों ने जहां जड़ी-बूटियों की खोज करके उनके गुण-दोष, स्वभाव आदि का ज्ञान प्राप्त किया, वहीं उन्होंने वे सभी साधन अपनाए जिससे मनुष्य अशुभता से मुक्ति प्राप्त कर सके। अतः उन्होंने औषधि के साथ-साथ मंत्र और रत्न को भी रोग के शमन में सहायक माना। इसलिए रत्नों को धारण करना केवल दैवज्ञों को ही अभीष्ट नहीं है, हमारे आयुर्वेद ने भी इनकी उपयोगिता को स्वीकार किया है।

विवाह की विलम्बकारी स्थितियों से प्रभावित उन सभी जातकों के लिए, ''पार्वती मंगल स्तोत्र'' का नित्य एक पाठ विधिपूर्वक तथा संकल्प के साथ करना चाहिए। यह प्रयोग 90 दिन तक संध्याकाल के समय करने से शीघ्र फलदायी होता है। इसके मूल में सम्भवतः यह विश्वास फलदायी है कि संध्या समय ही शिव की आराधना, कामना की प्रतिपूर्ति करने वाली होती है। इस स्तोत्र के साथ सोमवार का व्रत भी अवश्य करना चाहिए। यह पाठ शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ करें।

शीघ्र फलदायी पार्वती मंगल स्तोत्र

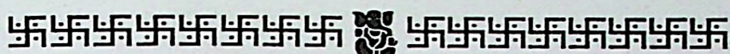
बिनइ गुरुहि गुनिगनहि गिरिहि गननाथहि।
हृदय आनि सिय राम धरे धनु भाथहि॥
गावऊँ गौरि गिरसि विवाह सुहावन।
पाप नसावन पावन मुनि मन भावन॥




कबित रीति नहिं जानऊँ कवि न कहावउँ।
संकर चरित सुसरित मनहि अन्हवावउँ॥
पर अपबाद-बिबाद-विदूषित बानिहि।
पावन करौं सो गाइ भवेस भवानिहि॥
जय संवत् फागुन सुदि पाँचे गुरु छिनु।
अस्विनि बिरचेउँ मंगल सुख छिनु छिनु॥
गुन निधानु हिमजानु धरनिधर धुर धनि।
मैना तासु धरनि घर त्रिभुवन तियमनि॥
कहहुँ सुकृत केहि भांति सराहिय तिन्ह कर।
लीन्ह जाइ जग जननि जनमु जिन्ह के घर॥
मंगल खानि भवानि प्रगट सब से भइ।
तब ते रिधि सिधि संपति गिरि गृह नित नइ॥
नित नव सकल कल्यान मंगल मोदमय मुनि मानहीं।
ब्रह्मादि सुर नर नाग अति अनुराग भाग बखानहीं॥
पितपतु मातु प्रिय परिवारू हर्षाहिं निरखि पालहिं लालहीं।
सित पाख बाढ़ति चंद्रिका जनु चंदभूषण भालहीं॥
कुँअरि सयानि बिलोक मातु पितु सोचहिं।
गिरिजा जोगु जुरिहि बरू अनुदिन लोचहिं॥
एक समय हिमवान भवन नारद गए।
गिरिवरू मैना मुदित मुनिहि पूजत भए॥
उमहि बोलि रिषि पगन मातु मेलत भई।
मुनि मन कीन्ह प्रणाम बचन आशिष दई॥
कँअरि लागि पितु काँध ठाढ़िं भइ सोहई।
रूप न जाइ बखानि जानु जोइ जोहई॥
अति सनेहँ सतिभायँ पाय परि पुनि।
कह मैना मृदु वचन सुनिए बिनती मुनि॥
तुम त्रिभुवन तिहुँ काल बिचार बिसारद।
पारबती अनुरूप कहिय बरू नारद॥
मुनि कह चौदह भुवन फिरउँ जग जहँ जहँ।
गिरिवर सुनिय सरहना राउरि तहँ तहँ॥

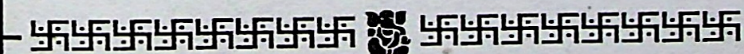








भूरि भाग तुम सरिस कतहुँ कोउ नाहिन।
कछु न अगम सब सुगम भयो विधि दाहिन॥
दाहिन भए विधि सुगम सब मुनि तजहु चित चिंता नई।
बरू प्रथम बिरवा बिरचि बिरच्चो मंगला मंगलमई॥
बिधिलोक चरचा चलति राउरि चतुर चतुरानन कही।
हिमवानु कन्या जोगु बरू बाउर बिबुध बंदित सही॥
मोरेहुँ मन अस आव मिलिहि बरू बाउर।
लखि नारद नारदी उमहि सुख भा उर॥
सुनि सहमे परि पाइ कहत भए दंपति।
गिरिजहि लगे हमार जिवनु सुख संपत्ति॥
नाथ कहिय सोइ जतन मिटइ जेहि दूषनु।
दोष दलन मुनि कहेउ बाल बिधु भूषनु॥
अवसि होइ सिधि साहस फलइ सुसाधन।
कोटि कलपतरू सरिस संभु अवराधन॥
तुम्हरे आश्रम अबहिं ईसु तपु साधहिं।
कहिअ उमहि मनु लाइ जाइ अवराधहिं॥
कहि उपाय दंपतिहि मुनिवर गए।
अति सनेहँ पितृ मातु उमहि सिखवत भए॥
सजि समाज गिरिराज दीन्ह सबु गिरिजहि।
बदति जननि जगदीस जुबति जानै सिरजहि॥
जननि जनक उपदेस महेसहि सेवहि।
अति आदर अनुराग भगति मनु भेवहि॥
भेवहि भगति वमन बचन करम अनन्य गति हर चरन की।
गौरव सनेह सकोच सेवा जाह केहि बिधि बरन की॥
गुन रूप जोबन सींव सुंदरि निरखि छोभ न हर हिए।
ते धीर अछत बिकार हेतु जे रहत मनसिज बस किए॥
देव देखि भल समय मनोज बुलायउ।
कहेउ करिअ सुर काजु साजु सजि आयउ॥
बामदेव सन कामु बाम होइ बरतेउ।
जग जय मद निदरेसि फरू पायसि फर तेउ॥



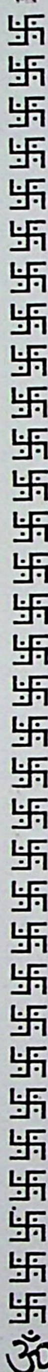




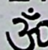
रति पति हीन मलीन बिलोकि बिसूरति।
नीलकंठ मृदु सील कृपामय मूरति॥
आसुतोष परितोष कीन्ह बर दीन्हेउ।
सिव उदास तजि बास [illegible] गम कीन्हेउ॥
दोहा—अब ते रति तव नाथ [illegible] नंगु।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहिं पुनि [illegible]
जब जदुबंस कृष्न अवतारा। होइहि [illegible]
कृष्न तनय होइहि पति तोरा। बचनु अन्यथा होइ न [illegible]
उमा नेह बस बिकल देह सुधि ब[illegible]
कलप बेलि बन बढ़त विषम [illegible] जनु [illegible]॥
समाचार सब सखिन्ह जाइ [illegible] घर कहे।
सुनत मातु पितु परिजन दारून दुख दहे॥
जाइ देखि अति प्रेम उमहि उर लावहिं।
बिलपहिं बाम बिधातहिं दोष लगावहिं॥
जौ न होहिं मंगल भग सुर बिधि बाधक।
तौ अभिमत फल पावहिं करि श्रमु साधक॥
साधक कलेस सुनाइ सब गौरीहिं निहोरेत धाम को।
को सुनइ काहि सोहाय घर चित चाहत चंद्र ललाम को॥
समुझाइ सबहि दृढ़ाइ मनु पितु मातु, आयसु पाइ कै।
लागी करन पुनि अगमु तपु तुलसी कहै किमि गाइ कै॥
फिरेउ मातु पितु परिजन लखि गिरिजा पन।
जेहिं अनुरागु लागु चितु सोइ हितु आपन॥
तजेउ भोग जिमि रोग लोग अहि गन जुन।
मुनि मनसहु ते अगम तपहिं लायो मनु॥
सकुचतहिं बसन बिभूषन परसत जो बपु।
तेहिं सरीर हर हेतु अरंभेउ बड़ तपु॥
पूजइ सिवहिं समय हिहुँ करइ निमज्जन।
देखि प्रेमु ब्रतु नेमु सराहहिं सज्जन॥
नींद न भूख पियास सरिस निसि बासरू।
नयन नीरू मुख नाम पुलक तनु हियँ हरू॥



कंद मूल फल असन, कबहुँ जल पवनहिं।
सूखे बेल के पात खात दिन गवनहिं॥
नाम अपरना भयउ परन जब परिहरे।
नवल धवल कल कीरति सकल भुवन भरे॥
देखि सराहहिं गिरिजहि मुनिबरू मुनि बहु।
अस तप सुना न दीख कबहुँ काहूँ कहु॥
काहूँ न देख्यौ कहहिं यह तपु जोग फल फल चारि का।
नहिं जानि जाइ न कहति चाहति काहि कुधर-कुमारिका॥
बटु बेष पेखन पेम पनु ब्रत नेम ससिसेखर गए।
मनसहिं समरपेउ आपु गिरिजहिं बचन मृदु बोलत भए॥
देखि दसा करूनाकर हर दुःख पायउ।
मोर कठोर सुभाय हृदयँ अस आयउ॥
बंस प्रसंसि मातु पितु कहि सब लायक।
अमिय बचनु बटु बोलेउ अति सुखदायक॥
देबि करौं कछु बिनती बिलगु न मानब।
कहउँ सनेहं सुभाय सांचु जिये जानब॥
जनति जगत जस प्रगटेहु मातु पिता कर।
तीय रतन तुम उपजिहु भव नतनाकर॥
अगम न कछु जग तुम कहँ मोहि अस सूझइ।
बिनु कामना कलेस कलेस न बूझइ॥
जो बर लागि करहु तप तौ लरिकाइअ।
पारस जौ घर मिलै तौ मेरू कि जाइअ।
मोरे जान कलेस करिअ बिनु काजहिं।
सुधा कि रोगिहि चाहइ रतन कि राजहिं॥
लखि न परेउ तप कारना बटु हियँ हारेउ।
सुनि प्रिय बचन सखी मुख गौरि निहारेउ॥
गौरी निहारेउ सखी मुख रूख पाइ तेहिं कारन कहा।
तपु करहिं हर हितु सुनि बिहंसि बटु कहत मुरूखाई बहा॥
जेहिं दीन्ह अस उपदेस बरेहु कलेस करि बरू बावरो।
हित लागि कहौं सुभायँ सो बड़ विषम बैरी रावरो।



कहहु काह सुनि रीझिहु बर अकुलीनहिं।
अगुन अमान अजाति मातु पितु हीनहीं॥
भीख मांगि भव खाहिं चिता नित सोवहिं।
नाचहिं मगन पिसाच पिसाचिनि जोवहिं॥
भाँग धतूर अहार छार लपटावहिं।
जोगी जटिल सरोष भोग नहिं भावहिं॥
सुमुखि सुलोचनि हर मुख पंच तिलोचन।
बामदेव फुर नाम काम मद मोचन॥
एकउ हरहिं न वर गुन कोटिक दूषन।
नर कपाल गज खाल ब्याल बिष भूषन॥
कहँ राउर गुन सील सरूप सुहावन।
कहां अमंगल बेषु बिशेषु भयावन॥
जो सोचइ ससि कलहि सो सोचइ रौरेहि।
कहा मोर मन धरि न बरिय बर बौरहि॥
हिए हेरि हठ तजहु हठै दुःख पैहहु।
ब्याह समय सिख मोरि समुझि पछितैहहु॥
पछिताब भूत पिसाच प्रेत जनेत ऐहैं साजि कै।
जम धार सरिस निहारि सब नर-नारि चलिहहिं भोजि कै॥
गज अजिन दिव्य दुकुल जोरत सखी हँसि मुख मोरि कै।
कोउ प्रगट कोउ हियँ कहिहि मिलवत अमिय माहुर घोरि कै॥
तुमहिं सहित असवार बसहँ जब होइहहिं।
निरखि नगर नर नारि बिहँसि मुख गोइहहिं॥
बटु करि कोटि कुतरक जथा रुचि बोलइ।
अचल सुता मनु अचल बयारि कि डोलइ॥
सांच सनेह सांच रुचि जो हठि फेरइ।
सावन सरित सिंधु रुख सूप सो घेरइ॥
मनि बिनु फनि जल हीन मीन तनु त्यागइ।
सो कि दोष गुन गनइ जो जेहि अनुरागई॥
करन कटुक चटु बचन बिसिष सम हिए हए।
अरून नयन चढ़ि भृकुटि अधर फरकत भए॥






बोली फिर लखि सखिहि काँपु तन थर थर।
आलि विदा करू बटुहि बेगि बड़ बरबर॥
कहँ तिय होहिं सयानि सुनहिं सिख राउरि।
बौरेहि के अनुराग भइउँ बडि बाउरि॥
दोषु निधानु इसानु सत्य सबु भाषेउ।
मेटि को सकइ सो आकु जो बिधि लिखि राखेउ॥
को करि बादु बिबादु विषादु बढ़ावइ।
मीठ काहि कवि कहहिं जाहि जोइ भावइ॥
भइ बड़ि कवि कहहिं जाहि जोइ भावइ॥
भइ बाड़ि बार आलि कहुं काल सिधारहिं।
बकि जनि उठहिं बहोरि कुजुगुति सँवारहि॥
जनि कहहिं कछु बिपरीत जानत प्रीति रीति न बात की।
सिव साधु निंदुक मंद अति जोउ सुनै सोउ बड़ पातकी॥
सुनि वचन शोधि सनेहु तुलसी सांच अबिचल पावनो।
भए प्रगट करूनासिंधु संकरू भाल चंद सुहावनो॥
सुंदर गौर सरीर भूति भलि सोहइ।
लोचन भाल बिसाल बदनु मन मोहइ॥
सैल कुमारि निहारि मनोहर मूरति।
सजल नयन हिय हरषु पुलक तन पूरति॥
पुनि पुनि करै प्रनामु न आवत कछु कहि।
देखौं सपन कि सौतुख ससि सेखर सहि॥
जैसे जनम दरिद्र महामनि पावइ।
पेखत प्रगट प्रभाउ प्रतीति न आवइ॥
सफल मनोरथ भयउ गौरि सोहइ सुठि।
घर ते खेलन मनहु अबहिं आई उठि॥
देखि रूप अनुराग महेस भए बस।
कहत बचन जनु सानि सनेह सुधा रस॥
हमहिं आजु लगि कनउड़ काहुँ न कीन्हेउ।
पारबती तप प्रेम मोल मोहिं लीन्हेउ॥
अब जो कहहु सो करउँ बिलुबु न एहिं धरी।
सुनि महेस मृदु बचन पुलकि पायन्ह परी॥

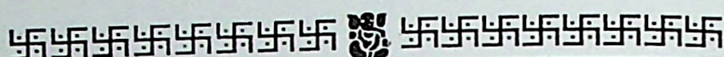
परि पायँ सखि मुख कहि जनायो आपु बाप अधीनता।
परितोषि गिरिजहि चले बरनत प्रीति नीति प्रवीनता॥
हर हृदयँ धरि घर गौरि गवनी कीन्ह बिधि मनभावनो।
आनंदु प्रेम समाजु मंगल गान बाजु बधावनो॥
सिव सुमिरे मुनि सात आइ सिर नाइन्हि।
कीन्ह संभु सनमानु जन्म फल पाइन्हि॥
सुमिरहिं सकृत तुम्हहि जन तेइ सुकृती बर।
नाथ जिन्हहि सुधि करिअ तिनहिं सम तेइ हर॥
सुनि मुनि बिनय महेस परम सुख पाहउ।
कथा प्रसंग मुनीसन्ह सकल सुनायउ॥
जाहु हिमाचल गेह प्रसंग चलायहु।
जौ मन मान तुम्हार तौ लगन धरायहु॥
अरूंधती मिलि मनहिं बात चलाइहि।
नारि कुसल इहिं काजु बनि आइहि॥
दुलहिनि उमा ईसु बहु साधक ए मुनि।
बनिहि अवसि यह काजु गगन भइ अस धुनि॥
भयउ अकनि आनंद महेस मुनीसन्ह।
देहिं सुलोचनि सगुन कलस लिएँ सीसन्ह॥
सिव सो कहेउ दिन ठाउँ बहोरि मिलनु जहँ।
चले मुदित मनिराज गए गिरिवर पहँ॥
गिरि गेह गे अति नेहँ आदर पूजि पहुस्नाई करी।
घरबात घरनि समेत कन्या आनि सब आगे धरी॥
सुखु पाइ बात चलाइ सुदिन सोधाइ गिरिहि सिखाइ कै।
रिषि सात प्रातहिं चले प्रमुदित ललित लगन लिखाइ कै॥
विप्र बृन्द सनमानि पूजि कुल गुर सुर।
परेउ निसानहि घाउ चाउ चहुँ दिसि पुर॥
गिरि बन सरित सिंधु सर सुनइ जो पायउ।
सब कहँ गिरिबर नायक नेवत पठायउ॥
धरि धरि सुंदर वेष चले हरषित हिएँ।
चंवर चीर उपहार हार मनि गन लिएँ॥



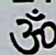
कहेउ हरषि हिमवान बितान बनावन।
हरषित लगीं सुआसिनि मंगल गावन॥
तोरन कलस चँवर धुज बिबिध बनाइन्हि॥
हाट पटोरन्हि छाय सफल तरू लाइन्हि॥
गौरी नैहर केहि बिधि कहहु बखानिये।
जनु रितुराज मनोज राज रजधानिय॥
जनु राजधानी मदन की बिरची चतुर बिधि और हीं।
रचना बिचित्र बिलोक लोचन बिथकि ठौरहि ठौर हीं॥
एहि भांति ब्याह समाज सजि गिरिराजु भगु जोवन लगे।
तुलसी लगन लै दीन्ह मुनिन्ह महेस आनंद रंग मगे॥
बेगि बोलाइ बिरंचि बचाइ लगन जब।
कहेन्हि बिआइन चलहु बुलाइ अमर सब॥
बिधि पठए जहँ तहँ सब सिव गन धावन।
सुनि हरषहिं सुर कहँहिं निसान बजावन॥
रचहिं बिमान बनाइ सगुन पावहिं भले।
निज निज साजु समाजु साजि सुरगन चले॥
मुदित सकल सिव दूत भूत गन गाजहिं।
सूकर महिष स्वान खर बाहन साजहिं॥
नाचहिं नाना रंग तरंग बढ़ावहिं।
आज उलूक बृक नाद गीत गन गावहिं॥
रमानाथ सुरनाथ साथ सब सुर गन।
आए जहँ बिधि संभु देखि हरषे मन॥
मिले हरिहिं हरू हरषि सुभाषि सुरेसहिं।
सुर निहारि सनमानेउ मोद महेसहिं॥
बहु बिधि बाहन जान बिमान बिराजहिं।
चली बरात निसान गहागह बाजहिं॥
बाजहि। निसान सुगान नभ चढ़ि बसह बिधुभूषन चले।
बरषहिं सुमन जय जय करहिं सुर सगुन सुब मंगल भले॥

ॐ क्रां क्रीं सः भोमाय स्वाहा।

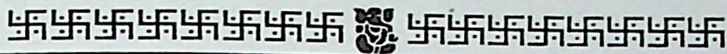


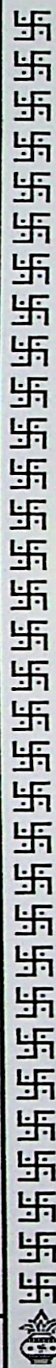

तुलसी बराती भूत प्रेत पिसाच पसुपति संग लसे।
गज छाल ब्याल कपाल माल बिलोक बर सुर हरि हंसे॥
बिबुध बोलि हरि कहेउ निकट पुर आयउ।
आपन आपन साज सबहिं बिलगायउ॥
प्रमथनाथ के साथ प्रमथ गन राजहिं।
बिधि भांति मुख वाहन बेष बिराजहिं॥
कमठ खपर मढ़ि खाल निसान बजावहिं।
नर कपाल जल भरि-भरि पिअहिं पिआवहिं॥
बर अनुहरत बरात बनी हरि हँसि कहा।
सुनि हियँ हँसत महेस केलि कौतुक महा॥
बड़ बिनोद मग मोह न कछु कहि आवत।
जाइ नगर नियरानि बरात बजावत॥
पुर खरभर उर हरषेउ अचल अखंडलु।
परब उदधि उमगेउ जनु लखि बिधु मंडल॥
प्रमुदित गे अगवान बिलोकि बरातहिं।
भभरे बनइ न रहत न बनइ परातहिं॥
चले भाजि गज बाजि फिरहिं नहिं फेरत।
बालक भभरि भुलान फिरहिं घर हेरत॥
दीन्ह जाइ जनवास सुपास किए सब।
घर घर बालक बात कहन लागे तब॥
प्रेत बेताल बराती भूत भयानक।
बरद चढ़ा बर बाउर सबइ सुबानक॥
कुसल करत करतार कहहिं हम सांचिअ।
देखब कोटि बिआह जिअत जौ बॉचिअ॥
समाचार सुनि सोचु भयउ मन मैयनहि।
नारद के उपदेस कवन घर गे नहिं॥
घर घाल चालक कलह प्रिय कहियत परम परमारथी।
तैसी बरेखी कीन्हि पुनि मुनि सात स्वारथ सारथी।
उर लाइ उमहि अनेक बिधि जलपति जननि दुःख मानई।
हिमवान कहेउ इसान महिमा अगम निगम न जाइनई।

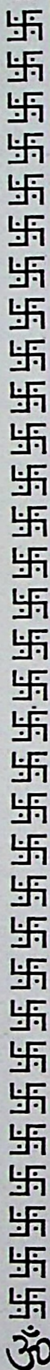




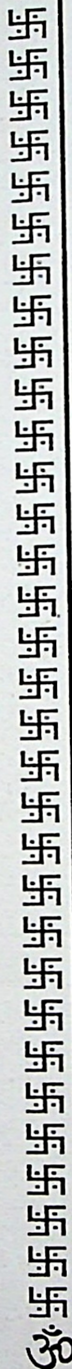

सुनि मैना भइ सुमन सखी देखन चली।
जहँ तहँ चरचा चलइ हाट चौहट गली॥
श्रीपति सुरपति तबिबुध बात सब सुनि सुनि।
हँसहिं कमल कर जोरि मोरि मुख पुनि पुनि॥
लखि लौकिक गीत संभु जानि बड़ सोहर।
भए सुंदर सत कोटि मनोज मनोहर॥
नील निचोल छाल भइ फनि मनि भूषन।
रोम रोम पर उदित रूपमय पूषन॥
गन भए मंगल बेष मदन मन मोहन।
सुनत चले हियँ हरषि नारि नर जोहन॥
संभु सरद राकेस नखत गन सुर गन।
जसु चकोर चहुँ ओर बिराजहिं पुर जन॥
गिरिबर पठए बोलि लगन बेरा भई।
मंगल अरघ पाँवड़े देत चले लई॥
होहिं सुमंगल सगुन सुमन बरषहिं सुर।
गहगहे गान निसान मोद मंगल पुर॥
पहिलिहिं पवरि सुसामध भा सुख दायक।
इति बिधि उत तहिमवान सरिस सब लायक॥
मनि चामीकर चारू थार सजि आरति।
रतिसिहाहिं लखि रूप गान सुनि भारति॥
भरी भाग अनुराग पुलकि तन मुद मन।
मदन मत्त गजगवनि चलीं बर परिछन॥
बर बिलोकि बिधु गौर सुअंग उजागर।
करति आरती सासु मगन सुख सागर॥
सुख सिंधु मगन उतारि आरति करि निछावर निरखि कै।
मगु अरघ बसन प्रसून भरि लेइ चलीं मंडप हरषि कै॥
हिमवान दीन्हें उचित आकन सकल सुर सनमानि कै।
तेहि समय साज समाज सब राखे सुमंडप आनि कै॥
अरघ देइ मनि आसन बर बैठायउ।
पूजि कीन्ह मधुपर्क अमी अचवायउ॥



सप्त रिषिन्ह बिधि कहेउ बिलंब न लाइअ।
लगन बेर भइ बेगि बिधान बनाइअ॥
थापि अनल हर बरहि बसन पहिरायउ।
आनहु दुलाहिनि बेगि समय अब आयउ॥
सखी सुआसिनि संग गौरि सुठि सोहति।
प्रगट रूपमय मूरति जनु जग मोहति॥
भूषन बसन समय सम सोभा सो भली।
सुषमा बेलि नव जनु रूप फलनि फली॥
कहहु काहि पटतरिय गौरि गुन रूपहि।
सिंधु कहिय केहि भांति सरिस सर कूपहि॥
आवत उमहि बिलोकि सीस सुर नावहिं।
भव कृतारथ जनम जानि सुख पावहिं॥
बिप्र बेद धुनि करहिं सुभासिष कहि कहि।
गान निसान सुमन झरि अवसर लहि लहि॥
बर दुलहिनिहि बिलोक सकल मन हरसहिं।
साखोच्चार समय सर सुर मुनि बिहसहिं॥
लोक बेद बिधि कीन्ह लीन्ह जल कुस कर।
कन्या दान संकल्प कीन्ह धरनीधर॥
पूजे कुल गुर देव कलसु सिल सुभ धरी।
लावा होम बिधान बहुरि भाँवरि परी।
बंदन बंदि ग्रंथि बिधि करि ध्रुव देखेउ।
भा जनम फलु भा बिबाह उछाह उमगहि दस दिसा।
नीसान गान प्रसून झरि तुलसी सुहावनि सो निसा॥
दाइज बसन मनि धेनु धन हय गय सुसेवक सेवकी।
दीन्हीं मुदित गिरिराज जे गिरिजहिं पिआरी पेव की॥
बहुरि बराती मुदित चले जनवासहिं।
दूलह दुलाहिनि गे तब हास-अवासहिं॥
रोकि द्वार मैना तब कौतुक कीन्हेउ।
करि लहकौकि गौरि हर बड़ सुख दीन्हेउ॥
जुआ खेलावत गारि देहिं गिरि नारिहि।
आपनि ओर निहारि प्रमोद पुरारिहि॥



सखी सुआसिनि सासु पाउ सुख सब बिधि।
जनतासेहि बर चलेउ सकल मंगल निधि॥
भइ जेवनार बहोरि बुलाइ सकल सुर।
बैठाए गिरिराज धरम धरनि धुर॥
परूसन लगें सुआर बिबुध जन जेवहि।
देहिं गारि बर नारि मोद मन मेवहि॥
करहि सुमंगल गान सुघर सहनाइन्ह।
जेइँ चले हरि दुहिन सहित सुर भाइन्ह॥
भूधर भोरू विदा कर साज सजायउ।
चले देव सजि जान निसान बजायउ॥
सनमाने सुर सकल दीन्ह पहिरावनि।
कीन्ह बड़ाई बिनय सनेह सुहावनि॥
गहि सिव पद कह सासु विनय मृदु मानबि।
गौरि सजीवन मूरि मोरि जियँ जानबि॥
भेंटि बिदा करि बहुरि भेंटि पहुंचावहिं।
हुस्करि हुँकरि सु लवाइ धेनु जनु धावहिं॥
उमा मातु मुख निरखि जैन जल मोचहिं।
नारि जनमु जग जाय सखी कहि सोचहिं॥
भेंटि उमहि गिरिराज सहित सुत परिजन।
बहुत भांति समुझाइ फिरे बिलखित मन॥
संकर गौरि समेत गए कैलासहिं।
नाइ नाइ सिर देव चलेनिज वासहिं॥
उमा मंहेस बिआह उछाहं भुवन भरे।
सब के सकल मनोरथ विधि पूरन करे॥
प्रेम पाट पटडोरि गौरि हर गुन मनि।
मंगल हार रचेउ कवि मति मृगलोचनि॥

□□□

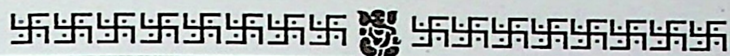
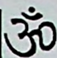




मांगलिक दोष निवारण कैसे?

समय की करवट के साथ भारत की भूमि में कई विद्वान अवतरित हुए। वे वास्तव में युगपुरुष थे, जो अपनी भावी पीढ़ी के लिए अमूल्य ज्ञान की सौगात अध्ययन एवं शोध कार्य हेतु दे गये। ज्योतिषीय पर आधारित खगोलशास्त्रीय ज्ञान की उत्कृष्ट सीमा की पराकाष्ठा जानने के प्रयास में हमारे पूर्वज, सूर्य, गुरु बृहस्पति, मनु, अत्रि, वशिष्ठ, पुलस्त्य, लोमेश, अंगिरा, व्यास, मारीच, नारद, शौनक, च्यवन, यवन, भृगु कश्यप, गर्ग और पाराशर जैसे ज्ञानियों द्वारा शोभित वेदों से उद्धृत ज्योतिष शास्त्र की गणना एवं रचना आज भी अटल सूर्य की तरह दैदीप्यमान है। वर्तमान में कतिपय पाखण्डियों एवं अल्पज्ञानियों के दूषित आचार-विचार के द्वारा पवित्र ज्योतिष ज्ञान धारा को अपवित्रता के वस्त्र पहनाने का निंदनीय कार्य किया जा रहा है, जिसके कारण आधुनिक जीवन में ज्योतिष जैसे विषय को अंधविश्वास का पर्याय मानकर खिल्ली उड़ायी जाती है। ज्योतिष उस तलवार की तरह है, जो स्वयं अपने पैनेपन एवं तीक्ष्णता का बोध कराती है। अब यह जनसाधारण पर निर्भर करता है कि वे इस तलवाररूपी ज्ञान का उपयोग कैसे करें?

भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्व है, जितना कि देवोपासना का है। जन्म से लेकर विवाह आदि संस्कारों में नवग्रह पूजन का विशेष महत्व है। यज्ञानुष्ठान की क्रिया नवग्रह स्थापना के बिना अपूर्ण ही रहती है क्योंकि यज्ञरक्षा नवग्रहों द्वारा ही होती है। अतः रक्षाविधान के लिए शास्त्रीय आदेश है कि गणेश,

सरस्वती, क्षेत्रपाल की स्थापना के साथ-साथ नवग्रहों की भी स्थापना करनी चाहिए और उनका पूजन करके उन्हें नमस्कार करना चाहिए।

सूर्य ,चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु को नवग्रह कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, सूर्य-चंद्रमा को नक्षत्रों का स्वामी, मंगल को पृथ्वीपुत्र, बुध को चंद्रमा का पुत्र, गुरु बृहस्पति को देव गुरु, शुक्र को दैत्य गुरु, शनि को सूर्यपुत्र एवं राहु-केतु को पृथ्वी के छाया पुत्र माना गया है।

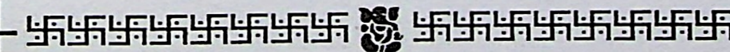
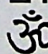
जीवन के संपूर्ण सुख-दुःख, लाभ-हानि और जय-पराजय जैसे सभी विषय इन नवग्रहों पर आधारित होते हैं। इसका कारण; 27 नक्षत्रों और 12 राशिग्रों पर ये ग्रह भ्रमण करते रहते हैं, जिससे ऋतुएं, वर्ष, मास और दिन-रात बनते हैं।

नवग्रह अपनी-अपनी गति के अनुरूप मंद अथवा तीव्र चाल से एक-एक राशि को पार करते रहते हैं। जब ये ग्रह सूर्य के समीप अंशों में एक ही राशि पर होते हैं तो अस्त माने जाते हैं। इन राशियों के नाम मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ व मीन हैं। नाम के अनुसार इन्हीं राशियों पर स्थित ग्रहों की गति देखकर बताया जाता है कि अमुक जातक के लिए अमुक समय कैसा है? इसे ही जानने के लिए बारह राशियों हेतु नवग्रहों को इनका स्वामी चुना गया है।

मेष व वृश्चिक राशि का स्वामी—मंगल, वृष व तुला राशि का स्वामी—शुक्र, मिथुन व कन्या राशि का स्वामी—बुध, कर्क राशि का स्वामी—चंद्रमा, सिंह राशि का स्वामी—सूर्य, धनु व मीन राशि का स्वामी—गुरु बृहस्पति और मकर व कुंभ राशि का स्वामी—शनि को माना गया है। जन्मपत्रिका में कौन-सा ग्रह किस स्थान पर बैठा है, उसका फल क्या मिलेगा? उसी के अनुसार उस ग्रह की शांति के लिए पाठ-जप करना, रत्न धारण करना व वस्तुओं का दान करना चाहिए, तभी पूरा फल प्राप्त होगा।

यहां पर मेरा विषय मंगल और उससे बनने वाला मांगलिक दोष है, अस्तु में उसी तक सीमित रहूंगा!

मंगल ग्रह लाल रंग का है। पृथ्वीपुत्र है। छोटे भाई का कारक ग्रह है। प्रशासनिक मिलेट्री, पुलिस, डॉक्टर, वकील आदि महत्वपूर्ण






मनुष्यों का सम्बन्ध मंगल से होता है। यह जिद्दी व चंचल स्वभाव का बनाता है।

मंगल का नीच व दुष्ट प्रभाव मनुष्य को चोर, डाकू, स्मगलर बनाता है और दुर्घटना, रक्तविकार, क्रोधी भी बनाता है। जन्मपत्रिका में मंगल निर्बल, अकारक, दुष्ट व नीचस्थ हो तो परेशानियों का क्रम बनाए रखता है।

लग्न में स्थित मंगल गुप्त रोग देता है व स्वभाव में उग्रता लाता है विपरीत होने पर। दूसरे भाव में मंगल नीच का या अकारक होकर स्थित होने पर धन से हीन व रोगी बनाता है। एकादश भाव में स्थित मंगल क्रोध बढ़ाता है और स्वभाव में उग्रता लाता है। राहु-मंगल का संयोग अंगीरा योग का निर्माण करता है, यह जातक को जेल यात्रा तक करा देता है। मंगल का जन्मपत्रिका में 1, 4, 7, 8 व 12 भावों में स्थित होने से मंगल पगड़ी व मंगल चुनरी योग बनाता है, इसके कारण विवाह में विलम्ब होता है और द्वि-भार्या योग भी बन जाता है। अष्टम व षष्ठ में मंगल लड़ाई-झगड़े कराता है व अनिष्टकारी होता है। राहु व शनि के साथ होने पर भी इसकी शुभता घट जाती है।

मंगल के कुप्रभाव से बचने के लिए निम्न प्रकार के उपाय करने से मंगल शुभ हो जाता है–

● मंगल की शान्ति के लिए मनुष्य को लाल पुष्प, लाल चन्दन, खिरेंटी, लाल कागजी बेल की छाल व गौदन्ती आदि को मिश्रित कर जल में डाल देवें, फिर सूर्योदय से पूर्व इससे स्नान करने से मंगल की शान्ति होती है व मंगल के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है।

● प्रातः उठते ही नित्य कर्म से पूर्ण हो लाल रंग की गाय का मंगलवार के दिन लाल चन्दन द्वारा तिलक करें और लाल पुष्प का हार पहनावें और फिर मसूर की दाल गाय को खिलाएं–फिर गुड़ गाय को खिला देवें और मन में यह भावना उत्पन्न करें कि माता मेरे मंगल दोष का निवारण करें। ऐसा करने से मंगल सम्बन्धी बाधा से मुक्त होते हैं।

● मंगलवार का उपवास कर ऋण मोचन मंगल स्तोत्र का पाठ करने से निरन्तर धन-धान्य में वृद्धि होती है। मूंगा रत्न मंगलवार








के दिन ताम्रपत्र पर मंगल यंत्र खुदवाकर षोडशोपचार द्वारा इसकी पूजा करें। लाल रंग का वस्त्र लेकर उस पर मसूर की दाल द्वारा मंगल यंत्र रखें और 7 दिन तक उसकी पूजा करें, 28,000 हजार मंत्रों का जाप करें। आठवें दिन किसी भी ब्राह्मण को विश्वासपूर्वक लाल रंग के वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, घी, केशर, गेहूं; लाल कनेर का फूल, लाल रंग के फल, मूंगा रत्न सहित दान कर देवें और साथ में दक्षिणा अवश्य देवें।

- शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को प्रारम्भ करके प्रथम मंगलवार को एक माला मंगल मंत्र की, दूसरे मंगलवार को पांच माला, तीसरे मंगलवार को सात माला जपें। बिना नमक के गुड़ से बने हुए लड्डू से व्रत खोलें और किसी भी लाल बैल को भी खिलावें। चौथे मंगलवार को दशांश हवन पूर्ण आहुति कर किसी ब्राह्मण को नारियल, गेहूं, गुड़, मसूर, तांबा, लाल वस्त्र दान करें व दक्षिणा देवें, इससे मंगल-शांति होती हैं।

- किसी भी विद्वान से परामर्श कर ताम्र व सोने की धातु में मूंगा रत्न जड़वाकर अनामिका अंगुली में प्रतिष्ठित कर धारण करने से मंगल का प्रभाव धट जाता है, दोष का निवारण हो जाता है, साहस व कर्म में वृद्धि होती है।

जातक की जन्मपत्रिका में मंगल की स्थिति निर्बल हो तो निम्नलिखित किसी एक मंत्र का यथाशक्ति अधिक-से-अधिक जाप करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है–

भौम अर्घ्य मंत्र–

ॐ मं मंगलाय नमः

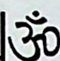
ग्रहों के अनुकूल वस्तुओं के दान से मंत्र जाप की सफलता में अधिक लाभ होता है।

मंगल मंत्र–

ॐ भूमि सूताय नमः।
ॐ हूं श्रीं मंगलाय नमः।
ॐ कां क्रीं क्रौं सः भोभाय नमः।





वेदोक्त मंगल मंत्र–

ॐ अग्निर्मूधा दिवः ककुसतिः .
पृथिव्या अयम।
अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति।।

पौराणिक भौम मंत्र–

ह्रीं धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत् कान्ति समप्रथम्।
कुमारं-शक्ति हस्तं तं मंगलं प्रणामाम्यहम्।।

भौम गायत्री मंत्र–

ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय।
धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

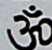
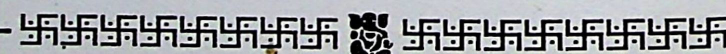
मंगल के विशिष्ट परिहार–

- मीठी रोटियों का दान करें, तन्दूर की मीठी रोटी का दान करें।
- हनुमान जी का व्रत मंगलवार को रखें और पूर्ण शुद्ध व ब्रह्मचर्य-पूर्वक रहें। हनुमानाष्टक या सुन्दर काण्ड का मंगलवार को पाठ करें।
- बन्दरों को लाल वस्तुएँ; जैसे गुलदाना, शकरपारे, जलेबी आदि खिलाएं।
- कन्याओं को मंगली दोष में गौरी-पूजन तथा श्रीमद्भागवत के अठारहवें अध्याय के नवें श्लोक का जाप श्रेष्ठ है।

तांत्रिक साधना–

मंगल से सम्बन्धित अनिष्ट और अरिष्ट को निर्मूल करने हेतु अनेक उपाय प्रचलित हैं जिनमें से अपनी सुविधा तथा इच्छानुसार किसी एक प्रयोग का अनुकरण करना ठीक होगा–

1. मंगलवार को रेवड़ियां या बताशे बहते जल में विसर्जित करें।
2. आटे के पेड़े में गुड़ व चीनी रखकर गाय को खिला दें।
3. मंगलवार को गुड़ व लाल मसूर की दाल अवश्य खाएं।
4. तुलसी के पत्ते व काली मिर्च का सेवन करें, तुलसी में जल दें।





उल्लेखनीय है कि सभी या कई प्रयोगों के अनुसरण की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है क्योंकि सभी का शुभ फल समान होता है।

ज्योतिष शास्त्र में विश्वास रखने वाले अपनी-अपनी राशि के मंत्रों के पाठ तथा यंत्र-पूजन में विश्वास रखते है। नित्य प्रातः माला लेकर एक सौ आठ बार मंत्र जाप किया जाता है। यंत्र को अखण्डित भोजपत्र पर शुद्ध केसर या रक्तचंदन से बनाकर कपड़े में लपेटकर जेब/पर्स में अथवा ऑफिस/दुकान के पूजाघर में रखना चाहिए या निम्न विधि से यथोचित करें–

मेष राशि का मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी नारायणा नमः।

मेष राशि का यंत्र

8	3	10
9	7	5
4	11	6
नाम......पिता का नाम......गोत्र.....		

यंत्र को अनार की लकड़ी की आठ अंगुल की कलम से अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर तांबे के खोल में धारण करें।

अनिष्ट निवारक मंगल यंत्र

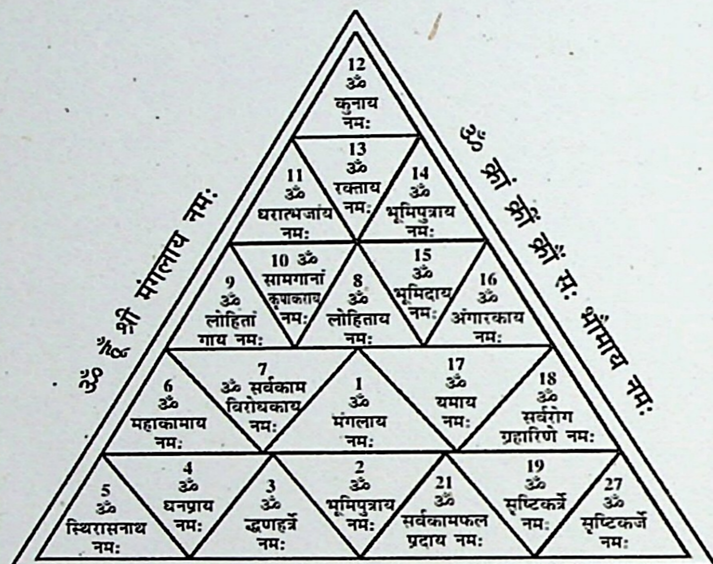
इस अध्याय में हम एक अत्यंत उपयोगी मंगल यंत्र का उल्लेख कर रहे हैं। यह यंत्र जहां समस्त अनिष्टों का निवारण करने में सक्षम है, वहीं सुख-समृद्धि तथा ऐश्वर्य प्रदान करता है। इसके अलावा इस अध्याय में दान की वस्तुओं तथा औषध-स्नान पर भी विचार किया जा रहा है।





यंत्र निर्माण करने के लिए किसी शुक्ल पक्ष के मंगलवार के दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य कर्म से निवृत्त होकर शुद्ध लाल आसन पर बैठना चाहिए। फिर अनार की लेखनी (कलम) द्वारा अष्टगंध (श्वेतचंदन, रक्तचंदन, अगर, तमर, केसर, कस्तूरी, देसी कपूर और गोरोचन) से भोजपत्र पर नीचे दिया गया मंगल का यंत्र लिखना चाहिए–

मंगल यंत्र



ॐ क्रां ह्रीं सः भीमाय स्वाहा।

अंकों के लेखन के विषय में निम्न उद्‌गार प्रकट किए गए हैं–

गजाग्नि-दिश्याथ-नवाद्रि-बाणा,
पाताल-रुद्रा-रस-संविलिख्य।
भौमस्य यंत्रं क्रमशो विधार्यमनिष्टनाशं
प्रवदन्ति गर्गाः।।

नव कोष्ठ (कोण) बनाकर ऊपर के कोष्ठ में बाईं ओर पहले 8, 3, 10 अंक लिखें। फिर द्वितीय कोष्ठ में बाईं ओर से 9, 7, 5 तथा तृतीय कोष्ठ में 4, 11, 6 अंक लिखें। इस प्रकार 21 संख्या वाले मंगल यंत्र का निर्माण करें। गर्गाचार्य ने इस यंत्र को अनिष्टनिवारक माना है–





8	3	10
9	7	5
4	11	6
नाम......पिता का नाम......गोत्र....		

उक्त यंत्र को मंगलवार के ही दिन ताम्रपत्र के कवच में बंद करके, लाल डोरे में डालकर पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर, शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। इस यंत्र को धारण करने से मंगल पीड़ा नहीं देता। यदि पहले से मंगल का कोई प्रकोप हुआ तो वह भी शांत हो जाता है।

मूंगा, पीले रंग की गाय अथवा लाल रंग का बैल, सोना (सुवर्ण) लाल वस्त्र, लाल मसूर, रक्तचंदन, गुड़, घृत, शुद्ध केसर, कस्तूरी, गेहूं, लाल कनेर के फूल तथा धन के रूप में कुछ दक्षिणा आदि वस्तुएं दान करने से मंगलकृत पीड़ा दूर होती है। ऋण से छुटकारा मिलता है। ब्लड प्रेशर जैसे रोगों से मुक्ति पाने के लिए यह अचूक उपाय है।

रक्तचंदन, लाल पुष्प, बेल की छाल, जटामांसी, मौलश्री, खिरैंटी, हींग, गोंदनी, मालकांगनी तथा सिंगरफ मिश्रित जल से स्नान करने पर मंगलजनित पीड़ा का अतिशीघ्र निवारण हो जाता है। यह स्नान मंगलवार को प्रातः करना चाहिए।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार, अगर किसी जातक की जन्मकुण्डली के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादशवें भाग में मंगल स्थित हो तो लड़का या लड़की मंगली हो सकते हैं। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव में स्थित मंगल वाली कुण्डली को भी "मंगली" माना जाता है।

उपर्युक्त स्थानों में से किसी-न-किसी स्थान पर मंगल की






उपस्थिति प्रायः सभी जन्मपत्रिकाओं में देखने में मिल ही जाती है। इस प्रकार आधी आबादी मंगली ही मानी जाएगी। इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मंगल के प्रभाव से अस्सी प्रतिशत विवाहों में विलम्ब होता है, पन्द्रह प्रतिशत सम्पर्क बनते-बिगड़ते हैं और मात्र पांच प्रतिशत मामलों में ही मंगल वैधव्यता या विधुरता का प्रभाव डालता है।

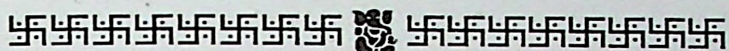
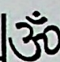
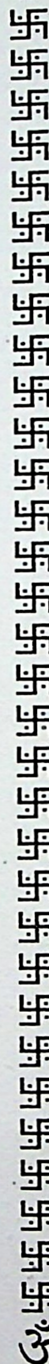
मंगल के प्रभाव से ग्रस्त लड़के या लड़की को उत्तर-पश्चिम वाले कमरों में सोना चाहिए। दक्षिण की तरफ अगर कोई खिड़की या दरवाजा खुलता हो तो उसे तुरन्त बंद कर देना चाहिए या उसका प्रयोग जहां तक संभव हो, उन्हें कम-से-कम करना चाहिए। परिहार शास्त्र के अनुसार, कन्या के शयनकक्ष में केले का पौधा और लड़के के शयनकक्ष में वटवृक्ष किसी गमले में रख दिया जाए तो सप्तम एवं अष्टम भाव के मंगल का दोष दूर होता है।

मंगल दोष के प्रभाव को कम करने के लिए शास्त्रों में अनेक उपाय बताये गये हैं जिनके करने से जातक के मंगलदोष कम हो जाते हैं। इनमें से कुछ यह हैं–

- लड़की के मंगली होने पर लड़का देखने जाते समय पिता के स्थान पर चाचा, ताऊ, दादा या पिता की तरफ से किसी अन्य रिश्तेदार को भेजने से मंगल का प्रभाव कम होता है। मंगल दोष से युक्त लड़का-लड़की को विधिवत् प्राणप्रतिष्ठित "मांगलिक यंत्र" पास रखने से मंगल का दोष कम होता है।
- अगर लड़की की जन्मपत्रिका में मंगल का भवन मारक है अर्थात् वैधव्य योग या दो विवाह दर्शाने वाला हो तो लड़की को कुम्भ, विष्णुप्रतिमा शलग्राम या वटवृक्ष विवाह कराकर ही उसका विवाह करना चाहिए। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार, यह विवाह गोपनीय होना चाहिए जिसकी जानकारी लड़की के पिता तक को न हो–

"बाल वैधव्य योगेअपि, कुम्भद्रप्रतिमादिभिः।
कृत्वा लग्नं रहः पश्चात्, कन्यो व्याह्येति चापरे।।"



मंगली कन्या को पांच वर्ष तक मंगल गौरी का व्रत करना चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से लड़की विधवा नहीं होती है। लड़के को इस स्थिति में मंगल का व्रत रखकर हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए।

आगे के पृष्ठों में, मैं मंगल गौरी के व्रत की कथा और हनुमान पूजन की विधि दे रहा हूं!

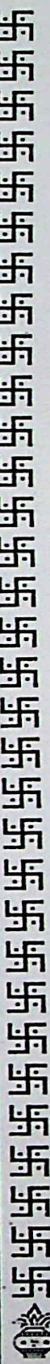
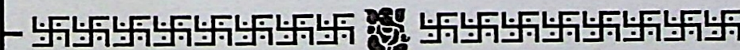
मंगल गौरी व्रत

जन्मपत्रिका में अगर मंगल दोष हो तो लगातार 7 वर्ष तक व्रत को करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से वृद्धावस्था में भी प्रभु के कृपा से वैधव्य नहीं होता है। यह व्रत विवाह के पश्चात् आरंभ करें। आरंभ करने का विधान विवाह के प्रथम वर्ष में श्रावण मास शुक्लपक्ष के मंगलवार से करें। फूलों का मंडप बनाकर उसमें पार्वती की तस्वीर रखें। चने की दाल, सोलह बत्ती के दीपक से देवी की अर्चना करें, उसके पश्चात् सुंदर तांबे का कलश, उसमें चावल, उसके ऊपर लाल रंग की साड़ी, चोली, सिंदूर, चूड़ी इत्यादि रखकर देवी का पूजन करें। पूजन के पश्चात् देवी को चावल, दही का भोग दें और रात्रि के समय कम-से-कम पांच सधवा स्त्रियों को भोजन करावें।

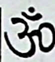
व्रत कथा

भगवान शिव अपने भक्तों से मंगल गौरी व्रत कथा कह रहे थे– "हे भक्त! जो स्त्री इस कथा को पढ़ती है या जो सुनती है उसका पति चिरायु अवश्य होता है। कलियुग में अधिकतर कन्याएं मंगली दोष युक्त होंगी और शीघ्र ही वैधव्य होने का भय बना रहेगा। अतः विवाह के पश्चात् प्रथम श्रावण शुक्लपक्ष मंगल के दिन से आरंभ कर लगातार प्रति मंगल 'मंगल गौरी व्रत' करने से वैधव्य होने से रक्षा हो सकती है। संध्या के समय देवी पूजन कर सुहागन स्त्रियों को लेकर निम्नलिखित व्रत कथा का प्रवचन करें–"

शिवजी ने कहा–"अयोध्या में कृष्णकांत नाम का राजा राज्य



करता था। वह शास्त्रविद्, कीर्तिमान और शत्रुरहित, चौसठ कलाओं को जानने वाला अत्यंत लावणती भार्या संगीता जो धर्मपरायण, पतिव्रता परंतु पुत्र-सुख से वंचित थे। पति-पत्नी दोनों ही बहुत चिंता से जीवन यापन करते थे। पति-पत्नी दोनों ने ही हमारी पूजा विधिवत् की और राजा कृष्णकांत घोर तपस्या करने लगे। कृष्णकांत की तपस्या से प्रसन्न होकर मैंने कहा–'हे वत्स! वर मांगो।' कृष्णकांत ने कहा–'दे देव! आपकी कृपा से मेरे पास किसी वस्तु की कमी नहीं है। अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो एक बहुत सुंदर पुत्र दें।' राजा का वचन सुनकर मैंने कहा–'राजन् तुमने बहुत कठिनता से प्राप्त होने वाली वस्तु मांगी है, लेकिन कृपावश तुम्हारे लिये दूंगा। हे राजेन्द्र! सुनो वह पुत्र बहुत गुणी तथा लोकप्रिय होगा, परंतु सोलह वर्ष तक ही जीवित रहेगा।' भगवान शिव की कृपा से रानी संगीता गर्भवती हुई। श्रावण शुक्ल पंचमी, दिन मंगलवार को पुत्र का जन्म हुआ। राजा ने उस पुत्र का हर्ष और शोक से युक्त हो जातकर्म आदि संस्कार किया और शिव का स्मरण करते हुये पुत्र का नाम 'प्रकाश' रखा।

जब पुत्र को सोलहवां वर्ष लगा तो राजा और रानी को चिंता ने घेर लिया। तदनन्तर राजा ने विचार किया, यह पुत्र बड़े कष्ट से प्राप्त हुआ है। इस पुत्र की मृत्यु अपने सामने कैसे देखी जायेगी, यह सोचकर पिता कृष्णकांत ने अपने भाई के साथ पुत्र को काशी नगरी भेज दिया। मैंने पहले मृत्युंजय महादेव से प्रार्थना की थी कि सोलह वर्ष होते ही पुत्र को आपकी शरण में भेज दूंगा।

चाचा-भतीजा बहुत दिनों के पश्चात् दुर्गा नगरी में पहुंच गये। वहां पर ऐश्वर्यशाली सर्वसमृद्धिमान देवेन्द्र नाम का राजा था। उस राजा की कन्या संपूर्ण लक्षणों से युक्त कलावती थी। वह मध्य अवस्था वाली सुंदरी रूप और लावण्य से संपन्न थी। वह अपने गुणों द्वारा संपूर्ण उपमाओं को तुच्छ करती हुई उदय को प्राप्त हुई और अपने नगर के समीप सुंदर बगीचे में सहेलियों के साथ क्रीड़ा करती थी। तदनन्तर वहां पर प्रकाश और उसका चाचा दोनों विश्राम कर



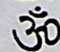
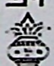




रहे थे। इतने ही में विनोद से खेलती हुई उन कन्याओं से किसी ने कहा कि तू विवाह पश्चात् वैधव्य (विधवा) हो जायेगी। कलावती ने कहा कि सखी, हमारे कुल में आज तक ऐसा कोई नहीं हुआ है। मंगल गौरी के व्रत-प्रसाद से मेरे हाथ से चावल जिसके सिर पर गिरेंगे, हे सखी, जिसे विवाह के होने पर यदि अल्पायु योग भी होगा तो वह चिरायु (बहुत काल तक जीने वाला) होगा। गलती से कलावती चावल नदी की तरफ उछालती है जहां प्रकाश था, उसके सिर पर जा गिरता है। चाचा-भतीजा उस रात उसी नगर में ठहर जाते हैं।

कलावती का विवाह कुरुक्षेत्र नरेश के पुत्र कमल के साथ निश्चित हो चुका था, परंतु कमल मूर्ख, कुरूप और कानों का बहरा था। तदनन्तर वर पक्ष के लोगों ने आपस में विचार किया कि यदि दूसरे सुयोग्य लड़के को ले जाकर आज अपना कार्य संपादन कराने के बाद विवाहोत्तर कमल वहां पर जाए तो क्या हानि? यों निश्चय कर ये लोग प्रकाश के चाचाजी से कहने लगे—'यदि आप इस बालक को हम लोगों को दे दें तो हमारा कार्य बन जायेगा। इस भूमण्डल में परोपकार से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं है।' यह बात सुनकर चाचा हृदय से प्रसन्न हो गया। क्योंकि उसने पहले कन्या के वाक्य को उपवन में सुना था। फिर भी एक बार उन लोगों से कहा—'आप लोग क्या चाहते हैं? कार्य की सिद्धि के लिए वस्त्र, अलंकार आदि तो मंगनी मांगे जाते हैं परंतु कहीं पर वर की याचना नहीं की जाती है, लेकिन मैं गौरव से आप लोगों को देता हूं।'

उन लोगों ने प्रकाश को वहां पर ले जाकर विवाह कार्य को सम्पन्न कराया और सर्पपक्षी आदि कार्य हो जाने पर रात के समय गौरी-शंकर के समीप वह बालक प्रकाश प्रसन्न मन से कलावती के साथ गया। उसी दिन प्रकाश का सोलहवां वर्ष समाप्त हो रहा था। उसी अर्धरात्रि के समय सर्प के रूप में काल वहां पर आ गया। लेकिन इसी बीच में दैवयोग राजकन्या उस महासर्प को देखकर भय से विह्वल हो, कांपने लगी। परंतु उस बाला ने धीरतः धारण कर सर्प की पूजा की और पीने के लिए बहुत दूध दिया। प्रार्थना कर




करता था। वह शास्त्रविद्, कीर्तिमान और शत्रुरहित, चौसठ कलाओं को जानने वाला अत्यंत लावणती भार्या संगीता जो धर्मपरायण, पतिव्रता परंतु पुत्र-सुख से वंचित थे। पति-पत्नी दोनों ही बहुत चिंता से जीवन यापन करते थे। पति-पत्नी दोनों ने ही हमारी पूजा विधिवत् की और राजा कृष्णकांत घोर तपस्या करने लगे। कृष्णकांत की तपस्या से प्रसन्न होकर मैंने कहा—'हे वत्स! वर मांगो।' कृष्णकांत ने कहा—'दे देव! आपकी कृपा से मेरे पास किसी वस्तु की कमी नहीं है। अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो एक बहुत सुंदर पुत्र दें।' राजा का वचन सुनकर मैंने कहा—'राजन् तुमने बहुत कठिनता से प्राप्त होने वाली वस्तु मांगी है, लेकिन कृपावश तुम्हारे लिये दूंगा। हे राजेन्द्र! सुनो वह पुत्र बहुत गुणी तथा लोकप्रिय होगा, परंतु सोलह वर्ष तक ही जीवित रहेगा।' भगवान शिव की कृपा से रानी संगीता गर्भवती हुई। श्रावण शुक्ल पंचमी, दिन मंगलवार को पुत्र का जन्म हुआ। राजा ने उस पुत्र का हर्ष और शोक से युक्त हो जातकर्म आदि संस्कार किया और शिव का स्मरण करते हुये पुत्र का नाम 'प्रकाश' रखा।

जब पुत्र को सोलहवां वर्ष लगा तो राजा और रानी को चिंता ने घेर लिया। तदनन्तर राजा ने विचार किया, यह पुत्र बड़े कष्ट से प्राप्त हुआ है। इस पुत्र की मृत्यु अपने सामने कैसे देखी जायेगी, यह सोचकर पिता कृष्णकांत ने अपने भाई के साथ पुत्र को काशी नगरी भेज दिया। मैंने पहले मृत्युंजय महादेव से प्रार्थना की थी कि सोलह वर्ष होते ही पुत्र को आपकी शरण में भेज दूंगा।

चाचा-भतीजा बहुत दिनों के पश्चात् दुर्गा नगरी में पहुंच गये। वहां पर ऐश्वर्यशाली सर्वसमृद्धिमान देवेन्द्र नाम का राजा था। उस राजा की कन्या संपूर्ण लक्षणों से युक्त कलावती थी। वह मध्य अवस्था वाली सुंदरी रूप और लावण्य से संपन्न थी। वह अपने गुणों द्वारा संपूर्ण उपमाओं को तुच्छ करती हुई उदय को प्राप्त हुई और अपने नगर के समीप सुंदर बगीचे में सहेलियों के साथ क्रीड़ा करती थी। तदनन्तर वहां पर प्रकाश और उसका चाचा दोनों विश्राम कर




रहे थे। इतने ही में विनोद से खेलती हुई उन कन्याओं से किसी ने कहा कि तू विवाह पश्चात् वैधव्य (विधवा) हो जायेगी। कलावती ने कहा कि सखी, हमारे कुल में आज तक ऐसा कोई नहीं हुआ है। मंगल गौरी के व्रत-प्रसाद से मेरे हाथ से चावल जिसके सिर पर गिरेंगे, हे सखी, जिसे विवाह के होने पर यदि अल्पायु योग भी होगा तो वह चिरायु (बहुत काल तक जीने वाला) होगा। गलती से कलावती चावल नदी की तरफ उछालती है जहां प्रकाश था, उसके सिर पर जा गिरता है। चाचा-भतीजा उस रात उसी नगर में ठहर जाते हैं।

कलावती का विवाह कुरुक्षेत्र नरेश के पुत्र कमल के साथ निश्चित हो चुका था, परंतु कमल मूर्ख, कुरूप और कानों का बहरा था। तदनन्तर वर पक्ष के लोगों ने आपस में विचार किया कि यदि दूसरे सुयोग्य लड़के को ले जाकर आज अपना कार्य संपादन कराने के बाद विवाहोत्तर कमल वहां पर जाए तो क्या हानि? यों निश्चय कर ये लोग प्रकाश के चाचाजी से कहने लगे—'यदि आप इस बालक को हम लोगों को दे दें तो हमारा कार्य बन जायेगा। इस भूमण्डल में परोपकार से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं है।' यह बात सुनकर चाचा हृदय से प्रसन्न हो गया। क्योंकि उसने पहले कन्या के वाक्य को उपवन में सुना था। फिर भी एक बार उन लोगों से कहा—'आप लोग क्या चाहते हैं? कार्य की सिद्धि के लिए वस्त्र, अलंकार आदि तो मंगनी मांगे जाते हैं परंतु कहीं पर वर की याचना नहीं की जाती है, लेकिन मैं गौरव से आप लोगों को देता हूं।'

उन लोगों ने प्रकाश को वहां पर ले जाकर विवाह कार्य को सम्पन्न कराया और सर्पपक्षी आदि कार्य हो जाने पर रात के समय गौरी-शंकर के समीप वह बालक प्रकाश प्रसन्न मन से कलावती के साथ गया। उसी दिन प्रकाश का सोलहवां वर्ष समाप्त हो रहा था। उसी अर्धरात्रि के समय सर्प के रूप में काल वहां पर आ गया। लेकिन इसी बीच में दैवयोग राजकन्या उस महासर्प को देखकर भय से विह्वल हो, कांपने लगी। परंतु उस बाला ने धीरत: धारण कर सर्प की पूजा की और पीने के लिए बहुत दूध दिया। प्रार्थना कर




दीनवाणी से सर्प की स्तुति कर कलावती ने कहा—'व्रतों में उत्तम व्रत को करूंगी। यदि मेरा पति सर्प से मुक्त हो और चिरंजीवी हो, ऐसा करो।' उसी समय वह सर्प कमण्डल में प्रवेश कर गया। बाद में कलावती ने अपनी कुचुली से उस कमण्डल का मुख बांध दिया। उसी समय उसका पति अंगों को ऐंठता हुआ जागकर अपनी स्त्री से बोला—'हे प्रिये, मुझे भूख लगी है।' उसकी पत्नी ने अपनी माता के पास जाकर खीर-पूरी आदि ले आकर पतिदेव को दिया। पति प्रकाश ने प्रसन्न मन से भोजन किया। हाथ धोते समय प्रकाश के हाथ से अंगूठी गिर गयी, वह पान खाकर फिर सो गया।

वह राजकन्या उस कमण्डल को फेंकने के लिए चली गयी। लेकिन दैवयोग से बाहर जाने पर घर के भीतर एक हार के देखकर विस्मित हो गई परंतु ईश्वर का आशीर्वाद समझकर गले में धारण कर लिया। कुछ रात शेष रह गयी तो प्रकाश का चाचा उसे ले गये। प्रकाश के चले जाने पर वहां पर वर पक्ष के लोग कमल को ले गया। उसे देखकर कलावती ने कहा—'यह मेरा पति नहीं है।' तब सभी ने कहा—'हे शुभे तुम क्या कह रही हो! यदि कुछ पहचान की बात हो तो हम लोगों से कहो।' कलावती ने कहा—'रात्रि में नवरत्नों की जो अंगुठी दी वह अंगुठी इसकी अंगूली में डालकर पहचानकर देखें। पति ने उसी रात में हार दिया, उस हार के रत्नों की सजावट कैसी है वह भी कहिये और उसी रात में क्या हुआ उसे भी कहिये।' सुनकर सबों ने 'साधु' कहा। राजा देवेन्द्र ने कहा—'यदि बातें सत्य नहीं हुई तो सबको नष्ट कर दिया जायेगा।' यह सुनकर वरपक्षीय लोग जैसे आये थे वैसे ही लौट गये। इधर कलावती के पिता राजा देवेन्द्र ने यज्ञ किया।

एक वर्ष के पश्चात् प्रकाश का चाचा राजा देवेन्द्र गृह की कथा जानने के लिए वहां आया। दैवयोग से कन्या ने पति प्रकाश को देख लिया और अपने माता-पिता से कहा कि मेरे पति आ गये हैं। राजा ने अपने सुहृदगणों को बुलाकर पहचान् की कही हुई सभी बातों को जाना, देखा कि राजा देवेन्द्र की कन्या मुस्करा रही है। राजा ने शिष्टों के साथ प्रकाश का विवाह अपनी कन्या कलावती





के साथ किया और वस्त्र, आभूषणादि, सेना, अश्वों, हाथियों और रथों को दिया और बहुत-से उपयोग वाली वस्तु देकर राजा ने विदा किया।

प्रकाश अपनी पत्नी, चाचाजी के साथ अपने कुल के आनंद को बढ़ाता हुआ अपनी सेनाओं के साथ अपने नगर को चला। उसके माता-पिता ने अपने एकमात्र पुत्र प्रकाश के आगमन को सुनकर विश्वास नहीं किया, क्योंकि दैववाक्य विपरीत कैसे हो सकता है! उसी मध्य प्रकाश अपने माता और पिता के समीप पहुंच गया। स्नेह से युक्त हो प्रकाश भक्ति द्वारा अपने माता-पिता के चरणों पर गिर गया। माता-पिता अपने पुत्र को पाकर आनन्दित हुए। उधर पुत्रवधू कलावती ने भी अपने सास और ससुर को प्रणाम किया। सास ने भी पुत्रवधू कलावती को अपनी गोद में बैठाकर सब बातें पूछीं।''

शिवजी ने कहा–''हे भक्तगण! आपने मंगल गौरी व्रत कथा सुनी और इसे जो कोई सुनेगा या कीर्तन करेगा, उसके सब मनोरथ सिद्ध हो जायेंगे, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।''

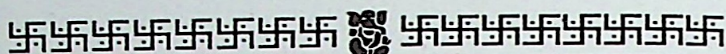
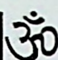
श्री हनुमान पूजन

गोपनीय रहस्य–अनेक महिलाएं ऐसा मानती हैं कि हनुमान जी की मूर्ति स्त्री जाति को नहीं छूनी चाहिए, क्योंकि वे ब्रह्मचारी थे। यह भ्रम है। स्मरण करें, सीता का राम से मिलन तो श्री हनुमान जी ने ही करवाया था।

पूजा का विधान–प्रति मंगलवार 16 बार तो अवश्य करें। मंगलवार को एक छोटी मिट्टी की सुंदर प्रतिमा बना लें, लाल चंदन, पीला सिंदूर और देशी घी मिलाकर दाहिने हाथ की अनामिका से हनुमान जी की प्रतिमा पर ललाट से पूंछ तक ''हूँ हूँ हूँ हूँ हनुमंते नमः'' का मंत्र कहते हुए तिलक लगायें। पुनः पूंछ से ललाट तक उपरोक्त मंत्र का जाप करते हुए तिलक लगायें। इस क्रम के पश्चात् हनुमान जी का ध्यान करें–हे प्रभु! जिस प्रकार आपने सीता और श्री राम का मिलन संभव किया था, उसी प्रकार मुझे मेरे पति की प्राप्ति करायें।

इसमें व्रत/उपवास रखने का कोई विधान नहीं है। प्रतिदिन



कम से कम खाली "हूँ हूँ हूँ हूँ हनुमंते नमः" का एक माला जाप लाल मूंगे की अभिमंत्रित माला से अवश्य करें।

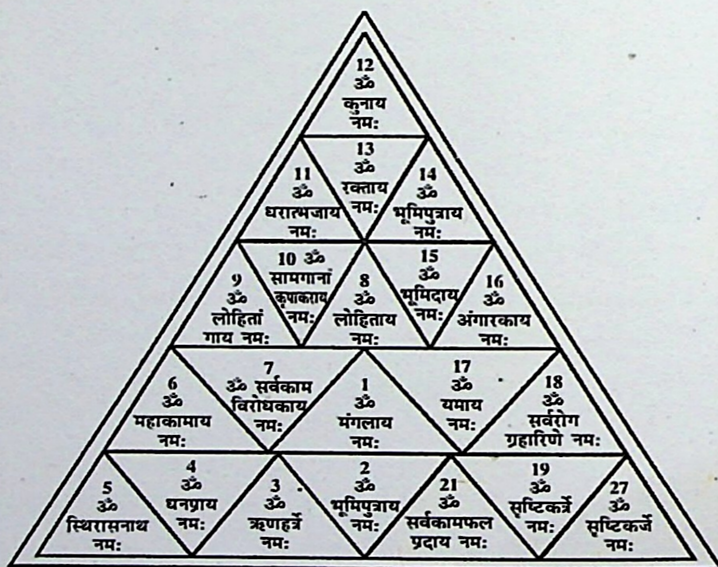
मंगल कवच

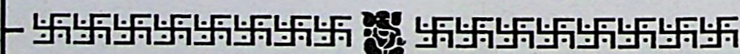
यहां मंगल कवच विनियोग एवं ध्यान के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। यह भी अनेक कष्टों का निवारक है। मंगल का यह कवच शत्रुओं को नष्ट करने वाला और सर्वसिद्धिदायक है। यह कवच रोग का नाशक तथा संपत्ति का प्रदायक भी है। यह मंगल कवच मनुष्यों को भोग एवं मोक्ष प्रदान करने वाला, सौभाग्य देने वाला तथा रोग, कारागार आदि बंधनों से छुड़ाने वाला है।

मंगल स्तोत्र एवं कवच

मैं साधकों की सुविधा हेतु मंगल के स्तोत्र एवं कवच का उल्लेख कर रहा हूं। इनके स्तवन से साधक को ऋणमुक्ति मिलती है, उसके घर लक्ष्मी का वास होता है तथा वह सदा स्वस्थ एवं नीरोग रहकर दीर्घायु प्राप्त करता है।

मंगल यंत्र





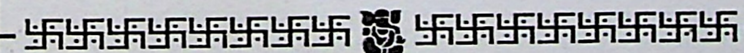




ऋणमोचन मंगल स्तोत्र

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्त्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।
लोहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनंदनः।।
अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकाम फलप्रदः।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।
धरणी गर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति-समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगल प्रणमाम्यहम्।।
स्तोत्रअंगारकस्यैतव् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्।।
अंगारक! महाभाग! भगवन्! भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।
ऋणरोगादि-दारिद्र्यं ये चाऽन्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।
अतिवक्र! दुराराध्य! भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।
विरिन्चि-शुक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः।।
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गताः।
ऋणदारिद्र्यदुःरवेन शत्रूणां च भयात्ततः।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा।।

बारह श्लोकों वाले इस ऋणमोचन मंगल स्तोत्र द्वारा जो लोग मंगल की स्तुति करते हैं, उनको निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, वह सदा युवा बने रहते हैं।









अंगारक स्तोत्र

अंगारक स्तोत्र का नियमित पाठ करने से मंगल शांत व शुभ बनता है। अतः पाठकों के लाभार्थ मैं इसे भी विनियोग एवं स्तोत्रम् सहित प्रस्तुत कर रहा हूं!

विनियोग

अस्याऽन्गारकस्तोत्रस्य विरूपांगिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्रीच्छंदः, भौमप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

स्तोत्रम्

अंगारकः शक्तिधरो लोहितांगो धरासुतः।
कुमारो मंगलो भौमो महाकायो धनप्रदः।।
ऋणकर्त्ता दृष्टिकर्त्ता रोगकृद्रोगनाशनः।
विद्युतप्रभो व्रणकरः कामदो धनऽत् कुजः।।
सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः।
लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावरोधकः।।
रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः।
नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत् सततं नरः।।
ऋणं तस्य हि दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति।
धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम्।।
वंशोद्योतकरं पुत्रं लभते नाऽत्र संशयः।
योऽर्चयेदहि भौमस्य मंगलं बहुपुष्पकैः।।
सर्वा नश्यति पीडा च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्।।

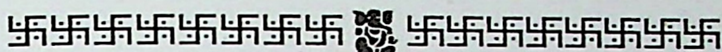
जो लोगं अनेक प्रकार के लाल पुष्पों से मंगलवार के दिन मंगल की पूजा करते हैं, उनकी ग्रहों की पीड़ा शांत हो जाती है। उन्हें समस्त प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

विनियोग

अस्य श्रीअंगारककवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यपऋषिः, अनुष्टुपछंदः, अंगारको देवता, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।







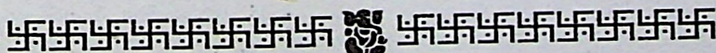

ध्यान

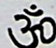
रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी
चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली
सदा मम स्याद् वरदः प्रशांतः॥

कवचम्

अंगारकः शिरोरक्षेन्मुखं वै धरणीसुतः।
श्रवौ रक्ताम्बरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः॥
नासां शक्तिधरः पातु मुखं मे रक्तलोचनः।
भुजौ मे रक्तमाली च अहस्तौ शक्तिधरस्तथा॥
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं पातु रोहितः।
कटिं मे गृहराजश्च मुखं चैव धरासुतः॥
जानुजंघे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा।
सर्वाण्यन्यानि चांगानि रक्षेन्मे मेषवाहनः॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम्।
भूत-प्रेत-पिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदम्॥
सर्वरोगहरं चैव सर्वसम्पतत्प्रदं शुभम्।
भुक्ति-मुक्तिप्रदं नृणां सर्वसौभाग्यवर्धनम्॥
रोगबंध-विमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः॥

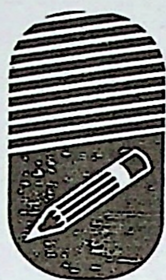










मेरा परामर्श

प्रिय पाठकों! कहा जाता है रत्नों के द्वारा, उपवास के द्वारा, उपायों के द्वारा, साधनाओं, उपासनाओं के द्वारा भाग्य बदला जा सकता है। सम्भवतः यह सत्य भी हो, लेकिन मेरे विचार में भगवान शिव ही भाग्य बदल सकते हैं। कहा गया है, ''भागहिं मेट सकें त्रिपुरारी'' लेकिन एक परामर्श भी आपका भाग्य परिवर्तन कर सकता है। वह परामर्श आपकी जन्मपत्रिका के आधार पर विद्वान ज्योतिषी देता है। ज्योतिष विद्वानों का ज्ञान है।

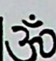
रूपयौवनसम्पन्ना: विशालकुलसम्भवा:।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका:।।

''रूप और यौवन से सम्पन्न तथा ऊंचे कुल में जन्म लेने पर भी विद्याविहीन मनुष्य ऐसे ही सुशोभित नहीं होता, जैसे गन्धरहित ढाक के फूल।'' आधुनिक युग में, जब अध्ययन, मनन, चिन्तन की चेतना, अध्येताओं तथा पाठकों तक ही सीमित है, ऐसी स्थिति में ज्योतिष के लुप्तप्राय ज्ञान के प्रति, पाठकों की रुचि अवश्य ही उत्साहवर्द्धक है।

मेरी यह पुस्तक जहां मांगलिक दोष की वास्तविक स्थिति आपको समझाएगी वहीं इसमें दिये गये उपाय इस दोष से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेंगे। यहां मैं एक बात और स्पष्ट करना







चाहूंगा, अगर आप अपने भविष्य की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म बातों को जानना चाहते हैं, तो सुदर्शन चक्र के आधार पर फलादेश कराएं। इसमें तीन कुंडलियों—लग्न कुंडली, चंद्र कुंडली और सूर्य कुंडली का समावेश होता है। सुदर्शन चक्र से आप वर्ष, मास और दिन तक के फलों को जान सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र में इस सुदर्शन चक्र का अपना निश्चित महत्व होता है। सुदर्शन चक्र जन्मपत्रिका का उद्गम लग्न कुंडली से होता है। इसमें तीन कुंडलियां एक साथ होती हैं। अधिकतर फलितकर्त्ता लग्न एवं नवांश कुंडली के आधार पर फलित बता देते हैं और इसे छोड़ देते हैं, जबकि होना यह चाहिए कि इसे आधार बनाकर फल-कथन किया जाए।

सुदर्शन चक्र से जातक के जन्मकाल के प्रथम वर्ष से जीवनकाल तक का भविष्य बतलाया जा सकता है।

सुदर्शन चक्र में तीनों जन्मपत्रिकाओं में 36 भाव होते हैं। प्रथम वर्ष का फल जानने के लिए तीनों जन्मपत्रिकाओं के लग्न भाव की राशि एवं उसमें बैठे ग्रहों से फल जाना जाता है। दूसरे वर्ष का फल जानने के लिए द्वितीय भाव को लग्न मानकर, इसी प्रकार तृतीय, चतुर्थ, पंचम आदि भाव से पूरे वर्ष का फल प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार एक चक्र में 12 वर्ष का फल ज्ञात करने के पश्चात् पुनः 13वें वर्ष का फल तीनों के लग्न से ज्ञात होता है। लग्न जातक के प्रथम वर्ष, 13वां, 25वें, 37वें, 49वें, 61वें 73वें वर्ष का फल ज्ञात होता है। द्वितीय भाव से 2, 14, 26, 38, 50, 62, 74वें वर्ष का, तीसरे भाव से 3, 14, 27, 39, 51, 73, 75वें वर्ष का, चतुर्थ भाव से 4, 16, 28, 40, 52, 64 एवं 76वें वर्ष का और आगे इसी प्रकार पंचम से द्वादश भावों के आधार पर पूरे जीवनकाल तक का भविष्य फल ज्ञात हो जाता है।

इसी प्रकार हम वर्ष के पूरे महीनों का भविष्य भी निकाल सकते हैं। वर्ष लग्न से द्वादश भावों के 12 माह मानकर ग्रहों





के शुभत्व और दृष्टि संबंध के आधार पर सटीक भविष्य जान सकते हैं।

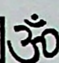
उपचय स्थान पर पापग्रह उत्तम फल प्रदान करते हैं और अगर वक्री हों तो मानसिक क्लेश, धन की कमी प्रदान करते हैं। शुभ ग्रह वक्री होने पर अधिक शुभ हो जाने से शुभ फल देते हैं और क्रूर ग्रह वक्री होने पर अधिक क्रूर होकर कष्ट प्रदान करते हैं। जन्म के समय के ग्रहों के साथ-साथ गोचर में आने वाले ग्रहों को भी देखना अनिवार्य है।

मानव स्वभावतः ही जिज्ञासु है। हर क्षण वह यह जानना चाहता है—क्यों, कैसे, क्या हो रहा है और अब क्या होगा? इस स्वभाव से प्रेरित होकर "मंगल क्या है?" इसकी खोज में वर्षों से लगा हूं और आज भी खोज जारी है। लोगों का विश्वास है कि मंगल/अमंगलमय है। अगर मंगल अमंगलमय है तो इसका नाम मंगल क्यों है? नहीं! नहीं! मंगल कभी भी मानव का अमंगल नहीं करता है। यह तो सर्वदा मंगल ही करता है। जिस प्रकार से शनि के नाम से लोगों की नींद हराम हो जाती है, ठीक उसी तरह से मंगल के नाम से भी लोग भयभीत होते हैं।

देश, राष्ट्र और समाज की रक्षा करने हेतु रक्षक की आवश्यकता होती है। यदि रक्षक न हो तो कोई भी व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित नहीं समझेगा। अतः वातावरण को शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित बनाने के लिए एक रक्षक की आवश्यकता होती है।

मानव शरीर को सुचारू रूप से चलाने के लिए शक्ति, ऊर्जा की आवश्यकता होती है। मंगल हमारे शरीर की रक्षा करता है और शक्ति प्रदान करता है। अतः मंगल तो हमारा रक्षक है। वह किसी भी स्थिति में हमारा अनिष्ट नहीं कर सकता है। समाज में मंगल ग्रह के विषय में जो भ्रांति है, उसे दूर करने के उद्देश्य से मैंने यह पुस्तक लिखी है। मुझे पूरा विश्वास है कि विद्वान ज्योतिषगण एवं पाठक इस पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। यदि आपको लाभ हुआ तो मैं समझूंगा कि मेरा परिश्रम सार्थक हुआ।



इस पुस्तक की रचना में मेरे स्नेहपात्र एवं प्रिय श्री मनोज कुमार कपूर एवं श्रीमती संगीता कपूर ने अपनी अतिव्यस्त दिनचर्या में से समय निकालकर जो सहयोग प्रदान किया है, इसके लिए आशीर्वाद। उन्होंने इसे अपना कार्य समझकर ही किया, एतदर्थ व धन्यवाद के अधिकारी हैं। पुस्तक रचना के मध्य स्व० श्रीमती बीना कपूर जो अत्यन्त प्रतिभावान् एवं स्नेही थीं, का हृदयविदारक देहावसान हुआ। इस मानसिक—अग्निपरीक्षा के क्षणों को उत्तीर्ण करके वे पुस्तक-सृजन के अन्तिम चरण तक मेरे समीप आशीर्वाद रूप रहीं। इसका अनुभव आज भी मुझे प्रेरित करता है।

भारतीय ज्योतिष और संस्कृति के प्रसार में अग्रणी सर्वस्वीकृत मैसर्स मारुति प्रकाशन ने इस पुस्तक के प्रकाशन का दायित्व वहन कर न केवल मुझ पर वरन् इसमें प्रस्तुत सामग्री से किसी भी समय किसी न किसी प्रकार लाभान्वित होने वाले पाठकों के प्रति जो कृपा की है उसके लिए श्री अरूण जैन को कोटिशः धन्यवाद।

सर्वाधिक धन्यवाद उन पाठकों को जो इस पुस्तक को लोकप्रियता के शिखर तक ले जायेंगे।

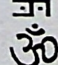
अंत में—

"भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम्।।"

आचार्य पं० शशि मोहन बहल

www.tantrasabkeliyemission.webs.com

e-mail:-tantrik_bahl@yahoo.co.in

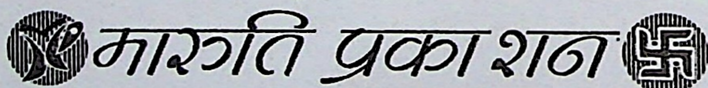



हमारे द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ कथा

☞ सेवासदन	–प्रेमचन्द	60.00
☞ कायाकल्प	–प्रेमचन्द	60.00
☞ गोदान	–प्रेमचन्द	60.00
☞ ग़बन	–प्रेमचन्द	60.00
☞ प्रेमचंद की अमर कहानियां		60.00
☞ प्रेमचंद की लोकप्रिय कहानियां		60.00
☞ प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
☞ प्रेमचंद की शिक्षाप्रद कहानियां		60.00
☞ वरदान	–प्रेमचन्द	40.00
☞ निर्मला	–प्रेमचन्द	40.00
☞ प्रतिज्ञा	–प्रेमचन्द	40.00
☞ ओ० हेनरी की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
☞ जयशंकर प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
☞ शरलॉक होम्स के सर्वश्रेष्ठ जासूसी कारनामें		60.00
☞ लियो टालस्टाय की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
☞ शेक्सपीयर की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
☞ मण्टो की अमर कहानियां		60.00
☞ रविन्द्रनाथ टैगोर की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
☞ शरत्चन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
☞ श्रीकांत (सम्पूर्ण उपन्यास)	–शरत्चन्द्र	80.00
☞ देवदास	–शरत्चन्द्र	40.00

सम्पूर्ण भारत के सभी प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं के पास

आज ही अपने निकटतम बुक स्टाल से खरीदें अथवा हमें लिखें।



अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने, दिल्ली रोड,
मेरठ–250 002 (यू०पी०) ✆ (0121) 25118025, 3255234

मांगलिक दोष

कारण और निवारण



"यथा शिखा मयूराणां, नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदांगशाखाणां, ज्योतिषं मूर्धिन स्थितम्"।।

(याजुष ज्योतिष 4)

जिस प्रकार मोर की शिखा और नागों की मणि मस्तक का आभूषण है, ठीक उसी प्रकार वेदांग शास्त्रों; जैसे छन्द, व्याकरण, शिक्षा, निरूक्त कल्प और ज्योतिष में केवल ज्योतिष ही शिरोभूषण है।

अगस्त संहिता के अनुसार–

धने, व्यये च पाताले
जामित्रे चाष्टमे कुजे
भार्या भर्तृ विनाशाय
भतृश्च स्त्री विनाशम्

विवाह सुख के विषय में मंगल ग्रह की स्थिति विशेष अशुभ मानी गयी है। यदि पति-पत्नी में से एक मांगलिक हो एवं दूसरा सादा हो तो मंगली जातक का या तो सम्बन्ध-विच्छेद होता है या फिर किसी एक का प्राणांत होता है।

नव ग्रहों में सेनापति का दर्जा प्राप्त मंगल कब शुभ और कब अशुभ होता है? इसी बात का विवेचन इस पुस्तक में है। आचार्य **पं॰ शशि मोहन बहल** की एक और उत्कृष्ट रचना जो मंगल ग्रह की वास्तविक स्थिति से आपका परिचय कराएगी।




मारुति प्रकाशन

A.R.W. MARUTI SERIES